A Daily News Magazine
इंदौर
शुक्रवार, 30 अगस्त, 2024

सुबह सवेरे

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 304, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

subhahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

एक दलित अधिकारी की रेलवे में सर्वोच्च पद पर नियुक्ति के मायने

चंदन कुमार जजवाड़े

रेल मंत्रालय में पहली बार किसी दलित अधिकारी को सबसे ऊंचे पद पर नियुक्ति मिली है। रेल मंत्रालय में 'चेयरमैन एंड सीईओ' का पद सबसे बड़ा होता है। यह पद भारत सरकार के सचिव के पद के बराबर होता है। यानी भारत सरकार के अन्य मंत्रालयों के सचिव के बराबर ही रेलवे बोर्ड के चेयरमैन का पद होता है।

भारतीय रेल में मैकेनिकल इंजीनियर्स सेवा के अधिकारी सतीश कुमार रेलवे बोर्ड के नए चेयरमैन और सीईओ बनाए गए हैं। वो 1 सितंबर 2024 को पदभार ग्रहण कर रहे हैं।

किसी दलित अधिकारी के पहली बार इस पद तक पहुँचने के बाद इस पर सोशल मीडिया पर भी काफ़ी चर्चा हो रही है। सतीश कुमार साल 1986 बैच के आईआरएसएमई अधिकारी हैं। इससे पहले वो रेलवे में डीआरएम और रेलवे के एनसीआर जोन में जीएम के पद पर भी रहे हैं। सतीश कुमार इसी साल 5 जनवरी को रेलवे बोर्ड में 'मेंबर ट्रैक्शन एंड रोलिंग स्टॉक' बने थे।

सतीश कुमार के नए चेयरमैन चुने जाने के बाद से कुछ कांग्रेस समर्थक इसे राहुल गांधी के दबाव का असर भी बता रहे हैं। कांग्रेस नेता उदित राज ने दावा किया है कि 'यह पूरी तरह से राहुल गांधी और कांग्रेस का दबाव है। वरना सारी योग्यता होने के बावजूद भी उन्हें दबा दिया जाता। पहले मोदी और अमित शाह जिसे चाहते थे उसे बना देते थे। कांग्रेस के दबाव में ही हाल ही में लेटरल एंट्री से नियुक्ति के विज्ञापन को भी रद्द किया गया है। हालाँकि इसके जवाब में बीजेपी समर्थक दावा करते हैं कि मोदी सरकार के दौर में दलित और आदिवासी समुदाय को राष्ट्रपति पद तक पहुँचने का अवसर मिला है।

सतीश कुमार की नियुक्ति ऐसे समय में हुई है जब विपक्ष के नेता राहुल गांधी केंद्र की मोदी सरकार पर दलितों के साथ भेदभाव का आरोप लगाते रहे हैं। उनके मुताबिक केन्द्र सरकार में महत्वपूर्ण पदों पर दलितों या अन्य कमज़ोर तबकों को काम करने का अवसर नहीं दिया जाता है। राहुल गांधी ने साल 2024-25 के बजट पर भी आरोप लगाया था कि भारत का बजट 20 लोगों ने तैयार किया है, उनमें केवल एक मुस्लिम हैं और एक ओबीसी। ऐसे लोगों को फ़ोटो में भी नहीं आने दिया जाता।

राहुल गांधी और अन्य विपक्षी दलों की मांग रही है कि देश में अलग-अलग जातियों को आबादी के आधार पर मौक़ा देना जरूरी है, वो इसके लिए जातिगत जनगणना की मांग करते हैं। वरिष्ठ पत्रकार रशीद किदवई कहते हैं, जैसे दो या तीन मुसलमानों के राष्ट्रपति बन जाने से सभी मुस्लिमों का भला नहीं हुआ है, यह वैसा ही है। विपक्ष आबादी के हिसाब से भागीदारी की मांग करता है। जैसे राहुल गांधी तस्वीरों में दलित के नहीं दिखने जैसी सांकेतिक बात कहते हैं, वैसे ही केंद्र सरकार की तरफ़ से यह नियुक्ति भी सांकेतिक है। हालांकि उदित राज मानते हैं कि एक पद से भी फर्क पड़ता है और ख़ासकर सबसे ऊंचे ओहदे पर होने से बहुत फर्क पड़ता है।

भारत सरकार के पर्सनल और ट्रेनिंग विभाग (डीओपीटी) के मुताबिक़ एसीसी यानी कैबिनेट की एपॉइंटमेंट्स कमेटी ने सतीश कुमार की नियुक्ति को मंज़ूरी दी है। वो इस पद पर 31 अगस्त 2025 तक यानी एक साल के लिए रहेंगे। रेलवे बोर्ड के एक पूर्व सदस्य ने बताया, 'मुझे भी पहले से सुनने को मिल रहा था कि सतीश कुमार नए चेयरमैन हो सकते हैं, क्योंकि मौजूदा चेयरमैन का कार्यकाल समाप्त हो रहा है।' हालांकि रेल कर्मचारियों के एक संगठन एआईआरएफ के महामंत्री शिवगोपाल मिश्रा के मुताबिक़ रेलवे बोर्ड में नवीन गुलाटी सबसे वरिष्ठ सदस्य थे, लेकिन उनको पहले ही डीजी (एचआर) बना दिया गया था।

रेलवे बोर्ड में कुल 7 मेंबर होते हैं। यह रेलवे में नीति बनाने और संचालन के लिहाज़ से सबसे बड़ी बॉडी होती है। इसमें सबसे वरिष्ठ 'चेयरमैन एंड सीईओ' होते हैं। रेलवे बोर्ड में किसी भी सदस्य या अध्यक्ष की नियुक्ति के लिए आमतौर पर कुछ तय नियम होते हैं, जिनका पालन किया जाता है।

कोई रेल अधिकारी जो किसी ज़ोन में जीएम यानी महाप्रबंधक हो या उसी लेवल का अधिकारी हो और उसने कम से कम 25 साल नौकरी कर ली हो, वो बोर्ड मेंबर या अध्यक्ष बनने की योग्यता रखता है। इन अधिकारियों में किसी का चयन उनकी वरीयता, सालाना गोपनीय रिपोर्ट (एसीआर) और परफ़ॉर्मेंस एप्रेज़ल रिपोर्ट (पीएआर) के आधार पर होता है। रेल मंत्रालय ऐसे अधिकारियों की सूची बनाता है और इसके लिए एक पैनल का गठन करता है। रेलवे बोर्ड का सदस्य बनने के लिए आमतौर पर किसी अधिकारी के रिटायरमेंट में कम से कम दो साल का समय बचा होना चाहिए। जबकि बोर्ड का चेयरमैन बनने के लिए किसी अधिकारी के रिटायरमेंट में कम से कम एक साल का समय बचा होना चाहिए।

रेल मंत्रालय के ईडीआईपी दिलीप कुमार के मुताबिक़, सतीश कुमार 4 महीने के बाद रिटायर होने वाले थे और उन्हें 8 महीने का सेवा विस्तार यानी एक्सटेंशन दिया गया है। रेल मंत्रालय का पैनल चुने हुए नामों को डीओपीटी के पास भेजता है। उसके बाद एसीसी यानी कैबिनेट की एपॉइंटमेंट्स कमेटी इस पर फ़ैसला लेती है। शिवगोपाल मिश्रा कहते हैं, 'मुझे भी नहीं याद आता है कि पहले की सरकारों ने कभी किसी बोर्ड मेंबर को सेवा विस्तार देकर बोर्ड का अध्यक्ष बनाया हो। सतीश कुमार एक अच्छे अधिकारी हैं और उम्मीद है कि वो अच्छा काम करेंगे।'

हालांकि पिछले कुछ साल से लगातार हो रहे हादसे रेल मुसाफ़िरों और रेल मंत्रालय के लिए बड़ी चिंता की वजह बनी है। रेलवे बोर्ड के नए अध्यक्ष के सामने रेल अधिकारियों, कर्मचारियों और इसके करोड़ों मुसाफ़िरों की उम्मीदें होंगी जो किसी चुनौती से कम नहीं है। इस मामले में ट्रेनों का सुरक्षित संचालन सबसे ज़रूरी होगा। हाल के दिनों में कई रेल हादसों के बाद न केवल विपक्ष ने मुसाफ़िरों की सुरक्षा को बड़ा मुद्दा बनाया है बल्कि यह सोशल मीडिया और आम लोगों के बीच चर्चा में रहा है।

भविष्य में सतीश कुमार की चुनौती इसलिए भी बड़ी हो सकती है क्योंकि खबरों के मुताबिक़ उन्होंने 'फॉग सेफ डिवाइस' पर काफी काम किया है। यह डिवाइस ट्रेनों के इंजन में लगाया जाता है और सर्दियों के दौरान कोहरे के मौसम में ट्रेनों के सुरक्षित संचालन में मदद करता है। इसके अलावा रेलवे में भर्ती और खाली पदों पर नियुक्ति और पुरानी पेंशन स्कीम की बहाली भी रेल कर्मचारियों की पुरानी मांग रही है।

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

सिर्फ कोलकाता की ही बात न करें, गुस्सा और भी जगह है

- **राष्ट्रपति मुर्मू से कांग्रेस की अपील, कहा- सभी क्षेत्रों के लिए आवाज उठाएं**

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस ने गुरुवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा महिलाओं की सुरक्षा को लेकर की गई टिप्पणी का स्वागत किया। हालांकि पार्टी ने राष्ट्रपति से आग्रह किया कि वह सिर्फ एक क्षेत्र के बजाय सभी क्षेत्रों और राज्यों के लिए आवाज उठाएं।

कांग्रेस प्रवक्ता पवन खेड़ा ने कहा कि वह राष्ट्रपति के बयान का स्वागत करते हैं लेकिन उन्हें फर्रुखाबाद, कोल्हापुर, बदलापुर, पुणे जैसे शहरों की घटनाओं पर भी बोलना चाहिए। समाचार एजेंसी से बात करते हुए पवन खेड़ा ने कहा, मैं राष्ट्रपति के इस बयान और हस्तक्षेप का स्वागत करता हूं। पूरा देश आक्रोशित है लेकिन देश का आक्रोश सिर्फ कोलकाता की घटना को लेकर नहीं है, बल्कि फर्रुखाबाद, कोल्हापुर, बदलापुर, पुणे, रत्नागिरी, जोधपुर, कटनी जैसे कई मामलों को लेकर भी है। खेड़ा ने कहा, राष्ट्रपति को देश भर में व्याप्त आक्रोश को अभिव्यक्त करना चाहिए न कि केवल एक क्षेत्र या राज्य में। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने अपने विशेष लेख में कोलकाता में एक डॉक्टर के साथ बलात्कार और हत्या पर पहली बार अपनी बात रखी है और महिलाओं के खिलाफ जारी अपराधों पर अपना आक्रोश व्यक्त किया है। उन्होंने ''महिलाओं की सुरक्षा बस! बहुत हो चुका!''

सुप्रभात

सब कुछ उपलब्ध होने का अर्थ है कि
कुछ भी उपलब्ध नहीं है
रेडियो था तो उत्सुकता रहती थी कि
अगला गाना कौन सा होगा
अब गाने हर समय उपलब्ध हैं
तो सुने नहीं जाते
टॉकीज में फिल्म लगती थी तो
दौड़ कर जाते थे कि अगले हफ़्ते
उतर गई तो फिर कभी देखने को नहीं मिलेगी
अब कभी भी,कहीं भी देखी जा सकती है
तो देखी नहीं जाती
विज्ञान ने ध्वनि और दृश्य को संरक्षित कर
बड़ा काम किया
पर जीवन के कुछ छोटे –छोटे रहस्यों को
बचाए रखना था।

– चंद्रशेखर साकल्ले

असम में मुस्लिम शादी और तलाक का रजिस्ट्रेशन जरूरी

- सीएम हिमंत बोले-बाल विवाह और काजी सिस्टम खत्म होगा, अगला टारगेट बहुविवाह पर बैन

दिसपुर (एजेंसी)। असम विधानसभा ने गुरुवार को मुस्लिम शादियां और तलाक रजिस्टर करने वाले 90 साल पुराने कानून- असम मुस्लिम मैरिज एंड डिवोर्स रजिस्ट्रेशन एक्ट, 1935 को रद्द करने का बिल पास किया। इस बिल का नाम असम कंपल्सरी

रजिस्ट्रेशन ऑफ मुस्लिम मैरिज एंड डिवोर्स बिल, 2024 है। पुराने कानून के रद्द किए जाने के बाद मुस्लिम समाज के लोगों को शादी और तलाक का रजिस्ट्रेशन करना जरूरी होगा।

22 अगस्त को असम कैबिनेट ने इस बिल को मंजूरी दी थी। इसे लेकर असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा ने कहा कि यह विधेयक पार्टी की राजनीति से ऊपर है। अब हमारा अगला लक्ष्य बहुविवाह पर बैन लगाना है। विपक्ष ने असम सरकार के इस फैसले को मुस्लिमों के प्रति भेदभावपूर्ण बताया है।

गुजरात में बाढ़ और बारिश से भारी तबाही

हर ओर मचा हाहाकार, देखते-देखते पानी में समा गए शहर!

कई जिलों में हालात हैं बेकाबू, अब तक 35 लोगों की मौत

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात में भारी बारिश से हालात बिगड़े चुके हैं। बारिश से संबंधित घटनाओं में राज्य में 35 लोगों की और मौत हो गई। जिससे सोमवार से तीन दिनों में मरने वालों की संख्या 35 हो गई। जबकि बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों से करीब 17,800 लोगों को निकाला गया है। राज्य के कई हिस्सों में बुधवार को लगातार चौथे दिन भारी बारिश हुई। राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (एनडीआरएफ), राज्य आपदा प्रतिक्रिया बल (एसडीआरएफ), सेना, भारतीय वायु सेना और भारतीय तटरक्षक बल द्वारा राहत और बचाव अभियान चलाए जा रहे हैं । इस बीच, प्रधानमंत्री नरेंद्र

मोदी ने स्थिति का जायजा लेने और संकट में केंद्र का सहयोग सुनिश्चित करने के लिए मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल को फोन किया। बुधवार को सौराष्ट्र क्षेत्र के देवभूमि द्वारका, जामनगर, राजकोट और पोरबंदर जैसे जिलों में शाम 6 बजे तक 12 घंटों में 50 मिमी से 200 मिमी तक बारिश हुई। इस अवधि के दौरान देवभूमि द्वारका के भानवद तालुका में 185 मिमी बारिश हुई ,जो राज्य में सबसे अधिक है। वडोदरा शहर में बारिश थम गई, लेकिन विश्वामित्री नदी में बाढ़ के कारण कई निचले इलाके अभी भी जलमग्न हैं। अपने घरों और छतों में फंसे लोगों को एनडीआरएफ, एसडीआरएफ और सेना की तीन टुकड़ियों ने बचाया और सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया। एनडीआरएफ और एसडीआरएफ के साथ-साथ सेना, वायुसेना भी बचाव में जुटे हैं।

15 लोगों की मौत

गांधीनगर में राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र ने बताया कि मंगलवार को 15 लोगों की मौत हुई, जबकि बुधवार को चार लोगों की मौत की सूचना मिली। जिला कलेक्टरों ने मोरबी में चार और राजकोट जिले में दो लोगों की मौत की सूचना दी। मंगलवार को दीवार गिरने की घटनाओं में आणंद जिले के खाड़ोधी गांव में तीन, महिसागर के हरिपुरा गांव में दो, अहमदाबाद के धींगरा गांव और साणंद में दो-दो तथा खेड़ा के चित्रसर गांव में एक व्यक्ति की मौत हो गई। भरूच के पिलुदरा गांव, जूनागढ़ के मंगरोल गांव, पंचमहल के हलोल, अहमदाबाद के धोलका तालुका और अहमदाबाद शहर के मणिनगर में एक-एक व्यक्ति की डूबने से मौत हो गई, जबकि सुरेन्द्रनगर के ध्रांगदरा में दो व्यक्ति डूब गए। एसईओसी ने बुधवार को चार मौतें दर्ज कीं। डांग के आहवा और जामनगर के ध्रोल में एक-एक व्यक्ति डूब गया, अरावली के मालपुर में दीवार गिरने से एक व्यक्ति की मौत हो गई और देवभूमि द्वारका के बहनवाड़ में पेड़ गिरने से एक अन्य व्यक्ति की मौत हो गई। वहीं 25 और 26 अगस्त को राज्य के विभिन्न हिस्सों में डूबने, पेड़ गिरने और दीवार गिरने की घटनाओं में 10 लोगों की मौत हो गई थी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की केंद्रीय जलशक्ति मंत्री श्री पाटिल से भेंट

केन-बेतवा लिंक परियोजना से होने वाली सिंचाई का रकबा बढ़ाने पर सैद्धांतिक स्वीकृति

दौधन बांध एवं लिंक नहर के भू-अर्जन एवं पुनर्विस्थापन हेतु 1150 करोड़ रुपए शीघ्र होंगे जारी

कान्ह और गंभीर नदियों को जोड़ने के प्रस्ताव पर विचार

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गुरुवार को दिल्ली में केंद्रीय जलशक्ति मंत्री श्री सीआर पाटिल से उनके कार्यालय में सौजन्य भेंट कर विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। बैठक में नदी जोड़ो परियोजनाओं, विशेषकर केन–बेतवा लिंक परियोजना के संबंध में विस्तृत चर्चा हुई।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने केंद्रीय मंत्री श्री पाटिल को बताया कि मध्यप्रदेश राज्य नदी–जोड़ो अभियान में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश और उत्तर प्रदेश संयुक्त रूप से महत्वाकांक्षी केन–बेतवा लिंक परियोजना पर काम कर रहे हैं, जो विश्व में अपने प्रकार की अद्वितीय परियोजना है। मध्यप्रदेश में इस परियोजना से बुंदेलखंड क्षेत्र के 10 जिलों को सिंचाई और पेयजल आपूर्ति की सुविधा प्राप्त होगी। बुंदेलखंड एक ऐसा क्षेत्र है जिसने कभी भी अपनी संप्रभुता दिल्ली सल्तनत अथवा मुगल शासकों के अधीन नहीं की परंतु पानी के अभाव में दुर्भाग्यवश यह क्षेत्र संसाधनहीन हो गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में केन–बेतवा परियोजना के माध्यम से इस क्षेत्र का चहुमुखी विकास होगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव के आग्रह पर केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री ने राज्य को दौधन बांध एवं लिंक नहर के भू–अर्जन एवं पुनर्विस्थापन के लिये केन्द्र से प्राप्त होने वाली शेष 1150 करोड़ रूपए की राशि शीघ्र जारी करवाने को आश्वस्त किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अनुरोध किया कि स्वीकृत केन–बेतवा लिंक परियोजना के अंतर्गत वर्तमान में प्रावधानित दमोह– पन्ना उद्वहन सिंचाई योजना से 90,100 हैक्टेयर सिंचाई के स्थान पर लगभग 2,50,000 हैक्टेयर की मध्यप्रदेश की पत्ने एवं ब्यरमा सिंचाई परियोजना को शामिल किया जाना उचित होगा।

जम्मू और कश्मीर के कुपवाड़ा में 3 आतंकी ढेर

- माछिल में 2, तंगधार में एक घुसपैठिया मारा गया, राजौरी में भी आतंकियों की तलाश जारी

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा में सेना ने 3 आतंकियों को मार गिराया है। इनमें दो माछिल और एक तंगधार में मारा गया। अभी मारे गए आतंकियों के शव बरामद नहीं हुए हैं। सेना ने बताया कि माछिल और तंगधार में 28-29 अगस्त की देर रात खराब मौसम के बीच संदिग्ध गतिविधि देखी गई।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 36.3 °c न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ शुक्रवार, 30 अगस्त 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

भारतीय परमाणु पनडुब्बी अरिघात से डरा ड्रैगन

चीन ने बंगाल की खाड़ी में उतार दी महाशक्तिशाली जासूसों की फौज

बीजिंग (एजेंसी)। भारत की दूसरी परमाणु ऊर्जा से चालित बलिस्टिक मिसाइल पनडुब्बी आईएनएस अरिघात को आज कमीशन किया जा रहा है। आईएनएस अरिघात आईएनएस अरिहंत श्रेणी की परमाणु पनडुब्बी है।

इस परमाणु पनडुब्बी को रक्षामंत्री राजनाथ सिंह विशाखापत्तनम में कमीशन करेंगे। यह पनडुब्बी 6000 टन की है जो हिंद प्रशांत क्षेत्र में लंबी दूरी तक गश्त लगाने में सक्षम है। इस पनडुब्बी को 750 किमी तक मार करने वाली परमाणु मिसाइल के-15 से लैस किया गया है।

इस परमाणु पनडुब्बी की मदद से पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद से लेकर चीन के यून्नान प्रांत तक आसानी से निशाना बनाया जा सकता है। भारत की परमाणु पनडुब्बी को देखकर चीन हरकत में आ गया है। चीन ने अपने तीन जासूसी जहाजों को हिंद महासागर में उतार दिया है। ये

महाशक्तिशाली चीनी जासूसी जहाज बंगाल की खाड़ी में उस इलाके में घूम रहे हैं जहां से विशाखापत्तनम पर आसानी से नजर रखी जा सकेगी। चीन का पहला जासूसी जहाज शिआंग यांग होंग 03 इस समय विशाखापत्तनम और अंडमान निकोबार द्वीप समूह के बीच में मौजूद है और लगातार गश्त लगा रहा है।

चीन का दूसरा जासूसी जहाज हेई यांग शी यू 718 मलक्का स्ट्रेट के रास्ते हिंद महासागर में दाखिल हुआ है और अंडमान निकोबार के दूसरी ओर मौजूद है। चीन का तीसरा जासूसी जहाज इस समय श्रीलंका के पास से गश्त लगाकर इंडोनिशिया के पास हिंद महासागर में मौजूद है। चीन के ये तीनों ही जहाज अत्याधुनिक जासूसी उपकरणों से लैस हैं। ये मिसाइल से लेकर सबमरीन तक का पता लगाने में सक्षम माने जाते हैं। इससे पहले इसी श्रेणी का जहाज श्रीलंका पहुंचा था तो भारत ने कड़ा विरोध दर्ज कराया था। चीन को भारत के समुद्र में बढ़ते दबदबे से अब डर सताने लगा है और वह इसकी काट के लिए मशक्कत कर रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव नई दिल्ली में करेंगे मध्यप्रदेश उत्सव का शुभारंभ

चार दिन तक लोक नृत्य एवं गायन की होंगी प्रस्तुतियां

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शुक्रवार 30 अगस्त को नई दिल्ली में 'मध्यप्रदेश उत्सव' का शुभारंभ करेंगे। मध्यप्रदेश की सांस्कृतिक विरासत को दुनिया के सामने प्रस्तुत करने के उद्देश्य से चाणक्यपुरी स्थित मध्यप्रदेश भवन में मध्यप्रदेश उत्सव मनाया जा रहा है। उत्सव में सांस्कृतिक संध्या के तहत प्रतिदिन शाम 6 बजे से विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे। पहले दिन 30 अगस्त को देवास की कलापिनी कोमकली द्वारा देवास का शास्त्रीय गायन प्रस्तुत किया जाएगा। दूसरे दिन 31 अगस्त को भोपाल की ओडिसी नृत्यांगना बिन्दु जुनेजा, 1 सितंबर को मैहर वाद्य वृन्द और 2 सितंबर को रीवा के बघेली लोक गायक शशि कुमार पाण्डेय एवं खंडवा की निमाड़ी लोकगायिका सुश्री अलोचना मांगरोले द्वारा संगीतमय प्रस्तुति दी जाएगी। इस दौरान हथकरघा एवं हस्तशिल्प उत्पाद, 'एक जिला-एक उत्पाद' और जीआई टैग उत्पाद और विन्ध्य हर्बल उत्पाद को प्रदर्शित एवं विक्रय करने के लिए प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी। साथ ही एक विशेष प्रदर्शनी के माध्यम से आगंतुकों को म.प्र. शासन की उपलब्धियों एवं प्रदेश की विरासत से अवगत कराया जाएगा।

फूड फेस्टिवल में मिलेगा एमपी का स्वाद-आयोजन स्थल पर फूड फेस्टिवल भी लगाया जा रहा है, जिसमें आंगतुकों को मध्यप्रदेश के स्थानीय स्वादिष्ट व्यंजनों का लुत्फ उठाने का मौका मिलेगा। सुबह 11 बजे से रात 10 बजे तक चलने वाले फेस्टिवल में मालवा थाली, बुंदेलखंडी थाली, निमाड़ी थाली और बघेलखंडी थाली का स्वाद ले सकेंगे।

अडाणी फैमिली देश में सबसे अमीर, अंबानी को पीछे छोड़ा

- हुरुन इंडिया रिच लिस्ट में वैल्थ 11.62 लाख करोड़, एक साल में संपत्ति 95 फीसदी बढ़ी

मुंबई (एजेंसी)। अडाणी ग्रुप के चेयरमैन गौतम अडाणी और उनके परिवार की कुल संपत्ति एक साल में 95 फीसदी बढ़कर 11.62 लाख करोड़ रुपए हो गई। अडाणी परिवार ने अपनी टोटल वेल्थ में पिछले एक साल में 5,65,503 करोड़ रुपए का इजाफा किया है।

अडाणी फैमिली ने अंबानी परिवार को पीछे छोड़कर देश की सबसे धनवान फैमिली बन गई है। अंबानी परिवार की संपत्ति 10.15 लाख करोड़ रुपए है। एक साल में इसमें 25 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। हुरुन इंडिया रिच लिस्ट 2024 के मुताबिक, हिंडनबर्ग के आरोपों के बाद भी गौतम अडानी एंड फैमिली ने पिछले साल की तुलना में संपत्ति में 95 फीसदी की ग्रोथ हासिल की।

मुश्किल में फंसी ममता बनर्जी ने अब चला 'बाहरी कार्ड'

सीएम ने कहा-बाहरी लोग राज्य में हिंसा फैलाने की कोशिश कर रहे हैं

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता में हुए रेप और मर्डर कांड के चलते सीएम ममता बनर्जी और उनकी पार्टी टीएमसी को भारी विरोध झेलना पड़ रहा है। इस बीच ममता बनर्जी ने एक बार फिर से 'बाहरी कार्ड' चल दिया है, जो उन्होंने 2021 के विधानसभा चुनाव के दौरान भी चला था।

- **कोलकाता में हुए रेप और मर्डर कांड के चलते टीएमसी का भारी विरोध**

उन्होंने भाजपा के बंद पर निशाना साधते हुए कहा कि बाहरी लोग राज्य में हिंसा फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ममता बनर्जी ने कहा, बाहर के जो लोग भी बंगाल में रह रहे हैं, उन्हें बंगाल से प्यार करना चाहिए। बंगाल के लोग उन्हें स्वीकार कर लेंगे। लेकिन बंगाल का नुकसान करने की कोशिश की तो फिर जवाब दिया जाएगा। ममता बनर्जी ने यह भी कहा कि यदि आप लोग भाजपा के साथ मिलकर पुलिस को पीटते हैं त फिर कोई आपको भी पीट सकता है। हालांकि मैं नहीं चाहती कि यहां आपस में कोई विवाद हो। यही नहीं उन्होंने भाजपा पर तंज कसते हुए कहा कि कुछ लोग हमें बांग्लादेश समझते हैं। मैं उन्हें बता दूं कि हम बांग्लादेश से प्यार करते हैं। वे हमारी तरह बात करते हैं। उनकी संस्कृति और हमारी एक जैसी है। लेकिन यह ध्यान रखें कि बांग्लादेश एक अलग मुल्क है। भारतवर्ष एक अलग देश है। ममता बनर्जी ने इसके अलावा भाजपा शासित राज्यों पर विवादित बयान देते हुए कहा, यदि बंगाल को जलाने की कोशिश हुई तो फिर असम भी नहीं बचेगा। पूर्वोत्तर में भी आग लगेगी। यहां तक कि उत्तर प्रदेश, बिहार भी नहीं बचेंगे। ओडिशा भी कैसे बचेगा और दिल्ली कैसे बचेगा। हम आपकी कुर्सी को खतरे में डाल देंगे। इसके अलावा ममता बनर्जी ने आरजी कर अस्पताल में डॉक्टर के साथ हुई वीभत्स घटना का जिक्र करते हुए कहा कि हम इस घटना से दुखी हैं। उन्होंने डॉक्टरों से अपील की कि सभी लोग काम पर वापस लौट जाएं क्योंकि मरीजों को परेशान होना पड़ रहा है। ममता ने कहा कि हमने डॉक्टरों के खिलाफ कोई ऐक्शन नहीं लिया है क्योंकि वे अपनी दोस्त के लिए आंदोलन कर रहे हैं। लेकिन दिल्ली में क्या हुआ। उन लोगों ने डॉक्टरों के खिलाफ ही केस दर्ज कर लिया। इसी के चलते सुप्रीम कोर्ट को कहना पड़ा कि यदि डॉक्टर वापस काम पर लौट आएं तो फिर उनके खिलाफ ऐक्शन नहीं लिया जाएगा।

ममता बोलीं-डॉक्टर्स के खिलाफ एक शब्द नहीं बोला

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने आरोप लगाया है कि उनके बुधवार के भाषण को लेकर उनके खिलाफ उन्हें बदनाम करने के लिए अभियान चलाया जा रहा है। ममता बनर्जी ने गुरुवार को कहा कि उन्होंने कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज में हुई घटना के खिलाफ मेडिकल छात्रों या उनके आंदोलन के खिलाफ एक भी शब्द नहीं कहा है। इससे पहले ममता बनर्जी ने एक कार्यक्रम में आक्रामक भाषण देते हुए कहा था कि अगर बंगाल जला तो उसकी आग यूपी,बिहार और दिल्ली तक भी पहुंचेगी। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक लंबी पोस्ट में अपने ऊपर लगे हिंसा फैलाने के इल्जाम को सरासर गलत बताया है। उन्होंने लिखा, मैंने कुछ प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और डिजिटल मीडिया में दुष्प्रचार अभियान देखा है जो कल हमारे छात्रों के कार्यक्रम में मेरे भाषण के संदर्भ में चलाया गया है।

गुलाम नबी आजाद अपने ही नेताओं का नहीं करेंगे प्रचार

- कहा-चाहें तो वापस ले लें नामांकन, खराब स्वास्थ्य का दिया हवाला

श्रीनगर (एजेंसी)। वरिष्ठ नेता गुलाम नबी आजाद की डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव आजाद पार्टी को चुनाव से पहले बड़ा झटका लगा है। खबर है कि आजाद ने संकेत दिए हैं कि वह खराब स्वास्थ्य के चलते उम्मीदवारों के लिए प्रचार नहीं कर पाएंगे। उन्होंने यह तक कह दिया है कि अगर नेता चाहें, तो उम्मीदवारी वापस ले सकते हैं। खास बात है कि कांग्रेस से अलग होने के बाद आजाद ने डीपीएपी का गठन किया था। हालांकि, शुरुआत से ही पार्टी दल बदल समेत कई झटकों का सामना करती रही है।

पूर्व आईएएस पूजा खेडकर पांच सितंबर तक नहीं होंगी गिरफ्तार

दिल्ली हाईकोर्ट ने बढ़ाई राहत, फर्जीवाड़ा और धोखाधड़ी के लगे हैं आरोप

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली हाईकोर्ट ने गुरुवार को पूर्व आईएएस अधिकारी पूजा खेडकर को गिरफ्तारी से मिली अंतरिम सुरक्षा 5 सितंबर तक बढ़ा दी है। उन पर यूपीएससी परीक्षा में धोखाधड़ी करके मान्य सीमा से ज्यादा बार परीक्षा देने का आरोप है। पूजा खेडकर पर यूपीएससी ने पिछले महीने कई कार्यवाइयां शुरू की थीं। इनमें फर्जी पहचान से सिविल सेवा परीक्षा में शामिल होने के आरोप में आपराधिक मामला दर्ज करना भी शामिल है। दिल्ली पुलिस ने भारतीय दंड संहिता, सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम और दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम के तहत प्राथमिकी दर्ज की है। 31 जुलाई को यूपीएससी ने पूजा खेडकर की उम्मीदवारी रद्द कर दी थी और उन्हें भविष्य की परीक्षाओं से भी वंचित कर दिया था। पूजा खेडकर का कहना है कि चयन और नियुक्ति के बाद, यूपीएससी के पास उन्हें अयोग्य घोषित करने का अधिकार नहीं है। उनके खिलाफ कोई भी कार्रवाई केवल केंद्र सरकार का कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग ही कर सकता है। पूजा ने अपने ऊपर लगे फर्जी दस्तावेजों और धोखाधड़ी के आरोपों का खंडन किया है। उन्होंने चार पन्नों के जवाब में दावा किया है कि उन्होंने 2012 से 2022 तक न तो अपना पहला नाम बदला है और न ही अपना उपनाम।

हरियाणा फतह की तैयारी, दिल्ली में बीजेपी की बैठक

- उम्मीदवारों के नाम पर चर्चा, आज-कल में जारी होगी लिस्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। हरियाणा केंद्रीय मंत्री अमित शाह सहित वरिष्ठ भाजपा नेताओं ने आगामी हरियाणा विधानसभा चुनावों के लिए संभावित उम्मीदवारों के नामों पर चर्चा करने के लिए गुरुवार को पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा के आवास पर बैठक की। यह बैठक शाम को बीजेपी की केंद्रीय चुनाव समिति (सीईसी) की बैठक से पहले हुई है। सीईसी की मीटिंग के दौरान पैनल 1 अक्टूबर को होने वाले चुनावों के लिए अपने उम्मीदवारों के नामों की सूची को अंतिम रूप दिए जाने की संभावना है।

स्मृति ईरानी होंगी दिल्ली में भाजपा का सीएम चेहरा !

- विधानसभा चुनाव से पहले लग रहे कयास पर स्मृति ईरानी ने लगाया विराम

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी नेता और उत्तर प्रदेश के अमेठी से पूर्व सांसद स्मृति ईरानी लोकसभा चुनाव के बाद पहली बार कैमरे के सामने खुलकर बात करतीं नजर आईं। इस दौरान उन्होंने चुनाव के नतीजों समेत कई मुद्दों पर भी बात की। इसी बीच दिल्ली विधानसभा चुनाव में भाजपा के मुख्यमंत्री चेहरे की अटकलों को लेकर भी सवाल पूछा गया। यूट्यूब पर पोस्ट हुए एक पॉडकास्ट टॉप एंगल विद सुशांत सिन्हा में ईरानी ने कहा कि उनका नाम हर चुनाव में लिया जाने लगा है। साथ ही उन्होंने कहा कि अब वो इन बातों पर ज्यादा भरोसा नहीं करती हैं। 2024 लोकसभा चुनाव ईरानी ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी के खिलाफ लड़ा था, जिसमें उन्हें हार का सामना करना पड़ा था। ईरानी ने कहा, पिछले 10 चुनाव में गली नुक्कड़ के चुनाव में भी मेरा ही नाम आता है। मेयर के चुनाव में, विधायक के चुनाव में, विधानसभा के चुनाव में। ऐसा कोई चुनाव नहीं है, जहां पर मेरा नाम न आए। अब मैं इन बातों पर पूरी तरह से भरोसा नहीं करती हूं।

जमीन अधिग्रहण को लेकर पंजाब में संग्राम

फिर भिड़े किसान और पुलिस, इलाके में भारी तनाव

चंडीगढ़ (एजेंसी)। दिल्ली-अमृतसर-कटरा एक्सप्रेस-वे के लिए जमीन अधिग्रहण को लेकर पंजाब के मालेरकोटला में किसान और प्रशासन आमने सामने आ गए हैं। किसान जमीन अधिग्रहण का विरोध कर रहे हैं। बुधवार को नाराज किसानों ने पुलिस की बैरिकेडिंग तोड़ दी

- **दिल्ली-अमृतसर-कटरा एक्सप्रेस-वे पर बढ़ा विवाद**

और पुलिस से भिड़ गए। किसानों के विरोध के बावजूद मंगलवार को यहां पुलिस ने जमीन पर कब्जा कर लिया था। इसके बाद बधवार को भारतीय किसान यूनियन के सदस्य विरोध प्रदर्शन करने पहुंचे। उन्होंने पुलिस की ओर से लगाई गई बैरिकेडिंग तोड़ दी। पुलिस ने उन्हें वहां से भगाने की कोशिश की। इससे अफरातफरी मच गई। बड़ी संख्या में किसान हाथों में लाठी-डंडे और झंडे लेकर वहां पहुंचे थे। पुलिस बार-बार बैरिकेडिंग लगाती और किसान उसे हटा देते। किसानों और पुलिस के बीच ताजा भिड़ंत से इलाके में भारी तनाव है। प्रशासन ने ऐहतियात बरतते हुए इलाके में भारी पुलिस बल तैनात कर दिया है। पुलिस के साथ किसानों की भिड़ंत यह घटना शाम को दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में होने वाली एक उच्च स्तरीय बैठक से पहले हुई है।

उचित मुआवजा नहीं मिलने के कारण किसान कर रहे विरोध

मुख्य सचिव अनुराग वर्मा ने डीजीपी को पत्र लिखकर दिल्ली-अमृतसर-कटरा एक्सप्रेस-वे के दो हिस्सों की जमीन अधिग्रहण कराने के लिए पुलिस बल तैनात करने को कहा था। जहां से यह एक्सप्रेस वे गुजरना है, उसका 1.34 किलोमीटर लंबा हिस्सा मालेरकोटला में और दूसरा 1.25 किलोमीटर का हिस्सा कपूरथला में आता है। यहां एक्सप्रेस वे के निर्माण के लिए किसानों की जमीन एक्वायर करने की प्रक्रिया में उचित मुआवजा नहीं मिलने के कारण भारी विरोध चल रहा है। मुख्य सचिव ने डीजीपी को एसएसपी मालेरकोटला और कपूरथला के साथ भारी पुलिस बल की मौजूदगी में सरकारी प्रक्रिया को पूरा कराने को कहा है, ताकि अधिग्रहण की रिपोर्ट पीएम की बैठक में पेश की जा सके।

हुड्डा के मुकाबले दावेदारी ठोक रहीं शैलजा को झटका

- पार्टी ने किया साफ, किसी भी सांसद को नहीं मिलेगा टिकट

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा विधानसभा चुनाव लड़ने का सपना देख रहे कांग्रेस सांसदों को झटका लगा है। पार्टी ने साफ कर दिया है कि किसी भी सांसद को चुनाव लड़ने की अनुमति नहीं दी जाएगी। इस ऐलान के साथ ही कुमारी शैलजा और रणदीप सुरजेवाला को लेकर चर्चाएं तेज हो गई हैं। दरअसल, दोनों ही सांसदों ने विधानसभा चुनाव लड़ने की इच्छा जाहिर की थी। इधर, भारतीय जनता पार्टी ने गुटबाजी को लेकर कांग्रेस पर निशाना साधा है। साथ ही शैलजा को मुख्यमंत्री उम्मीदवार घोषित करने की चुनौती दी है। खास बात है कि यह ऐलान ऐसे समय पर आया है, जब अटकलें थीं कि हरियाणा कांग्रेस में वरिष्ठ नेता भूपेंद्र सिंह हुड्डा और शैलजा को लेकर गुटबाजी जारी है।

मदरसा और दरगाह भी जाएगी भाजपा, बढ़ाएगी अपने सदस्य

अल्पसंख्यक मोर्चा ने बनाया 50 लाख सदस्यों का प्लान

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी ने सदस्यता अभियान की तैयारियां कर ली हैं। खबर है कि अल्पसंख्यक मोर्चा ने भी पार्टी में 50 लाख सदस्य शामिल करने का लक्ष्य रखा है। कहा जा रहा है कि इसके लिए पार्टी मदरसा और दरगाह समेत कई स्थानों तक पहुंचेगी। इसके अलावा बड़ी संख्या में ईसाई समुदाय और सिख समुदाय के सदस्यों को भी भाजपा शामिल कराने की कोशिश अल्पसंख्यक मोर्चा करेगा। भाजपा के अल्पसंख्यक मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जमाल सिद्दीकी की मौजूदगी में वर्कशाप का आयोजन हुआ था। इसमें अल्पसंख्यक मामलों के केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू भी शामिल हुए थे। समाचार एजेंसी से बातचीत में सिद्दीकी ने बताया था कि सदस्यता अभियान 2 सितंबर से 10 नवंबर तक चलेगा। 1 सितंबर से शुरू हो रही प्राथमिक सदस्यता अभियान का आयोजन मोर्चा 2 चरणों में करेगा। उन्होंने बताया कि पहला चरण 1 सितंबर से 25 सितंबर तक चलेगा और दूसरा चरण 1 अक्टूबर से 15 अक्टूबर तक चलेगा।

चाईनीस दुकान संचालक ने किया सुसाइड

पत्नी और रिश्तेदार लेकर पहुंचे थे अस्पताल, अलसुबह एमवाय लेकर आए शव

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के लसूड़िया में चाईनीस की दुकान संचालित करने वाले युवक ने फांसी लगाकर जान दे दी। सुबह पिता काम से घर आए तो उन्हें जानकारी लगी कि बेटे को बहू अस्पताल लेकर गई है। इसके बाद वह अस्पताल पहुंचे। यहां से शव को लेकर एमवाय लेकर आए। पुलिस ने मामला जांच में लिया है। लसूड़िया पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक

योगेन्द्र (32) पुत्र राकेश सिंह ने अपने घर में फांसी लगाकर जान दे दी। पिता ने जानकारी में बताया कि वह प्रिंटिंग प्रेस में काम करते है। उनकी नाईट शिफ्ट थी। सुबह घर आए तो उन्हें जानकारी लगी की योगेन्द्र को नजदीक के निजी अस्पताल लेकर गए है। इसके बाद पिता भी अस्पताल पहुंचे। पिता के मुताबिक रात में योगेन्द्र बहू और उसके दो बेटे घर पर ही थे। सुसाइड को लेकर उन्हें कोई जानकारी नहीं। योगेन्द्र फल,फ्रूट के साथ चाईनीस की दुकान संचालित करता है। उसकी मां की काफी साल पहले मौत हो चुकी है। 10 साल पहले उसकी शादी हुई थी। घर पर पिता,पत्नी और बच्चों के साथ रहता था। उसकी एक बहन है उसकी भी शादी हो चुकी है। पिता ने किसी तरह की कर्ज की बात से इंकार किया है। पुलिस के मुताबिक अभी मामले में जांच चल रही है।

इंदौर में दो दिन बाद एक्टिव होगा नया सिस्टम

सितम्बर के पहले हफ्ते में फिर तेज बारिश की उम्मीद

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में अगस्त में हुई जोरदार बारिश के बाद इन दिनों मौसम साफ है। तीन दिनों से मौसम ऐसा है कि 24 घंटों में 10 मिमी से भी ज्यादा बारिश नहीं हुई है। मौसम के दो रंग देखने को मिले। कहीं तीखी धूप निकली, तो कहीं फुहारें होती रही। दिनभर में 0.9 मिमी बारिश रिकॉर्ड हुई। इस सीजन की 29 इंच बारिश हो चुकी है। यह कोटे की औसत बारिश 7 इंच दूर है। इंदौर में कोटे की बारिश 36 इंच है। गुरुवार सुबह से मौसम साफ है और धूप खिली हुई है। इंदौर में अगस्त की बारिश का कोटा सवा दस इंच है। इस लिहाज से करीब 5 इंच ज्यादा बारिश हो चुकी है जबकि अभी तीन दिन बाकी हैं। दरअसल जुलाई में हुई कम बारिश के कारण अभी 7 इंच बारिश कम है। हालांकि अभी सितम्बर माह बाकी है। सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. वेदप्रकाश सिंह के मुताबिक 29 अगस्त को बंगाल की खाड़ी में साइक्लोनिक सर्कुलेशन सिस्टम एक्टिव हो रहा है। इसके चलते लो प्रेशर एरिया भी 29-30 अगस्त से एक्टिव हो जाएगा। इसका प्रभाव 2 दिन बाद देखने को मिलेगा। 3 से 4 सितंबर तक प्रदेश के कई हिस्सों में तेज बारिश होने का अनुमान है। इंदौर में मौसम साफ रहेगा। इस दौरान दिनभर धूप खिली रहेगी।

कोरोना काल में 25 लाख के मास्क बुलवाए

एंडवास डूबा, मास्क भी नहीं मिले, तमिलनाडु की कंपनी पर केस

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर की एक फर्म के संचालक ने तमिलनाडु की कंपनी पर केस दर्ज कराया है। फर्म के मालिक का कहना है कि उसने कोरोना काल में तमिलनाडु की कंपनी से वॉट्सएप ग्रुप से संपर्क किया और 10 हजार से ज्यादा मास्क का ऑर्डर किया। कंपनी वालों ने एडवांस रुपए तो ले लिए। लेकिन ना मास्क भेजे और ना ही एडवांस वापस किया। पीड़ित ने इस मामले में अफसरों को शिकायत की। जिसके बाद बुधवार को पुलिस ने केस दर्ज कर लिया। मल्हारगंज पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक प्रवेश पुत्र रामचंद्र सेठी, निवासी रामचंद्र नगर एक्सटेंशन ने बताया कि वह अरिहंत एंटरप्राइस के नाम से फर्म संचालित करते हैं। वह वॉट्सएप ग्रुप फेस मास्क मशीन का मेंबर है। 2020 में कोविड के समय उस ग्रुप के मेंबर के नंबर से कॉल आया। उसने खुद का नाम गणेसन एस बताया। द प्लॉट पेन्ट्री फर्म, अथरिया अपार्टमेंट तमिलनाडु का प्रौपराइटर बताया। इसके बाद उसने कहा कि वह मास्क के इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट का काम करता है। प्रवेश ने 10 हजार यूनिट एन-95 मास्क की जानकारी ली और उसकी बुकिंग कराई। इसके बाद ई मेल आईडी पर व्यापारिक सौदा करते हुए। 25 लाख 41 हजार का सौदा कर लिया। जिसमें 6 लाख 30 हजार रुपए एडवांस भेजे। उसने एक सप्ताह में कुछ माल डिस्पैच करने की बात की। बाकी के माल को लेकर बाद में रुपए देकर माल लेने की बात कही। एक सप्ताह बाद जब माल नहीं आया तो ई मेल के माध्यम से संपर्क किया। लगातार जवाब नहीं देने के बाद ई मेल पर नोटिस भेजे। लेकिन इसके बाद भी जवाब नहीं मिला तो तमिलनाडु की उक्त फर्म को लेकर शिकायत की गई। अधिकारियों ने जांच के बाद केस दर्ज करवा लिया।

जिलाबदर बदमाश ने दी जान से मारने की धमकी

परदेशीपुरा में निजी कंपनी कर्मचारी के साथ मारपीट, पुलिस ने पकड़ा

इंदौर (एजेंसी)। परदेशीपुरा थाने से दो माह पहले ही जिलाबदर किये गए बदमाश ने साथियों के साथ मिलकर निजी कंपनी में काम करने वाले युवक के साथ मारपीट कर दी। आरोपी को पुलिस ने पकड़ लिया है। बताया जाता है कि वह थाने के खुफिया स्टाफ की मदद से इलाके में घूम रहा था। परदेशीपुरा पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक सूरज साहू निवासी सार्वजनिक शिव मंदिर के पीछे की शिकायत पर जिलाबदर बदमाश कौशल कोष्ठी,अंशुल निमझे और उसके दो साथियों पर केस दर्ज किया गया है। सूरज ने बताया कि

वह निजी कार कंपनी में काम करता है। बुधवार की शाम अपने घर के बाहर लाईट का काम कर रहा था। उस दौरान कौशल कोष्ठी और अंशुल निमझे बाइक पर बैठे थे। कौशल ने सूरज को अपने पास बुलाया और गलत तरीके से बात करने का आरोप लगाने लगा। सूरज ने कहा कि अभी तो उसकी कोई बात नहीं हुई। वह अपना काम कर रहा है। दोनों इसी बात पर अपशब्द कहने लगे। दोनों ने अपने दो और साथियों को बुला लिया। उन्होने आते ही लात घूंसों से मारपीट कर दी। सूरज की आवाज सुनकर उसका भाई और अन्य लोग मदद के लिये आए। बीच बचाव किया। इस दौरान आरोपी जान से मारने की धमकी देते हुए वहां से भाग गए।

दो माह पहले हो चुका है जिलाबदर

जानकारी के मुताबिक कौशल कोष्ठी को परदेशीपुरा पुलिस ने कमिश्नर के आदेश पर 26 जून को ही जिलाबदर किया है। इसके बाद भी वह इलाके में ही घूम रहा था। हालांकि कौशल को रात में ही हिरासत में ले लिया गया है। अफसर पूरे मामले को दबाने में लगे हुए हैं।

कार में पीछे बैठकर रस्सी से गला घोटा, शव को बड़वानी में गाड़ा

इंदौर पुलिस परिवार को लेकर पहुंची, तीन गिरफ्तार, एक आरोपी फरार

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के राऊ में एक युवक को अगवा कर उसी के दोस्तों ने गला घोंटकर हत्या कर दी। आरोपियों ने साढ़े चार लाख रुपए के लेनदेन में वारदात को अंजाम दिया। हत्या के बाद शव को बड़वानी के नजदीक राजपुरा के जंगल में गाड़ दिया था। पुलिस परिवार और तीन आरोपियों को लेकर मौके पर पहुंच गई है। शव की पहचान होने के बाद केस दर्ज किया जाएगा। घटना 23 अगस्त की है। राऊ पुलिस के मुताबिक मृतक गजानंद परिहार सिलिकॉन सिटी में रहता था। 23 अगस्त को राऊ थाने में उसकी गुमशुदगी दर्ज कराई गई थी। इसके बाद से पुलिस तलाश कर रही थी। इस मामले में गजानंद के दोस्त और मुख्य आरोपी आशीष पंवार सहित उसके दो साथियों धीरज और राहुल को पुलिस ने पकड़ लिया है। जबकि चौथा आरोपी अजित अब भी फरार है।

ड्राइवर के बगल वाली सीट पर बैठाया, पीछे से गला घोंटा

पुलिस सूत्रों के मुताबिक आशीष पंवार, राहुल और धीरज ने गजानंद को कार में बैठाया और पातालपानी ले गए। उसे जानबूझकर ड्राइवर के पास वाली सीट पर बैठाया, ताकि पीछे से गला घोंट सके। कार आशीष चला रहा था। जबकि पीछे राहुल और धीरज बैठे थे।

तीनों ने कार को पातालपानी इलाके में रोका और सीट के पीछे से रस्सी से गला दबा दिया। गजानंद की मौत के बाद पातालपानी के जंगल में ही शव को गाड़ने का प्लान बनाया। लेकिन, आशीष ने कहा कि यहां से पुलिस बॉडी को ढूंढ़ लेगी। उसने फौरन अपने दोस्त अजित को फोन लगाया। वह बड़वानी के नजदीक राजपुरा में रहता है। अजित ने तीनों को वहीं बुला लिया। इसके बाद तीनों बॉडी लेकर राजपुरा चले गए। यहां जंगल में खुदाई की और गजानंद का शव गाड़ दिया।

बड़वानी में मिला शव, परिवार करेगा पहचान

बड़वानी की राजपुर पुलिस ने बताया कि उन्हें सड़क से थोड़ा अंदर एक शव सड़ी-गली हालत में मिला। पोस्टमॉर्टम के बाद उसे अस्पताल में रखवाया गया है। इंदौर पुलिस की सूचना पर उन्हें शव के फोटो भेजे हैं। इंदौर पुलिस मौके पर पहुंच चुकी है। शव की पहचान के लिए परिवार और आरोपियों को भी साथ ले गई है।

पुलिस को गुमराह करने ट्रेन में फेंका मोबाइल

हत्या करने के बाद जब वे राजपुरा की ओर बढ़े तभी रास्ते में गजानंद के मोबाइल पर कॉल आया, जिसे किसी ने रिसीव नहीं किया। इस पर तीनों को लगा कि मोबाइल से पकड़े जाएंगे। उन्होंने महू से नागदा जा रही ट्रेन में गजानंद का मोबाइल फेंक दिया और वे राजपुरा की ओर निकल गए। मोबाइल की बैटरी उज्जैन जाते-जाते खत्म हो गई और मोबाइल बंद हो गया। इसके चलते पुलिस को गजानंद की आखिरी लोकेशन उज्जैन में मिल रही थी। हालांकि, आशीष और उसके साथी गजानंद को साथ लेकर गए तो वह कार में इंदौर महू टोल पार करते हुए दिखे थे।

पत्नी के इलाज के लिए आशीष से लिए थे 32 हजार रुपए

गजानंद की पत्नी संदल ने बताया कि, उसने गजानंद से 2019 में लव मैरिज की थी। ससुराल वाले खुश नहीं थे, इसलिए दोनों निहालपुरा मंडी में रहने लगे। गजानंद ने सिलिकॉन सिटी में चाय की दुकान खोली थी। पास में आशीष पंवार का कैफे था, इसलिए दोस्ती हो गई। इसी बीच संदल के इलाज के लिए गजानंद ने आशीष से 32 हजार रुपए लिए थे। लिखा-पढ़ी में उसने अपनी दुकान और बाइक गिरवी रखी थी। गजानंद ने यह भी भरोसा दिलाया था कि उसकी तीन साल पुरानी साढ़े चार लाख रुपए की पॉलिसी है, उससे भी पैसा मिलेगा। इस पैसे से वह आशीष की उधारी चुका देगा।

इंदौर वार्ड-83 उप-चुनाव, कांग्रेस के डमी प्रत्याशी 3 बस के मालिक

बीजेपी प्रत्याशी सिर्फ 10वीं पास, कांग्रेस के अधिकृत प्रत्याशी से ज्यादा अमीर उनकी पत्नी

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में 11 सितंबर को निगम के वार्ड 83 का उपचुनाव होना है। जिसके लिए 7 प्रत्याशियों ने नामांकन फॉर्म भरा है। इनमें से 2 प्रत्याशी कांग्रेस और 1 प्रत्याशी बीजेपी पार्टी से है। कांग्रेस ने एक डमी प्रत्याशी को भी मैदान में उतारा है। कांग्रेस ने अधिकृत प्रत्याशी के तौर पर विकास जोशी और डमी प्रत्याशी के तौर पर संजय मालवीय को उतारा है। वहीं बीजेपी ने जितेंद्र राठौर को प्रत्याशी बनाया है। बुधवार को नामांकन के दौरान पार्षद उम्मीदवारों ने संपत्ति का ब्योरा शपथ पत्र में जमा किया है। संपत्ति के मामले में बीजेपी प्रत्याशी ने कांग्रेस के दोनों ही प्रत्याशियों को पीछे छोड़ दिया है। वहीं एजुकेशन के मामले में कांग्रेस के अधिकृत प्रत्याशी बीजेपी के प्रत्याशी से आगे है।

विकास जोशी, कांग्रेस प्रत्याशी

कांग्रेस के डमी प्रत्याशी के पास 3 बस

संजय मालवीय के पास 3 बस, पत्नी के पास 1 टू व्हीलर और बेटे के पास एक बुलेट है। इनके पास एक भी कार नहीं है। पत्नी के पास 2 लाख 10 हजार कीमत का 3 तोला सोना है। मालवीय के ऊपर 24 हजार 900 रुपए का तो बेटे के ऊपर 1 लाख 50 हजार रुपए का कर्जा है। संजय मालवीय के खाते में 2 हजार 48 रुपए है। संजय मालवीय ने 10वीं तक ही पढ़ाई की है।

बीजेपी के प्रत्याशी के पास 80 लाख रुपए से ज्यादा की संपत्ति

जितेंद्र राठौर ने शपथ पत्र में खुद को प्रापर्टी ब्रोकर तो वहीं पत्नी को टिफिन सेंटर का संचालक बताया है। जितेंद्र राठौर के पास तीन बैंक खाते है जिसमें 1 लाख 15 हजार 266 रुपए जमा है। पत्नी के अकाउंट में 76 हजार 188 रुपए जमा है। तो वहीं बड़े बेटे के 3 अकाउंट में 4 लाख 12 हजार 080 रुपए जमा हैं। जितेंद्र राठौर के पास 1 महिंद्रा की एसयूवी, एक जेसीबी, 3 ट्रैक्टर और 3 टू व्हीलर है। पत्नी और बेटे के पास कोई वाहन नहीं है। जितेंद्र के पास 1 लाख 20 हजार कीमत का 20 ग्राम सोना और 1 लाख 30 हजार कीमत की 2 किलो चांदी है। वहीं पत्नी के पास 3 लाख 50 हजार कीमत का 65 ग्राम सोना है। जितेंद्र राठौर के पास 80 लाख कीमत के भूमि और भवन है। वहीं राठौर ने 10 लाख रुपए का होम लोन ले रखा है। जितेंद्र राठौर ने देवास के बागली से 10वीं तक पढ़ाई की है।

इंदौर सोलर पैनल से बिजली बनाने में भी नंबर वन, 6 महीने में 55 फीसदी ग्राहक बढ़े

भोपाल दूसरे नंबर पर, उज्जैन-देवास में भी बढ़ रहा ट्रेंड

इंदौर (एजेंसी)। मालवा-निमाड में घरों की छतों पर सोलर पैनल लगाने का ट्रेंड लगातार बढ़ रहा है। फरवरी से लेकर अगस्त के तीसरे सप्ताह पिछले 6 महीने में छतों और परिसरों में सोलर पैनल लगाने वालों की संख्या में करीब 55 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। मालवा-निमाड़ में सबसे ज्यादा बढ़ोतरी इंदौर और देवास जिले में दर्ज की गई है। छतों पर सोलर पैनल लगातार बिजली बनाने के मामले में इंदौर प्रदेश में सबसे आगे है।

प्रदेश में इंदौर सबसे आगे, दूसरे नंबर पर भोपाल

बिजली कंपनी के अधिकारियों से मिली जानकारी के अनुसार प्रदेश में सोलर सिस्टम के माध्यम से बिजली बनाने में इंदौर पूरे प्रदेश में नंबर वन है। इंदौर में इस समय 10 हजार 700 से ज्यादा छतों पर सोलर सिस्टम के माध्यम से बिजली बनाई जा रही है। इंदौर मध्य शहर, सुपर कॉरिडोर क्षेत्र, बाइपास से लगी कॉलोनियों, औद्योगिक इलाकों में सूरज की किरणों को सहेज कर बिजली तैयार की जा रही है। इंदौर के बाद भोपाल, जबलपुर और ग्वालियर का नंबर आता है। भोपाल में लगभग 7 हजार, जबलपुर में लगभग 3 हजार 500 और ग्वालियर में लगभग 3 हजार घरों की छत पर सोलर सिस्टम से बिजली बन रही है। वहीं उज्जैन में 1200 से ज्यादा, देवास में 500 और रतलाम में 450 उपभोक्ता सोलर पैनल से बिजली तैयार कर रहे हैं। तुलनात्मक रूप से फरवरी से अगस्त तक सबसे ज्यादा प्रतिशत आधारित बढ़ोतरी देवास और इंदौर शहर में हुई है।

ढाई साल की बच्ची दूसरी मंजिल से गिरी

रैलिंग के अंदर से झांकने से संतुलन बिगड़ा, 5 घंटे बाद हो गई मौत

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के खुड़ैल में ढाई साल की बच्ची की दूसरी मंजिल से गिरने से मौत हो गई। वह घर के अंदर खेल खेलते-खेलते बालकनी में पहुंची। यहां रैलिंग के अंदर से झांकने लगी। इस दौरान वह नीचे गिर गई। उसे नजदीक के अस्पताल ले जाया गया। यहां से डॉक्टरों ने एमवाय रैफर कर दिया। पांच घंटे चले उपचार के बाद उसने दम तोड़ दिया। घटना बुधवार की है। खुड़ैल पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक ढाई साल की साक्षी सिसौदिया की दूसरी मंजिल की बालकनी से गिरने से मौत हो गई। पिता बादल उसे घायल अवस्था में बुधवार शाम एमवाय लेकर पहुंचे। साक्षी के सिर और चेहरे पर गंभीर चोट आई थी।

चार माह पहले ही आए थे इंदौर

साक्षी के पिता बादल और मां चार माह पहले ही खंडवा से इंदौर आए थे। यहां बादल निजी कंपनी में नौकरी कर रहा था। परिवार के मुताबिक हादसा साक्षी नाना के घर हुआ। मामा जितेन्द्र ने बताया कि घटना के समय परिवार के बाकी सदस्य काम पर गए हुए थे।

संगठन महामंत्री शर्मा ने ली इंदौर में शक्ति-केंद्र की बैठक

विधानसभा क्रमांक 5 के शक्ति केंद्र क्रमांक 2 की बैठक को किया संबोधित

इंदौर (एजेंसी)। प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा ने सदस्यता अभियान संगठन पर्व को लेकर इंदौर नगर की विधानसभा 5 के वार्ड क्रमांक 37 के शक्ति केंद्र क्रमांक 2 की बैठक ली। इस बैठक में बूथ क्रमांक 74, 75, 81 और 83 के पदाधिकारी, समिति सदस्य और कार्यकर्ताओं को उन्होंने संबोधित किया। शर्मा ने कहा कि चाहे गांव को शहर से जोड़ना हो, गरीबों को अपने मकान देना हो, देश में गरीबों को मुफ्त राशन बांटना या किसानों को सम्मान निधि के माध्यम से राशि पहुंचने का काम करना हो या फिर देश की जनता के स्वास्थ्य की चिंता आयुष्मान कार्ड के माध्यम से करनी हो यह सिर्फ भारतीय जनता पार्टी ने किया है। पहले देश को

सोने की चिड़िया कहा जाता था लेकिन एक समय ऐसा आया कि कांग्रेस सरकार में देश का सोना गिरवी रखना पड़ा था, लेकिन अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली भारतीय जनता पार्टी की सरकार में आज हम विश्व की पांचवी अर्थव्यवस्था बनकर खड़े हैं और जल्द ही तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रहे हैं। जिससे फिर से भारत सोने की चिड़िया बनने जा रहा है। शर्मा ने आगे कहा कि आज अधिक से अधिक लोग भारतीय जनता पार्टी के सदस्य बनना चाहते हैं हमें घर-घर पहुंचकर उन्हें जोड़ने का कार्य करना है। 31 तारीख तक बूथ की संरचना कर लेनी है। जब राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा प्रधानमंत्री को सदस्यता दिलाएंगे उसके बाद प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को सदस्यता दिलाएंगे उसके बाद नगर, विधानसभा वार्ड और बूथ की टोली को यह सदस्यता अभियान में जुट जाना है।

गोगा नवमी पर सराफा चौपाटी बंद का विरोध

व्यापारी बोले यह स्थायी समाधान नहीं सुरक्षा के इंतजाम करे प्रशासन

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में गोगा नवमी के दिन विश्व प्रसिद्ध साराफा चौपाटी को प्रशासन के बंद करवाने के निर्णय से समाज और व्यापारी वर्ग ने असंतुष्टि जताई है। रात्रिकालीन सराफा व्यापारियों का कहना है कि प्रशासन ने भले ही सुरक्षा के मद्दे नजर चौपाटी को आपसी सहमति से बंद करवाया लेकिन यह उचित नहीं हैं। इसके लिए प्रशासन को सुरक्षा और वैकल्पिक व्यवस्था करना चाहिए। दरअसल, मंगलवार को गोगा नवमी के जुलूस के चलते प्रशासन ने सुरक्षा के लिहाज से देर रात लगने वाली सराफा चौपाटी को बंद रखने के लिए प्रस्ताव रखा था। जिस पर सभी व्यापारियों ने व्यवस्था को देखते हुए सहमति जताई। लेकिन बावजूद इसके उनकी मांग है कि किसी भी कार्यक्रम में भीड़ होने पर चौपाटी को बंद करना समाधान नहीं है। प्रशासन को यहां की भीड़ और दुकानदारों के लिए स्थायी समाधान

खोजना चाहिए। वहीं वाल्मीकि समाज भी इस व्यवस्था से सहमत नहीं हैं।

चौपाटी बंद करना स्थायी समाधान नहीं

रात्रिकालीन सराफा चाट चौपाटी के अध्यक्ष राम गुप्ता ने कहा कि प्रशासन ने गोगा नवमी में सुरक्षा के लिहाज से हमसे सहयोग मांगा था। उस लिहाज से बंद का निर्णय लिया गया। लेकिन हमें इस बात का दुख है कि जो समाज साल भार शहर के लिए दिन रात मेहनत करता है उसके विशेष पर्व पर सराफा चौपाटी को बंद करना पड़ा। इसकी मुख्य वजह है सराफा चौपाटी में लगातार दुकानों की संख्या बढ़ती जा रही है। जिस पर प्रशासन का कोई कंट्रोल नहीं हैं। चौपाटी के रजिट्रर्ड 80 मेंबर के अलावा जिस तरह से लगातार वेडरों की संख्या बढ़ रही है उस कारण अव्यवस्था की स्थित बनती है। प्रशासन को इन्हें किसी दूसरे स्थान पर शिप्ट करना है चाहिए।

सराफा शहर की परंपरा, प्रशासन को विकल्प देखना चाहिए

कल सुरक्षा के लिहाज से प्रशासन ने दुकानें बंद रखने की बात कही थी। व्यवस्थाओं को बेहतर करने के लिए चौपाटी को बंद करने की जगह यहां बढ़ रही दुकानों पर कंट्रोल लगाना होगा। पहले हर दो दुकानों के बीच बैठकर खाने पीने की जगह हुआ करती थी। लेकिन अब स्थित यह है कि लोगों के खड़े होने तक की व्यवस्था नहीं हैं। प्रशासन को पुश्तैनी और पुरानी व्यवस्था को यथावत करना चाहिए

- बंटी यादव,
सचिव रात्रिकालीन सराफा चौपाटी

अगर व्यवस्था नहीं बनी तो आगे के त्योहारों में होगी समस्या

आपसी बातचीत के बाद व्यवस्थाएं बनी रहे इस लिए ऐसा निर्णय लेना पड़ा। पहले ऐसा कभी नहीं हुआ कि किसी बड़े पर्व पर सराफा चौपाटी बंद रखनी पड़े। हमारी मांग है कि चौपाटी को पुरानी व्यवस्था पर वापस लाया जाए। शहर की छवि चौपाटी से भी दिखाई देती है। प्रशासन सख्त एक्शन लेकर यहां बिगड़ रही व्यवस्था को ठीक करे।

- भावेश सोमानी,
व्यापारी सराफा चौपाटी

सुरक्षा के चलते चौपाटी बंद की सूचना दी थी

एहतियात के तौर पर पुलिस बाजार को बंद कराती है। जुलूस के दौरान कुछ उपद्रवी लोग इसमें शामिल होकर विवाद की स्थिति उत्पन्न करते हैं।

- लीलाधर करोसिया,
अध्यक्ष वाल्मीकि युवा संगठन

संपादकीय

प्रतिमा नहीं, गौरव गिरा है!

महाराष्ट्र के मालवण में मात्र 8 माह पहले स्थापित शिवाजी प्रतिमा का 26 अगस्त को ध्वस्त होना उसी दुर्भाग्यपूर्ण संस्कृति और सिलसिले की एक और कड़ी है, जिसमें नव निर्मित राम मंदिर और नई संसद टपकने लगती है, भूमिगत मार्ग की छत गिर पड़ती है, एयरपोर्ट की छते ध्वस्त हो जाती हैं, एक के बाद एक पुल ढहने लगते हैं। कोई नहीं पूछ पा रहा है कि ऐसा क्यों हो रहा है? सभी मामलों में शुरूआती हल्ले के बाद गहरी चुप्पी छा जाती है। मालवण मामले ने अब राजनीतिक मोड़ ले लिया है और इसे राजनीतिक मुद्दा बनना भी चाहिए, क्योंकि यह लापरवाही और भ्रष्टाचार की इंतिहा है। ऐसे लोगों ने अब देश के महानायक और महाराष्ट्र में सर्वतो पूजनीय शिवाजी महाराज की प्रतिमा को भी नहीं छोड़ा। इस घटना के बाद बचाव में सत्तारूढ़ दल के जो बयान आ रहे हैं, वो बेहद बचकाना और घटना की गंभीरता को कम करने वाले हैं। राज्य की महायुति सरकार में शामिल एनसीपी अजीत के नेता व राज्य के उपमुख्यमंत्री अजीत पवार ने शिवाजी की प्रतिमा गिरने पर पूरे प्रदेश की माफी मांगी है तो प्रदेश के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने कहा कि 27 फीट की प्रतिमा गिरी तो क्या, अब सरकार 100 फीट की और ऊंची तथा भव्य प्रतिमा बनवाएगी। दूसरी तरफ विपक्ष ने कहा है कि केवल शिवाजी की प्रतिमा ही नहीं गिरी है, प्रदेश का गौरव भी गिरा है। शिवसेना उद्धव गुट के नेता संजय राउत ने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री जहां-जहां हाथ लगाते हैं, वहीं बंटाढार हो जाता है। इस घटना को लेकर महाविकास आघाड़ी और महायुति के कार्यकर्ताओं के बीच झड़प भी हुई। विपक्षी महाआघाड़ी ने इस घटना को मुद्दा बनाते हुए 1 सितंबर को मुंबई में प्रदर्शन का ऐलान किया है। उल्लेखनीय है कि मालवण के नौसैनिक अड्डे पर स्थित इस प्रतिमा का अनावरण प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बीते साल 4 दिसंबर को नौसेना दिवस के अवसर पर किया था। यह प्रतिमा नौसेना ने ही बनवाई थी। प्रतिमा स्थापना के मात्र 8 माह बाद ही कैसे गिर गई, इस बारे में जो कारण बताया गया है, वह भी गले उतरने वाला नहीं है। कहा गया कि समुद्र तट पर 45 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवा चलने के कारण प्रतिमा गिर गई। इस प्रतिमा निर्माण की पूरी कहानी भी संदेहों से भरी है। शिवाजी की प्रतिमा का निर्माण एक नवोदित शिल्पकार जयदीप आपटे को दिया गया था। उसे ऐसी विशाल प्रतिमाएं बनाने और लगाने का कोई खास अनुभव नहीं था। ओंकारेश्वर में शंकराचार्य की प्रतिमा का निर्माण करने वाले शिल्पकार भगवान रामपुरे का कहना है कि शिवाजी की प्रतिमा का गिरना बतौर एक कलाकार उनके लिए शर्म से गड़ जाने वाली बात है। 15 फीट से ऊंची प्रतिमा बनाते और स्थापित करते समय इंजीनियरिंग का भी ध्यान रखना पड़ता है। जिस तरह से प्रतिमा गिरी है, उससे नहीं लगता कि इंजीनियरिंग की कोई रिपोर्ट भी ली गई होगी। शिल्पकार रामपुरे ने तो साफ तौर पर कहा कि शिवाजी प्रतिमा वाले मामले में निश्चय ही भारी भ्रष्टाचार हुआ है। इसी के साथ यह सवाल भी जुड़ा है कि 5 करोड़ रू. की लागत से बनने वाली इस प्रतिमा का ठेका नौसिखिए शिल्पकार जयदीप आपटे को क्यों दिया गया? वैसे भी जानकारों का कहना है कि जयदीप ने शिवाजी की जो प्रतिमा बनाई वो भी भौंडी ही है। शिवाजी के वशंज और सांसद छत्रपति संभाजी राजे ने सवाल किया कि क्या इस प्रतिमा को राज्य के कला संचालनालय से मंजूरी मिली थी? इस ताजा घटना ने राज्य में जल्दी ही होने जा रहे विधानसभा चुनावों के मद्देनजर सत्तारूढ़ भाजपा और एनडीए गठबंधन के दलों की मुश्किलें और बढ़ा दी हैं।

नजरिया

स्त्री सशक्तिकरण की नई गाथा लखपति दीदी अभियान

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक भारत के राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं। वर्तमान में केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

स्वत्व जीवन-बोध है। स्वत्व का जिसे आभास नहीं वह जीवन ही क्या? जीवन के लिए भौतिक और आध्यात्मिक बोध होना आवश्यक होता है लेकिन यह तभी होता है जब व्यक्ति स्वत्व की खोज करता है। भारत में स्वत्व का अपना महात्म्य है और इसके लिए हमारे सनातन परम्परा में पर्याप्त प्रयास मिलते हैं जिसकी विस्तृत गाथा हेमन अपने धर्म-ग्रंथों में मिलती है। भारत तो सबसे अधिक स्वत्व की खोज करने वाला देश है क्योंकि यहाँ पर भौतिकवादी सोच के साथ आध्यात्मिक सोच विद्यमान रही है। देखा जाए तो सम्पूर्ण इस प्रकार के स्वत्व के अध्येता इस विमर्श पर पहुँचते हैं कि इसी से भारतीय मनुष्य इसीलिए अपनी सम्पूर्ण आशा व विश्वास से भरे-पूरे मिलते हैं। इसके लिए भारतीय संस्थाओं ने अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है चाहे जंगल में आश्रम व्यवस्था हो, चाहे भारतीय परिवार नाम की संस्था हो, चाहे भारत एक राज्य के रूप में जो अपना अस्तित्व पाया हो, इन सबने भारत के स्वत्व को स्थापित करने का काम किया है।

भारत में स्त्री स्वत्व का भी अपना वैशिष्ट्य है और इतिहास है। इसमें आज के भौतिकवादी युग में स्वत्व की सुरक्षा जिन मापदंडों और जीवनचर्या से जिवंत हो सकती है, उसका हमें भान होना आवश्यक है। निःसंदेह आर्थिक सुरक्षा, जीवन सुरक्षा और गरिमा जीवन के स्वत्व के लिए आज जरूरी है। आर्थिक युग में बिना आत्मनिर्भर हुए स्वत्व की सुरक्षा हो ही नहीं सकती। भारत में आत्मनिर्भर होने के लिए विशेष पहल आज हो रही है और सरकार यह चाहती है कि कौशलयुक्त भारत में आत्मनिर्भर नागरिक तैयार हों। यह एक प्रयास है जिसे भारतीय नागरिक आज समझ चुके हैं। कौशल के साथ धनोपार्जन से व्यक्ति अपने स्वत्व का बोध कर पाता है क्योंकि जिस व्यक्ति के पास पैसे नहीं है, वह अपने आप को आज निरीह समझता है। हालांकि भारत में स्वत्व केवल धन पर आधारित नहीं है यहाँ आध्यात्मिक व्यक्ति अपने आपको ज्यादा स्वत्व के साथ जीते हुए महसूस कर सकता है।

जीवन संघर्ष में निःसंदेह स्त्री-पुरुष दोनों को अपने स्वत्व की चिंता है और स्टेट का यह दायित्व है कि वह अपने नागरिकों को उनके स्वत्व के साथ जीवन जीने की आदत डाले और साथ ही आवश्यक संसाधन व वातावरण को तैयार करे जिसमें मनुष्य अपने आनंद के साथ अपने स्वत्व को महसूस कर सके। भारतीय स्त्रियों की दशा इस मामले में हमेशा प्रश्नांकित रही है। उन्हें घरेलू हिंसा, पितृसत्तात्मक अतिक्रमण और अन्य उनके निजी निजता के साथ खिलवाड़ के संघर्ष की गाथा एक विदीर्ण कथा-व्यथा है। उन्हें काम के बदले कम वेतन का शिकार होना पड़ा है। उन्हें यातनाएं सहनी पड़ी है। उन्हें संघर्ष व ऐसे अनेक अवरोध के साथ जीना पड़ा है जिसे पुरुष नहीं झेलता।

लखपति दीदी योजना स्त्रियों को सशक्त बनाने की पहल है। भारत सरकार का यह एक स्त्री-सशक्तिकरण के लिए जन-आन्दोलन है। यह एक ऐसा प्रयास है जिससे स्त्रियों के न केवल स्वत्व को संबल मिलेगा। हाल ही में हुए जलगाँव में लखपति दीदी सम्मेलन से प्रधानमंत्री ने स्पष्ट किया कि जब मैं लोकसभा चुनाव के दौरान आपके बीच आया था, तब मैंने कहा था कि हमें 3 करोड़ बहनों को लखपति दीदी बनाना है। यानी 3 करोड़ ऐसी बहनें और जो सेल्फ हेल्प ग्रुप में काम करती हैं। जिनकी एक साल की कमाई, एक लाख रुपये से अधिक होगी। बीते 10 वर्षों में एक करोड़ लखपति दीदी बनीं और बीते 2 महीनों में, सिर्फ दो महीने में 11 लाख और लखपति दीदी उसमें जुड़ गईं, नई बन गईं। देश का कोई भी नागरिक प्रधानमंत्री के संकल्प को सराहेगा कि उन्होंने जो कहा वह किया और जो किया उससे लखपति दीदी देश के विकास की धुरी बनने जा रही हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रतिबद्धता से देश की स्त्रियों में स्वत्व स्थापित होगा और वे आत्मनिर्भर होकर अपने परिवार की देखभाल, सुरक्षा, उनके जीवन के उत्कर्ष की गाथा अब स्वयं लिखेंगी। पुरुष प्रधान समाज में स्त्रियों के हाथ में रूपये आना, उनका सक्षम होना बहुत आवश्यक है। इससे न उनके विचारों को पुरुष प्रधान समाज सुनेगा। उन्हें किसी भी तरह अपमानित नहीं करेगा। माताओं-बहनों-बेटियों से जुड़ी योजनाओं के लिए बजट में 3 लाख करोड़ रुपए रखे गए। उन्हें समझा गया है। इसमें लखपति दीदी योजना भी सम्मिलित है।

स्त्रियाँ केवल श्रम के लिए नहीं हैं। वह भारत की आत्मशक्ति हैं। वह नारीशक्ति हैं। वह देश के लिए अनिवार्य विकास की कड़ी हैं। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने इस अभियान में अब जोश भर दिया है और वह सशक्त स्त्रियों का भारत निर्मित करने की मुहिम में सम्मिलित होकर जो नया अध्याय लिखना चाहते हैं वह निःसंदेह प्रशंसनीय है। सबसे अच्छी बात यह है जिसे मैं स्वयं अपने जीवन में उतारता हूँ वह है सपने को न मरने देना और जो एक बार सद्कार्य सोच लिया, उसे निरंतर जीना। प्रधानमंत्री निःसंदेह निरंतर अपनी सोच को जीते हैं। जैसा की उन्होंने कहा भी कि पहले जब मैं सखी मंडलों की बात करता था, महिला सेल्फ हेल्प ग्रुप की बात करता था, तो बहुत कम लोग थे, जो ये देख पाते थे कि इसका महत्व क्या है। आज देखिए, ये भारत के अर्थतंत्र की एक बहुत बड़ी शक्ति बनती जा रही है। गांव-गांव में, दूर-सुदूर आदिवासी क्षेत्रों में, सखी मंडलों से जो परिवर्तन आ रहे हैं, वो सबके सामने हैं। 10 साल में, ये आंकड़ा भी बहुत बड़ा है, दस साल में 10 करोड़ बहनें इस अभियान से जुड़ चुकी हैं और हमने इनको भी बैंकों से जोड़ा है। माताओं-बहनों-बेटियों का सामर्थ्य बढ़ाने के साथ-साथ उनकी सुरक्षा भी देश की प्राथमिकता है। मैंने लाल किले से भी बार-बार इस विषय को उठाया है। आज देश का कोई भी राज्य हो, अपनी बहनों-बेटियों की पीड़ा को, उनके गुस्से को मैं समझ रहा हूं। मैं एक बार फिर देश के हर राजनीतिक दल से कहूंगा, हर राज्य सरकार से कहूंगा कि महिलाओं के खिलाफ अपराध अक्षम्य पाप है। दोषी कोई भी हो, वो बचना नहीं चाहिए।

देश की स्त्री चाहती क्या है? उसका विकास कैसे होगा? उसके स्वत्व का बोध उसे कैसे होगा, जो सरकार यह समझ लेती है, वह जनप्रिय सरकार होती है। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार इस मामले में जो इनिशिएटिव ली है और प्रधानमंत्री ने अपने सोचे हुए को अपने देश में उतारने का संकल्प सिद्ध करना चाहते हैं उससे देश की महिलाओं में एक नई किरण की उम्मीद है और महिलाओं में विश्वास जागने की उम्मीद है। यदि लखपति दीदी आने वाले समय में निरंतर अपना सहयोग देती गयीं और अपने पड़ोस की भी महिलाओं को लखपति दीदी योजना में सम्मिलित करती गयीं तो यह देश अपने लक्ष्य में सफल होगा और पूरा विश्व इससे प्रेरणा लेगा, इसमें कोई अतिश्योक्तिपूर्ण बात नहीं है। हमारे देश की ऐसी अनेक योजनायें विश्व में प्रेरणा बनीं और देशों ने अपने नागरिकों के जीवन स्तर को ऊंचा किया है। भारत में लखपति दीदी योजना अब करोड़ों महिलाओं को एक सूत्र में बाँध रही है और देश की आत्मशक्ति को भी विकसित करने में मदद कर रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यदि देश में आने वाले समय में इस प्रकार की मुहिम गति प्रदान करते रहे तो यह एक पुनीत कार्य देश की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और रचनात्मक बदलाव का कारण बनेगा। इसके लिए निःसंदेह राज्य सरकारों और देश की उन सभी संवेदनाशील व्यवस्थाओं का अवदान अहम है और आवश्यकता इस बात की है कि स्त्री सशक्तिकरण की नई गाथा लिखने के लिए सभी अपना योगदान सुनिश्चित करें।

श्रम अधिकार

असंगठित क्षेत्र में भी मिले पेंशन और सामाजिक सुरक्षा

आरके सिन्हा

लेखक पूर्व सांसद हैं।

सरकार ने हाल ही में एकीकृत पेंशन योजना यानी यूनीफाइड पेंशन स्कीम (यूपीएस) को लागू करने की अंततः घोषणा कर ही दी। यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उस अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण है, जो देश भर में सेवानिवृत्त सरकारी कर्मियों के हितों की रक्षा करती है। नई पेंशन योजना 1 अप्रैल 2025 से लागू होगी। इससे कर्मचारियों को सेवानिवृत्ति के बाद निश्चित पेंशन मिलेगी। इसकी रकम सेवानिवृत्ति से पहले के 12 महीने के औसत मूल वेतन का 50 फीसदी होगी। 25 वर्ष तक की सेवा पर ही यह रकम मिल सकेगी। 25 वर्ष से कम और 10 साल से ज्यादा की सेवा पर उसके अनुपात में भी पेंशन मिलेगी। किसी भी कर्मचारी के निधन से पहले पेंशन की कुल रकम का 60 फीसदी हिस्सा परिवार को मिलेगा।

दरअसल नई पेंशन योजना के लागू होने से सरकारी बाबुओं को बहुत बड़ी दीर्घकालिक आर्थिक स्थिरता मिलेगी। केंद्र सरकार के कर्मचारियों की नई पेंशन योजना (एनपीएस) में सुधार की लंबे समय से मांग की जा रही थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अप्रैल 2023 में टीवी सोमनाथन के नेतृत्व में इस पर एक समिति का गठन भी किया था। जेसीएम (संयुक्त सलाहकार तंत्र) सहित व्यापक परामर्श और चर्चा के बाद समिति ने एकीकृत पेंशन योजना की सिफारिश की थी।

भारत में, वृद्धावस्था में वित्तीय सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पेंशन सबसे महत्वपूर्ण साधन है। यह न केवल कर्मचारियों को काम करने के बाद जीवन स्तर बनाए रखने में मदद करता है, बल्कि; सेवा निवृत्त कर्मचारियों को बाक़ी जीवन परिवार और समाज में, यहाँ तक कि अपने बच्चों की नज़र सम्मानपूर्वक बिताने का ज़रिया देता है। जब कर्मचारी सेवानिवृत्त होते हैं, तो उनके आमदनी का स्रोत अचानक खत्म हो जाता है। पेंशन, भले ही सेवा के दौरान प्राप्त होने वाली आय से आधी हो, एक नियमित आय तो प्रदान करता ही है, जो उन्हें आवश्यक खर्च जैसे भोजन, स्वास्थ्य सेवा, और आवास के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराता है। इससे वित्तीय अनिश्चितता के खतरे को बहुत हद तक कम किया जा सकता है।

अटल बिहारी वाजपेयी सरकार ने 2004 में राष्ट्रीय पेंशन योजना (एनपीएस) शुरू की थी। उसमें कर्मचारियों और सरकार दोनों ने कर्मचारी के मूल वेतन और महंगाई भत्ते (डीए) का 10 प्रतिशत योगदान सेवानिवृत्ति निधि में दान किया। इस फंड को बाजार-जुड़े साधनों के मिश्रण में निवेश किया गया था, और रिटर्न में प्राप्त आय से पेंशन राशि का निर्धारण किया। हालाँकि, इस प्रणाली ने बहुत आवश्यक वित्तीय अनुशासन भी लाया और सरकार की बिना फंड वाली पेंशन देनदारियों को कम किया। लेकिन, उसने सेवानिवृत्त लोगों के लिए अनिश्चितता भी पैदा की, क्योंकि पेंशन बाजार के प्रदर्शन पर निर्भर थी। उदाहरण के लिए, बाजार में गिरावट के दौरान, सेवानिवृत्त लोगों ने कम रिटर्न देखा, जिससे उनकी वित्तीय सुरक्षा के बारे में चिंताएं बढ़ीं। एक बात जान लें कि नई पेंशन का राज्य सरकार के कर्मचारियों को भी लाभ मिलेगा यदि कोई राज्य सरकार इसे लागू करना चाहती हैं तो। कांग्रेस का एनपीएस पर रुख सदैव अस्पष्ट रहा और लगातार बदलता भी रहा। शुरू में, कांग्रेस ने एनपीएस की सराहना की। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने इसे एक बेहतर पेंशन मॉडल बताया। हालांकि, बाद में कांग्रेस ने इसकी कमियां निकालनी शुरू कर दीं, मात्र अपने सियासी स्वार्थों के कारण। पुरानी पेंशन योजना को खत्म करने के लिए केंद्र की राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) सरकार को आलोचना का सामना करना पड़ा था। केंद्र से लेकर राज्यों के भी सरकारी कर्मचारी पुरानी पेंशन स्कीम को वापस लाने की मांग करते ही रहे थे। राजस्थान में जब कांग्रेस की सरकार थी तो उन्होंने पुरानी पेंशन को लागू किया था, जोकि आज तक लागू है। हिमाचल प्रदेश में भी पुरानी पेंशन योजना को लागू किया जा चुका है। अब एकीकृत पेंशन योजना पर मोहर लग गई है।

एकीकृत पेंशन योजना की सबसे बड़ी खूबी यही है कि इसमें पुरानी पेंशन योजना यानी ओपीएस और राष्ट्रीय पेंशन योजना (एनपीएस) की खासियतों को शामिल किया गया है। ओपीएस की तरह यूपीएस में भी निश्चित पेंशन सुनिश्चित की जा रही है और यही मांग कर्मचारियों की लगातार रही है। यूपीएस प्रति माह 10 हजार रुपए की न्यूनतम पेंशन गारंटी पेश देती है।

यूपीएस से लाखों सरकारी कर्मियों को रिटायरमेंट के बाद आर्थिक सुरक्षा मिलेगी। वर्ना जिन लोगों को किसी तरह की पेंशन रिटायरमेंट के बाद नहीं मिलती है, उन्हें बहुत कष्ट और जलीलत की ज़िंदगी झेलना पड़ता है। देश के निजी क्षेत्र से जुड़े लाखों-करोड़ों लोगों को हर माह बड़ी मुश्किल से दो-ढाई हजार रुपए ही पेंशन मिलती है। अब आप सोच सकते हैं कि इतनी कम राशि से तो कोई इंसान अपने महीने का चाय-पानी का खर्च भी नहीं निकाल सकता है। मेरे बहुत सारे पत्रकार मित्रों को रिटायर होने के बाद मात्र दो-तीन हजार रुपए मिलते हैं पेंशन के रूप में। यही हाल अन्य विभागों से जुड़े रिटायर कर्मियों का भी है।

नई पेंशन योजना प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाली सरकार का एक अहम फैसला मानी जाएगी। इसका लक्ष्य सरकारी कर्मियों को सामाजिक सुरक्षा देना है। इस तरह की नीति कोई दूरदर्शी नेतृत्व ही ला सकता है। यह एक ऐसी योजना है जो पिछली पेंशन योजनाओं की सारी अच्छी बातों का निचोड़ है।

सवाल पूछा जा रहा है कि क्या सरकरी कर्मियों को रिटायर होने पर ग्रेच्युटी के अतिरिक्त एकमुश्त भुगतान का भी लाभ मिलेगा? इस सवाल का जवाब यह है कि कर्मियों को सेवानिवृत्ति पर ग्रेच्युटी के अतिरिक्त एकमुश्त भुगतान का लाभ भी मिलेगा।

सेवानिवृत कर्मियों के पास वित्तीय सुरक्षा होने का अर्थ है कि वे अपने परिवारों की देखभाल करने, बच्चों की शिक्षा में योगदान देने, और अर्थव्यवस्था को समर्थन देने के लिए अधिक संसाधन रख सकते हैं। यह बुढ़ापे में आश्रित होने के बजाय स्वतंत्र जीवन जीने में मदद करता है।

एक स्थिर पेंशन प्रणाली कर्मचारियों को अपनी नौकरी के प्रति अधिक प्रतिबद्धता और निष्ठा पैदा करती है। उन्हें लगता है कि रिटायर होने के बाद उन्हें वित्तीय सुरक्षा मिलेगी, इसलिए वे अपनी नौकरी में अधिक ध्यान केन्द्रित करते हैं।

एक बात यह भी है कि पेंशन योजनाएं आर्थिक स्थिरता को बढ़ावा देती हैं। निवेश योजनाओं में पेंशन फंडों के निवेश से आर्थिक विकास को प्रोत्साहन मिलता है, रोजगार के अवसर बढ़ते हैं, और देश की समग्र आर्थिक स्थिति मजबूत होती है।

भले ही पेंशन के कई लाभ हैं, भारत में अभी भी कई चुनौतियां हैं। भारत के असंगठित क्षेत्रों में काम करने वाले अनगिनत मेहनतकशों को कोई पेंशन नहीं मिलती। इनकी कुल संख्या सरकारी कर्मचारियों की संख्या से कई गुना ज़्यादा है और उनकी आय भी कम और अनिश्चित है। आख़िर, वे भी तो भारतीय नागरिक ही हैं। सरकार को इनके बारे में भी गम्भीरतापूर्वक सोचने की आवश्यकता है।

समाज व राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी का भाव कैसे जागृत हो?

दृष्टिकोण

राजेंद्र बज

लेखक स्तंभकार हैं।

तमाम तरह के छोटे-बड़े कामकाजी वर्ग की राष्ट्र के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रहा करती है। लेकिन समाज व राष्ट्र का उत्थान करने की दिशा में आर्थिक प्रगति चाहे आवश्यक समझी जाती हो, लेकिन मात्र इसी आधार पर समाज व राष्ट्र के व्यापक उत्थान का दावा नहीं किया जा सकता। व्यक्ति एवं समाज का चरित्र निर्माण, गौरवशाली परंपराओं का परिपालन और अंतर्मन में मानवीयता का भाव भी जरूरी होता है। जिसके चलते आदर्श समाज और आदर्श राष्ट्र की परिकल्पना को मूर्त रूप दिया जा सकता है। अन्यथा आर्थिक प्रगति को ही वास्तविक प्रगति का पर्याय मान लेना, हमें अपनी जड़ों से ही वंचित कर देगा।

आजकल हो यह रहा है कि हर आदमी की महत्वाकांक्षाएं निरंतर परवान चढ़ रही है। एक आवश्यकता की पूर्ति अनेक आवश्यकताओं का सृजन कर रही है। तरह-तरह की खोज एवं आविष्कार बाजार में उतरते ही आम आदमी की आवश्यकताओं में शुमार होते जा रहे हैं। व्यावहारिक रूप से देखा जाता है कि जो आदमी जितना अधिक कमाने लगता है उतनी ही अधिक मात्रा में उसके मन की चाहत बढ़ती चली जाती है। मृगतृष्णा का कहीं ओर-छोर नहीं होता। और... और.... और अधिक पाने की चाहत में आदमी दीवाना बना जा रहा है। देखते ही देखते जाने-अनजाने हम अपनी मूलभूत संस्कृति से लगातार विमुख होते जा रहे हैं।

वैसे अब वह जमाना नहीं रहा जब आदमी की अनिवार्य आवश्यकताओं में महज रोटी, कपड़ा और मकान ही हुआ करते थे। कल तक की आरामदायक और विलासितापूर्ण आवश्यकताएं देखते ही देखते अब अनिवार्य हो गई या आरामदायक हो गई। इसके चलते कामकाजी आदमी तो दुनिया भर के तमाम तरह के संसाधन जुटाने की दिशा में ही अपने देवदुर्लभ कहे जाने वाले मानव भव को परिग्रह के प्रति समर्पित किए हुए हैं। आमतौर पर आदमी जमाने भर के भौतिक संसाधनों को जुटाने की दिशा में इतने मशगूल हो जाया करते हैं कि यह भी भूल जाते हैं कि जिंदगी मौत की अमानत है।

यही कारण है कि हमारी मनोदशा ऐसी हो जाती है कि जीवन में अपने ही अपने और अपनों के बारे में सोचते हैं। इसके चलते समाज या राष्ट्र के प्रति हम अपने सामाजिक और राष्ट्रीय उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने की जिम्मेदारी को तो कतई नहीं समझते। वैसे मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज और समाज से राष्ट्र का निर्माण हुआ करता है। लेकिन वर्तमान दौर में देखते ही देखते भारतीय परिवेश में संयुक्त परिवार की अवधारणा लगातार खंडित होती चली जा रही है। आदमी जब अपनों से ही किनारा करने लगे, तो दूसरों को अपना लेना तो दूर की बात हो जाती है। काफी हद तक अपने ही स्वार्थ के प्रति समर्पित रहने की मानसिकता का विस्तार होता नजर आता है।

जाहिर है कि ऐसे परिवार अपनी ही दुनिया में खोये रहा करते हैं। सामाजिक जिम्मेदारी का संज्ञान लेने का उनके पास समय नहीं होता। ऐसे में उनसे नागरिक धर्म का निर्वहन करने की अपेक्षा व्यर्थ सिद्ध होती है। वर्तमान दौर की आपाधापी में चंद अपवाद छोड़कर हर कोई पैसा, पद और प्रतिष्ठा की दौड़ में शामिल है। अपवाद स्वरूप जो शख्सियत ऐसे दौर में भी समाज एवं राष्ट्र के कल्याण के प्रति दृढ़ संकल्पित है, उनकी उपस्थिति समाज सेवा एवं राजनीति के क्षेत्र में ही दिखाई देती है। औसत दर्जे का आम आदमी महज अपने काम से ही काम रखने लगता है। जिसके चलते समाज सेवा के साथ-साथ राजनीति भी मूल लक्ष्य से भटकती दिखाई देती है। खैर।

माना कि वर्तमान दौर में पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन बहुतेरे वर्ग के लिए किसी गंभीर चुनौती से कम नहीं। लगातार बढ़ती महंगाई और घटते रोजगार के बीच निरंतर बढ़ती आबादी के चलते आरामदायक जिंदगी की परिकल्पना बमुश्किल साकार हुआ करती है। ऐसे में निरंतर बढ़ती उपभोग की मनोवृति पर अंकुश लगाने की जरूरत है। इसके अतिरिक्त इस संदर्भ में सामाजिक तथा राष्ट्रीय नेतृत्व को ऐसी किसी कार्ययोजना को मूर्त रूप देने की आवश्यकता है - जिसके चलते आम आदमी का जीवन सुगम हो सके। ऐसा होने पर ही आम आदमी समाज व राष्ट उत्थान की दिशा में अग्रसर हो सकेगा। अन्यथा कमाने और खाने में ही आदमी की जिंदगी जाया होती चली जाएगी।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

तोंद की महिमा

सतीश सिंह

लेखक व्यंग्यकार हैं।

हिंदू शास्त्रों में समय को 4 युगों यथा, सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलयुग में बांटा गया है। विद्वानों के अनुसार अभी कलयुग चल रहा है, लेकिन मौजूदा समय को तोंदुल युग कहना ज्यादा प्रासंगिक होगा। हालांकि, इन्हें किसी कालखंड में नहीं बांधा जा सकता है, क्योंकि तोंदुलों का अस्तित्व अनादिकाल से बना हुआ है। मामले में ये काकरोचों को भी पीछे छोड़ चुके हैं। आज ये बहुसंख्यक हैं और देश को चलाने में इनकी अहम भूमिका है। इतना ही नहीं ऊर्जावान और क्षमतावान होने की वजह से दुनिया भर में इनकी तूती बोल रही है।

तोंद की महिमा हर युग में बनी हुई रही है और तोंदुलों को ईसा पूर्व से मान-सम्मान मिलता रहा है। उस जमाने में गणमान्य व्यक्ति यानी नगर सेठ, पुरोहित, राज पुरोहित आदि तोंदुल ही हुआ करते थे, लेकिन वे अर्थव्यवस्था और धर्म के आधार थे। इनके सहयोग के बिना राजा कुछ भी नहीं कर सकता था। वे इतने ताकतवर होते थे कि कभी भी राजा का तख़्ता पलट सकते थे। आज भी तोंदुल आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक दिशा-निर्देशों व नियम-कायदों को तय करने में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

तोंदुल की श्रेष्ठता से जलने-भुनने वाले इनकी महिमामंडन करने से बचते रहे हैं, पर आज जरूरत इस बात की है कि तोंदुलों के एहसान को माना जाये, उनकी अहमियत को समझा जाये, बेवजह उनकी लालत-मलामात नहीं की जाये, हमेशा श्रद्धा भाव से उनका इस्तकबाल किया जाये आदि।

दुनिया में तोंदुलों के महत्व को या उनकी महिमा को सिर्फ इथोपिया जैसा देश ही समझ सका है, जहां निवास करने वाले बोदी जनजाति में जिस पुरुष का तोंद सबसे ज्यादा बढ़ा हुआ होता है, उसे सबसे सुंदर या हैंडसम माना जाता है। वहाँ, सभी पुरुष हमेशा तोंद बढ़ाने की जुगत में रहते हैं। बड़े-बढ़े तोंद पर लड़कियां मरती हैं, जान छिड़कती हैं। मोटे पुरुषों के लिए सौंदर्य प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है और सबसे मोटे पुरुष को विजेता घोषित करके उनका मान-सम्मान किया जाता है साथ ही साथ उन्हें पुरस्कार के रूप में एक मोटी राशि दी जाती है।

वर्तमान में तस्वीर थोड़ी बदल गई है। राजा अर्थात नेता यानी सांसद, विधायक, मंत्री आदि तोंदुल बन गए हैं। देश यही चला रहे हैं। नेता को मामले से अलग कर दें तो भी रोजगार सृजन का कार्यभार तोंदुलों ने अपने कंधों पर ले रखा है।

डॉक्टर और दवाखाना वाले तो पूरी तरह से तोंदुलों के रहमों-करम पर जिंदा हैं। मिठाई, पिज्जा-बर्गर, गोलगप्पे व समोसा-चाट, जलेबी, पूरी-कचौड़ी व घूघनी, बकरा-मुर्गा, मोमो-चाउमीन आदि बेचने वालों की दुकान भी तोंदुल ही चला रहे हैं। कपड़े बेचने वाले, दर्जी आदि के मुनाफे को बढ़ाने में भी इस प्रजाति की अहम भूमिका है।

भीएलसीसी, जिम चलाने वाले, स्लिमिंग मशीन का कारोबार करने वाले कारोबारी तोंदुलों की वजह से ही चांदी काट रहे है। करोड़ों-अरबों रूपये के वारे-न्यारे कर रहे हैं ये लोग। सिर्फ 1-2 किलोग्राम वजन कम करने के लिए तोंदुल डाक्टरों और कारोबारियों की मोटी रकम से जेब गरम कर रहे हैं। बड़ी संख्या में महिलाएं तोंदुल पति की वजह से ही आज चैन की नींद सो पा रही हैं। पति की जासूसी करवाने का भी टेंशन उन्हें नहीं रहता है। पति की सेक्रेटरी सुंदर कन्या के रहने पर उन्हें डर नहीं लगता है। कभी बुरे सपने नहीं आते हैं। तोंदुल पति इधर-उधर मुँह नहीं मारेगा और चर्बीदार और गुबारे जैसे फुले पेट वाले पति को कोई भी कन्या घास नहीं डालेगी का भरोसा पत्नी के मन में सर्वदा बना रहता है। हाँ, एकाध प्रतिशत कोई चंट या मक्कार लड़की पैसों के चक्कर में तोंदुल पति पर डोरे डालने की कोशिश करती भी है तो आसानी से पत्नी बेलन से या गलियों के बौछार से उसका छीछालेदर कर सकती है। इश्क के चक्कर से बचे रहना, लड़की के चक्कर में पत्नी से लड़ाई नहीं होना, काम पर फोकस बना रहना, हमेशा मनपसंद भोजन करना, कसरत करने या मॉर्निंग वॉक करने में समय बर्बाद नहीं करना, फिजिकल खेल-कूद में व्यर्थ के पैसे खर्च करने से बचा रहना, हमेशा खुश रहना आदि तोंदिल होने के ही तो फायदे हैं।

देखा जाये तो आज दुनिया तोंदुलों के रहमों-करम की वजह से ही चल रही है। सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के संदर्भ में देखेंगे तो इनका भारतीय अर्थव्यवस्था में कम से कम 25-30 प्रतिशत का योगदान जरूर होगा। अस्तु, अब वक्त आ गया है कि हम इन्हें हिकारत की नजरों से देखना बंद करें और तोंदुल महाराज का सोते-जागते अविरल-अविराम जयकारा लगाएँ।

सचमुच! तोंद की महिमा अपरंपार है।

जयंती

चित्रा माली

नाथुला के नायक हरभजन सिंह

हम कई देवी,देवताओं के मंदिरों के बारे में जानते हैं लेकिन यहां एक सैनिक का मंदिर है जो अपने आप में अनूठा है । यह मंदिर है बाबा हरभजन सिंह का जिनका जन्म 30 अगस्त 1946 को सदराना (अब पाकिस्तान में) गाँव में एक सिख परिवार में हुआ था। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गाँव के स्कूल में पूरी की और फिर मार्च 1965 में पंजाब के पट्टी में डीएवी हाई स्कूल से मैट्रिक किया। वे अमृतसर में एक सैनिक के रूप में भर्ती हुए और पंजाब रेजिमेंट (भारत) में शामिल हो गए । 4 अक्टूबर 1968 को खच्चरों के क़ाफिले को ले जाते समय नाथुला पास के समीप उनका पैर फिसल गया और वे घाटी में गिर गए जिससे महज 22 वर्ष की उम्र में ही उनकी मृत्यु हो गई । तीन दिनों तक नहीं मिलने के कारण सेना ने उन्हें भगोड़ा घोषित कर दिया था । फिर चौथे दिन वे अपने दोस्त के सपने में आए और अपने शव का पता बताया जो ढूंढने पर वहीं मिला। हरभजन सिंह के बारे में माना जाता है कि वे शहीद होकर भी आज भी देश की सेवा कर रहे हैं।

भारत में हिमालय की पहाड़ियों के बीच बसे सिक्किम का विलय 16 मई 1975 को हुआ था । इसके पूर्व सिक्किम पर विदेशी मामलों,राजनय,रक्षा और संचार के संबंध में भारत का नियंत्रण था, लेकिन अन्य मसलों में सिक्किम प्रशासनिक रूप से एक स्वायत्त राज्य था जिस पर उसके शासक चोग्याल का शासन था। भारत में पूर्ण विलय के बाद से सिक्किम की राजनीति में क्षेत्रीय दलों का वर्चस्व रहा है। उत्तर पूर्व के अन्य राज्यों की अपेक्षा सिक्किम में शांति और व्यवस्था कायम रही है और राज्य का विकास भी हुआ है। सिक्किम पर्यटकों की पसंदीदा जगहों में से एक है। सिक्किम की राजधानी गंगटोक है । इसके पश्चिम में नेपाल,उत्तर पूर्व में चीन का स्वायत्तशासी प्रदेश तिब्बत,दक्षिण पूर्व में भूटान और दक्षिण में बंगाल स्थित है। सिक्किम का भौगोलिक क्षेत्रफल 7096 वर्ग किलोमीटर है और इस लिहाज से यह भारत का सत्ताईसवाँ बड़ा राज्य है। जनसंख्या के लिहाज से यह एक छोटा राज्य है । ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से सिक्किम नेपाल और तिब्बत के ज्यादा नजदीक है। सिक्किम की आय का एक बहुत बड़ा हिस्सा पर्यटकों से आता है। सिक्किम में कई पर्यटन स्थल है जिसमें से एक नाथुला दर्रा हिमालय का एक पहाड़ी दर्रा है जो भारत के सिक्किम राज्य और दक्षिण तिब्बत में चुम्बी घाटी को जोड़ता है। यह 14 हजार 200 फीट की ऊंचाई पर है। भारत और चीन के बीच 1962 में हुए युद्ध के बाद इसे बंद कर दिया गया था। जिसे वापस 5 जुलाई 2006 को व्यापार के लिए खोल दिया गया है। बीसवीं सदी की शुरुआत में भारत और चीन के बीच होने वाले व्यापार का 80 प्रतिशत हिस्सा नाथू ला दर्रे के ज़रिए ही होता था। यह दर्रा प्राचीन रेशम मार्ग की एक शाखा का भी हिस्सा रहा है । 'ला' शब्द तिब्बती भाषा में 'दर्रे' का अर्थ रखता है । सिक्किम की राजधानी गंगटोक से यह तकरीबन 54 किलोमीटर (177,000 फीट) पूरब में स्थित है । केवल भारतीय नागरिक ही यहां जा सकते हैं और इसके लिए भी उन्हें गंगटोक से पारपत्र (पास) बनवाना होता है। नाथूला दर्रा, चीन और भारत के बीच आपसी समझौतों द्वारा स्थापित तीन खुले व्यापार की चौकियों में से एक है ।

हम कई देवी,देवताओं के मंदिरों के बारे में जानते है लेकिन यहां एक सैनिक का मंदिर है जो अपने आप में अनूठा है । यह मंदिर है बाबा हरभजन सिंह का जिनका जन्म 30 अगस्त 1946 को सदराना (अब पाकिस्तान में) गाँव में एक सिख परिवार में हुआ था। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गाँव के स्कूल में पूरी की और फिर मार्च 1965 में पंजाब के पट्टी में डीएवी हाई स्कूल से मैट्रिक किया। वे अमृतसर में एक सैनिक के रूप में भर्ती हुए और पंजाब रेजिमेंट (भारत) में शामिल हो गए। 4 अक्टूबर 1968 को खच्चरों के क़ाफिले को ले जाते समय नाथुला पास के समीप उनका पैर फिसल गया और वे घाटी में गिर गए जिससे महज 22 वर्ष की उम्र में ही उनकी मृत्यु हो गई। तीन दिनों तक नहीं मिलने के कारण सेना ने उन्हें भगोड़ा घोषित कर दिया था। फिर चौथे दिन वे अपने दोस्त के सपने में आए और अपने शव का पता बताया जो ढूंढने पर वही मिला। हरभजन सिंह के बारे में माना जाता है कि वे शहीद होकर भी आज भी देश की सेवा कर रहे है। चीन की संदिग्ध गतिविधियों के बारे में हरभजन सिंह सैनिकों के सपने में आकर आगाह कर देते हैं। यह बात भी प्रचलित है कि जब भी कोई सैनिक सरहद पर ड्यूटी के दौरान सोता मिलता है तो उसे बाबा तमाचा मारकर सतर्क रहने के लिए कहते है।

भारतीय सेना के जवान उन्हें नायक के रूप में याद करते हैं और उनके सम्मान में उन्होंने मंदिर भी बनाया है। इस मंदिर में प्रत्येक दिन 15 अगस्त और 26 जनवरी के उत्साह को महसूस किया जा सकता है। बाबा की उपाधि के साथ उन्हें कैप्टन की उपाधि भी प्रदान की गई है। बाबा हरभजन सिंह को महावीर चक्र से भी नवाजा गया है। मंदिर के साथ ही उनका बंकर भी बनाया गया है। बाबा हरभजन सिंह के मंदिर में उनकी तस्वीर के साथ उनके आवश्यक समान को भी रखा गया है जिसमें उनकी यूनिफॉर्म और जूते भी है। भारतीय सेना के जवान ही मंदिर की देखभाल करते हैं और हर रोज नियत समय पर बाबा को चाय,नाश्ता और भोजन ग्रहण करवाते हैं। बाबा हरभजन सिंह के जूतों पर हर रोज पोलिश भी की जाती हैं। जूता पोलिश करने के दौरान कई सिपाहियों ने बाबा के जूतों पर मिट्टी और कीचड़ लगने की पुष्टि की है। उनके बिस्तर पर कई बार सिलवटे भी देखी गई है। भारतीय सेना और लोगों का ऐसा मानना है कि आज भी बाबा हरभजन सिंह की यहां सूक्ष्म उपस्थित है और वे देश की सरहद की रक्षा कर रहे है। भारतीय सेना के साथ साथ चीनी सेना भी बाबा हरभजन सिंह के अस्तित्व को स्वीकार करती है। नाथुला में जब भी भारत और चीन के बीच फ्लैग मीटिंग होती है तो चीनी सेना बाबा हरभजन सिंह के लिए अलग से कुर्सी लगाती है।

भारतीय सेना आज भी उनका वेतन उनके घर भेजती है और सैनिकों को जो सुविधाएं प्रदान की जाती है वह उनको भी दी जाती है। प्रत्येक वर्ष 11 सितंबर को एक जीप उनके निजी समान के साथ निकटतम रेलवे स्टेशन न्यू जलपाईगुड़ी के लिए रवाना होती है और बाकी का सफर ट्रेन से तय किया जाता है। ट्रेन में बाबा के लिए एक विशेष आरक्षण किया जाता है जिसमें प्रत्येक वर्ष उनके गृहनगर की यात्रा के लिए एक सीट खाली छोड़ दी जाती है। बाबा का सामान उनके गृहनगर दो सैनिक ले जाते हैं और उसी प्रक्रिया के तहत बाबा को वापस नाथुला लाया जाता है। भारतीय सेना के साथ साथ आम नागरिक भी बाबा हरभजन सिंह का सम्मान करती है और शीश नवाती है। बाबा के मंदिर में सभी की मनोकामनाएं पूर्ण होती है ऐसी मान्यता प्रचलित है। इसलिए कई पर्यटक बाबा के मंदिर में पानी की एक बोतल रखते हैं और जाते वक्त अपने साथ लेकर जाते हैं। यह मान्यता है कि इस जल को बीमार व्यक्ति को 21 दिन तक देने से असाध्य रोग भी समाप्त हो जाता है लेकिन इसका सेवन करने वाले के साथ पूरे परिवार को 21 दिनों तक मांसाहार और मदिरा के सेवन से दूर रहना होता है।

बाबा के मंदिर में निसंतान दम्पति भी बच्चे की मनोकामना करते हैं और पूर्ण होने पर बच्चे के साथ बाबा के दर्शन करते हैं। बाबा हरभजन सिंह के लिए ऐसी और भी कई मान्यताएं और किवदंतियां मशहूर है। ज्योति कपूर दास ने बाबा हरभजन सिंह के जीवन और विरासत पर आधारित फिल्म 'प्लस-माईनस' का निर्देशन किया है। जिसे 64वें फिल्म फेयर पुरस्कार में सर्वश्रेष्ठ लघु फिल्म के पुरस्कार से भी नवाजा गया है। फिल्म में भुवन बामओ और दिव्या दत्ता ने अभिनय किया है।

इतिहास

ब्रजेश कानूनगो

लेखक साहित्यकार हैं।

देखा पढ़ा-मंगोलिया का गोबी रेगिस्तान

पिछले दिनों नोमेडिक इंडियन ब्लॉग के दीपांशु और नोमेडिक शुभम के शुभम जैसे घुम्मकड़ों के साथ हमने यूट्यूब वीडियो के माध्यम से विश्व के पांचवे सबसे बड़े रेगिस्तान में से एक गोबी रेगिस्तान की रोमांचक मानस यात्रा की।

गोबी रेगिस्तान है कहां? दरअसल यह विशाल गोबी रेगिस्तान पूर्व और मध्य एशिया में लैंडलॉक देश मंगोलिया में स्थित है। उत्तर में रूस,दक्षिण पूर्व और पश्चिम में चीन से घिरा है। देश की कुल जनसंख्या के 38 प्रतिशत लोग राजधानी उलान बटोर में निवास करते हैं। पूर्व दिशा में मात्र 38 किलोमीटर दूर खूबसूरत कजाकिस्तान स्थित है।

ऐतिहासिक योद्धा चंगेज खान का नाम तो आपने जरूर सुना होगा। मंगोल साम्राज्य के विस्तार में उसकी बड़ी जबरदस्त भूमिका रही है। घुमंतू जाति के इस व्यक्ति ने अन्य घुमंतू जातियों को एकजुट करके सत्ता हासिल की थी। अपनी अद्भुत संगठन क्षमता, असीम शक्ति और बर्बरता के लिए विख्यात, कुख्यात चंगेज अपने बड़े साम्राज्य विस्तार के लिए जाना जाता है। मंगोल साम्राज्य ने मध्य एशिया और चीन के महत्वपूर्ण हिस्सों पर उसके नेतृत्व में कब्जा कर लिया था। सन 1221 से 1327 के दौरान मंगोल साम्राज्य ने भारतीय उपमहाद्वीप पर भी आक्रमण किए थे। इल्तुतमिश के शासनकाल के दौरान चंगेज खान के अधीन मंगोल साम्राज्य ने भारत पर बहुत से आक्रमण किए थे।

ऐसा नहीं है कि चंगेज खान ने सिर्फ बर्बर काम ही किए,बहुत से अच्छे काम भी उसके शासन में होते रहे। लेखन पठन के लिए विशेष उईधूर लिपि को अपनाया उसको विकास किया। धार्मिक सहिष्णुता को प्रोत्साहित करने के प्रयास किए। जो विश्व प्रसिद्ध सिल्क रूट था, जो एक ऐतिहासिक व्यापार मार्ग रहा है, जिसका उपयोग दूसरी शताब्दी से 14 वीं शताब्दी तक मुख्यरूप से हुआ करता था, एशिया से लेकर भूमध्य सागर तक इसका विस्तार था, तथा चीन, भारत, फारस,अरब, ग्रीस और इटली से होकर गुजरता था, उसे समय इसमें ज्यादातर रेशम का व्यापार होता था इसलिए उसे सिल्क मार्ग कहा गया था तो इस सिल्क मार्ग को राजनीतिक तौर पर संचार व व्यापार हेतु एकरूपता और स्वीकार्यता देने में भी चंगेज खान को याद किया जाता है। उसने यह एक बड़ा अच्छा काम किया था।

सालहवी सत्रहवीं शताब्दी में मंगोलिया तिब्बतीय बौद्ध धर्म के प्रभाव में आया। सन 1911 में किंग राजवंश के पतन के साथ मंगोलिया ने अपने को स्वतंत्र देश घोषित किया और 1945 में लंबे इंतजार के बाद इसे संपूर्ण अंतरराष्ट्रीय मान्यता मिल गई। अब यह एक संसदीय गणराज्य है।

बहरहाल, जहां तक हमारी गोबी रेगिस्तान की यात्रा का सवाल है, जब हमने अपने प्रिय ब्लॉगर्स के माध्यम से मानस यात्रा के दौरान महसूस किया, देखा तो आगे और चीजों को जानने समझने की उत्कंठा और बढ़ती गई।

मंगोलिया के बारे में एक बात और प्रसिद्ध है कि यहां की संस्कृति भारत के बहुत करीब है। भारत से कई बौद्ध धर्माचार्य और यात्री छठवीं शताब्दी से ही मंगोलिया का भ्रमण करते रहे। यहां संस्कृत का इतना प्रभाव है कि यहां का राष्ट्रीय ध्वज 'स्वयंभू' कहलाता है स्थानीय भाषा में इसको सोयुंब कहते हैं। यहां आयुर्वेद का प्रचलन है। महीनो के नाम भी और दिनों के नाम भी भारतीय संस्कृति से निकलकर आते हैं। सोमवार को सोमिया,रविवार को आदित्यवार, मंगलवार के लिए संस्कृत में अंगारक शब्द है, बुधवार को बुद्ध, ब्रीहसपत गुरुवार के लिए, शुक्र शुक्रवार के लिए, साचिर शनिवार के लिए। यहां के बौद्ध विहारों में अनेक भारतीय पुस्तकों, संस्कृत के ग्रंथों, श्लोक और मंत्रों को खूब देखा, पढ़ा व सुना जा सकता है। भारतीय महापुरुषों के प्रति यहां बहुत आदर और सम्मान है।

गोबी रेगिस्तान मंगोलिया में तो स्थित है लेकिन इसका विस्तार चीन और मंगोलिया दोनों तक फैला हुआ है। यह एक ऐसा रेगिस्तान है जिसकी गिनती ठंडे रेगिस्तानों में की जाती है। यहां का तापमान शून्य से नीचे माइनस 40 डिग्री तक गिर जाता है। मंगोलियन भाषा में गोबी का अर्थ जल रहित स्थान होता है। यहां जल बहुत कम है वर्षा केवल बारिश के कुछ दिनों में ही होती है। 50 से 100 मिली मीटर तक ही बारिश हो पाती है। नदी नाले केवल वर्षा ऋतु में ही थोड़े बहुत पानी भरे दिखाई देते हैं। अधिकांशतः गोबी डेजर्ट रेत की तुलना में चट्टानों से अधिक बना है। यद्यपि हमने जो मानस यात्रा की वह रेतीले गोबी रेगिस्तान की ही दीपांशु और शुभम ब्लॉगर मित्रों के साथ की।

कहा जाता है इस पांचवे सबसे विशाल रेगिस्तान में पहले कभी समृद्धशाली भारतीयों की बस्ती हुआ करती थी। यह डेजर्ट यह इतना बड़ा है कि इसको को तीन भागों में विभक्त करके देखा जाता है, तकला माकन, अलशान और ऑर्डिश रेगिस्तान। यहां की आबादी बहुत विरल है। उत्तर और दक्षिण के घास के मैदानों में कुछ जनजातियां निवास करती हैं। जिस क्षेत्र में जहां पानी है, वहां बकरियां और अन्य पशु पाले जाते हैं। थोड़ी बहुत खेती भी होती है। लेकिन यहां बेकेटेरियन ऊंट (दो कूबड़ वाले) होते हैं, हमारे भारत में जो उंट होते हैं उनसे थोड़ा अलग है इनके दो कूबड़ निकले होते हैं। कुछ जंगली गधे, विशेष तरह के भालू हालांकि अब यह लुप्त प्रायः हो गए हैं, इस रेगिस्तान में पाए जाते हैं। यहां पत्ती विहीन घास ही सामान्यतः यहां दिखाई देती है जिससे मिट्टी का थोड़ा बहुत क्षरण रुक पाता है।

दीपांशु और शुभम ने इस रेतीले रेगिस्तान की रोमांचक पैदल यात्रा की तो उन्होंने बहुत संघर्ष किया। तेज हवाओं रेतीले तूफानों से बचते बचाते विडियो बनाते हुए उन्होंने यह यात्रा की। बहुत संघर्ष किया। पानी की बोतले उनकी समाप्त हो गई तो जैसे खुद उनके शरीर रेगिस्तान में बदलते जा रहे थे। मरणासन्न से हो गए थे। रात को ही उनको अंधेरे में कहीं कुत्तों के भौंकने की आवाज भी सुनाई देती है तो वे आश्रय की तलाश में उधर जाते हैं। एक खानाबदोश के घर में उनको थोड़ा सा स्थान मिल जाता है, किसी तरह वे रात बिताते हैं। यह उनकी बहुत अद्भुत यात्रा थी। उनके लोकप्रिय और दर्शनीय वीडियो की सूची में यह सीरीज बहुत याद की जाती रहेगी। इसे बार बार देखा जाता रहेगा।

प्रथा

जगत सिंह, अजमेर

बाल विवाह की बुराई से मुक्त नहीं हुआ है गांव

हमारे देश में सामाजिक स्तर पर कुछ बुराईयां और कुरुतियां ऐसी हैं जिसने गहराई से समाज में अपनी जड़ें जमा रखी हैं. यह न केवल वर्तमान बल्कि भविष्य में भी विकास की प्रक्रियाओं को भी प्रभावित करता है. इनमें सबसे प्रमुख बाल विवाह है. आज भी देश के कई ऐसे राज्य हैं जहां ग्रामीण स्तर पर बाल विवाह जैसी बुराई देखने और पढ़ने को मिल जाती है. इसका सबसे नकारात्मक प्रभाव किशोरियों के जीवन पर पड़ता है. इससे न केवल उनका शैक्षणिक बल्कि शारीरिक और मानसिक विकास भी रुक जाता है. सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े कुछ समुदायों में अभी भी बाल विवाह जैसी सामाजिक बुराई देखने को मिल जाती है. इनमें राजस्थान के अजमेर जिला स्थित नाचनबाड़ी गांव में आबाद कालबेलिया समुदाय भी है. जहां कम उम्र में ही लड़कियों की शादी की परंपरा अभी भी पूरी तरह से समाप्त नहीं हुई है.

इस संबंध में समुदाय की 22 वर्षीय कंचन (नाम परिवर्तित) कहती हैं कि '14 साल की उम्र में मेरी शादी हो गई थी. 16 वर्ष की उम्र में मां बन गई. घर और ससुराल दोनों ही आर्थिक रूप से कमज़ोर था. इसलिए कभी पौष्टिक आहार उपलब्ध नहीं हो पाया. इस उम्र तक तीन बच्चे हो चुके हैं.' वह कहती है कि हर समय शरीर में कमज़ोरी का एहसास होता है. लेकिन इसी हालत में घर का सारा काम करना होता है और बच्चों की देखभाल भी करनी होती है. कंचन कहती है कि उसके पति स्थानीय मार्बल फैक्ट्री में पत्थर कटिंग का काम करते हैं. उन्हें मिलने वाले पैसों से घर में राशन का पूरा इंतेज़ाम नहीं हो पाता है. हालांकि आंगनबाड़ी केंद्र से मिलने वाले आहार और आशा वर्कर द्वारा सेहत की नियमित जांच से गर्भावस्था के दौरान उसे काफी लाभ हुआ था. वहीं 28 वर्षीय लक्ष्मी बताती हैं कि उसकी भी 13 वर्ष की उम्र में शादी कर दी गई थी. उसके पांच बच्चे हैं और सभी कुपोषण के शिकार हैं. वह कहती है कि कम उम्र में शादी, पोषणयुक्त आहार की कमी और घर के सारे काम करने की वजह से वह अक्सर बीमार रहती है. उसे कभी भी स्कूल जाने का अवसर नहीं मिला.

इसी समुदाय की एक 70 वर्षीय बुजुर्ग लक्ष्मी का कहना है कि कालबेलिया समाज में लड़कियों की कम उम्र में शादी हो जाना आम बात है. मेरी शादी 13 साल की उम्र में हो गई थी. मैं न केवल शादी शब्द से अनजान थी बल्कि इसका अर्थ भी नहीं जानती थी. जिस उम्र में लड़कियां ज़िम्मेदारी से मुक्त केवल पढ़ाई और खेलती हैं उस उम्र में मुझे बहू के नाम पर घर के सारे कामों की ज़िम्मेदारियां सौंप दी गई थीं. 16 वर्ष की उम्र में मैं गर्भवती भी हो गई थी. इस दौरान भी मेरे उपर पूरे घर की जिम्मेदारी होती थी. घर का सब काम मुझे करना होता था. पौष्टिक खाना उपलब्ध नहीं होता था. जिस वजह से मेरा गर्भपात हो गया था. वह कहती हैं कि कालबेलिया समुदाय में कोई भी परिवार आर्थिक रूप से सशक्त नहीं है. ऐसे में गर्भवती महिला के लिए पौष्टिक खाना उपलब्ध होना संभव नहीं है. अधिकतर परिवार में पुरुष दैनिक

मज़दूरी करते हैं जिससे बहुत कम आमदनी होती है. कई बार काम नहीं मिलने के कारण घर में चूल्हा भी नहीं जल पाता है. अक्सर इस समुदाय की महिलाएं त्योहारों के दौरान फेरी लगाने (भिक्षा मांगने) शहर चले जाती हैं. जिससे कुछ दिनों के लिए उन्हें खाने पीने का सामान मिल जाता है.

नाचनबाड़ी अजमेर शहर से पांच किमी दूर घूघरा पंचायत में स्थित है. लगभग 500 की आबादी वाले इस गांव में कालबेलिया समुदाय की बहुलता है. आर्थिक और सामाजिक रूप से यह समुदाय अभी भी विकास नहीं कर पाया है. सरकार द्वारा इस समुदाय को अनुसूचित जनजाति समुदाय के रूप में मान्यता मिली हुई है।

इस संबंध में गांव में संचालित आंगनबाड़ी केंद्र की सेविका इंदिरा बाई कहती हैं कि कालबेलिया समुदाय में बाल विवाह होने के बहुत सारे कारण हैं. एक ओर जहां समुदाय में अभी भी जागरूकता की कमी देखी जा सकती है वहीं दूसरी ओर गांव में हाई स्कूल की कमी भी एक कारण है। नाचनबाड़ी में केवल एक प्राथमिक विद्यालय है, जहां पांचवीं तक पढ़ाई होती है. इसके आगे दो किमी दूर घूघरा जाना पड़ता है. जहां अधिकतर अभिभावक लड़कियों को नहीं भेजते हैं. इसलिए गांव में पांचवीं से आगे लड़कियों की पढ़ाई छुड़वा दी जाती है. यदि गांव में ही दसवीं तक स्कूल बन जाए तो न केवल बालिका शिक्षा का ग्राफ बढ़ेगा बल्कि शिक्षा की इस जागरूकता के कारण बाल विवाह भी रुक सकता है. इंदिरा बाई कहती हैं कि वह पिछले 12 वर्षों से इस आंगनबाड़ी केंद्र से जुड़ी हुई हैं. ऐसे में गांव के हर घर से वह परिवार की तरह जुड़ी हुई हैं. वह अपने स्तर पर बाल विवाह के खिलाफ लोगों को जागरूक करने का लगातार प्रयास भी करती रहती हैं.

यूनिसेफ इंडिया की वेबसाइट के अनुसार अनुमानित तौर पर भारत में प्रत्येक वर्ष 18 साल से कम उम्र में करीब 15 लाख लड़कियों की शादी होती है जिसके कारण भारत में दुनिया की सबसे अधिक बाल वधुओं की संख्या है, जो विश्व की कुल संख्या का तीसरा भाग है. 15 से 19 साल की उम्र की लगभग 16 प्रतिशत लड़कियां शादीशुदा हैं. हालांकि एक अच्छी बात यह है कि साल 2005-06 से 2015-16 के दौरान 18 साल से पहले शादी करने वाली लड़कियों की संख्या 47 प्रतिशत से घटकर 27 प्रतिशत रह गई है, पर यह अभी भी अत्याधिक है. यह न केवल चिंता का विषय है बल्कि लैंगिक असमानता और महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव का ज्वलंत उदाहरण है. वेबसाइट के अनुसार बाल विवाह बच्चों के अधिकारों का अतिक्रमण करता है जिससे उनपर हिंसा तथा यौन शोषण का खतरा बना रहता है।

हालांकि बाल विवाह लड़कियों और लड़कों दोनों पर असर डालता है, लेकिन इसका प्रभाव सबसे अधिक लड़कियों के जीवन पर पड़ता है. इससे उनके विकास के अवसर छिन जाते हैं. ऐसे में ज़रूरी है कि इस प्रकार की एक प्रभावी नीति बनाई जाए जिससे लड़कियों को शिक्षा के अवसर उपलब्ध हो सके और बाल विवाह जैसे दंश से उन्हें मुक्ति मिल सके. लेकिन किसी भी नीति को बनाने से पहले उस समुदाय के सामाजिक ढांचों और कारणों को समझना पहली प्राथमिकता होनी चाहिए. **(चरखा फीचर)**

चार लोगों पर आदिवासियों से धर्म परिवर्तन कराने का आरोप

थाना पहुंचा मामला, हिंदू संगठनों में रोष

मुलताई। ग्राम चिचंड़ा में बाहर से आए चार क्रिश्चियन धर्म के लोग चिचंड़ा के आदिवासियों को ग्राम में बुलाकर भंडारा करा रहे थे जिसकी सूचना हिंदू संगठनों को लगी तो लोग जमा हुए और इसका विरोध करने लगे ।ग्राम सरपंच और हिंदू संगठनों से जुड़े लोगों का आरोप था कि बाहर से आए अनजान लोग इस भंडारे के आड़ में भोले भाले आदिवासियों को प्रलोभन देकर उनका धर्म परिवर्तन करने का प्रयास कर रहे थे। ग्राम में इस बात को लेकर विवाद हुआ तो पुलिस भी घटना स्थल पर पहुंची और बाहर से आए क्रिश्चियन ,इस भंडारे में शामिल होने जा रही आदिवासी महिलाओं और इसका विरोध करने वाले हिंदू संगठन के लोगों को मुलताई थाना ले आए जहां एफआईआर कराई जा रही है। इस घटना की जानकारी जब नगर के हिंदू संगठनों को लगी तो नगर पालिका अध्यक्ष वर्षा गडेकर, भाजपा मंडल अध्यक्ष गणेश साहू, बजरंग दल और विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ता, पार्षद थाना मुलताई पहुंचे और पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों से इस संबंध में चर्चा की। चर्चा के उपरांत नगर पालिका अध्यक्ष वर्षा गडेकर बताया कि कुछ लोग द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में भोले भाले आदिवासियों को प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन कराए जाने की जानकारी मिली थी इन अनजान क्रिश्चियन लोगों के संपर्क में आए चिचंडा ग्राम की आदिवासी महिलाओं से हमने चर्चा की उन्हें समझाइस दी उन लोगों का कहना है कि हम धर्म परिवर्तन नहीं कर रहे हैं हम बड़े देव को मानते हैं हम इन लोगों के द्वारा भंडारे में जा रहे थे नगर पालिका अध्यक्ष ने कहा कि संबंध में आरोपियों के खिलाफ एफआईआर की कार्रवाई की जा रही है। भाजपा मंडल अध्यक्ष गणेश साहू ने इस संबंध में बताया कि भोले भाले आदिवासियों को गुमराह करने और धर्म परिवर्तन करने के षड्यंत्र तेज होते जा रहे है और इसके लिए आदिवासी क्षेत्रों में सगन जन जागरण अभियान चलाने की आवश्यकता है इस मामले में हम एफआईआर कर रहे हैं साथ ही ऐसे अनजान लोगों की गतिविधियों पर भी संगठन द्वारा नजर रखी जाएगी। ग्राम चिचंडा के सरपंच अंकित कालभोर बताते हैं कि यह अनजान लोग ग्रामीण क्षेत्रों में आकर भोले भाले आदिवासी लोगों को गुमराह कर रहे थे धर्म परिवर्तन कराने के प्रयाश कर रहे थे यह चार क्रिश्चियन जो की अनजान लोग है गांव में भंडारा करा रहे थे जिन्हें मुलताई थाना लाया गया है।

भाजपा में प्रत्याशी ने गाजे बाजे से किया नामांकन जमा

कांग्रेस ने मनोज और प्रफुल्ल के फार्म जमा कराए

बैतूल। गांधीवार्ड के कांग्रेस पार्षद राजकुमार यादव के निधन के बाद रिक्त हुई सीट पर 11 सितंबर को चुनाव होना है। नगरपालिका की इस एक मात्र सीट पर चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशियों की संख्या दो अंकों में होने की पूरी संभावना नजर आ रही है। क्योंकि नाम निर्देशन पत्र प्राप्त करने की बुधवार अंतिम तिथि निर्वाचन कार्यालय ने तय किया है।

भाजपा ने गत चुनाव में वार्ड प्रत्याशी रहे वरूण धोटे पर दोबारा दाव खेला है। उन्होंने गाजे-बाजे से वरिष्ठ नेताओं की मौजूदगी में नामांकन दाखिल कर दिया है। दूसरी ओर कांग्रेस से सभी उम्मीदवार का नाम तय नहीं हुआ है, लेकिन अंतिम दिन दोपहर 3 बजे के पहले मनोज शर्मा और प्रफुल्ल सोनटके के फार्म दाखिल कराए जा रहे हैं। कांग्रेस की रणनीति है कि नामांकन वापसी के अंतिम दिन 30 अगस्त को किसी एक को बी फार्म दिया जाएगा।

कांग्रेस से मनोज शर्मा या फिर प्रफुल्ल सोनटके हो सकते हैं फाइनल-शहर के गांधीवार्ड में होने वाले उप चुनाव में जिस तरह से चुनाव मैदान में प्रत्याशियों की संख्या बढ़ रही है, उससे यह तो साफ है कि गांधी वार्ड में होने वाला पार्षद का चुनाव बेहद रोचक होगा, क्योंकि कांग्रेस और भाजपा के उम्मीदवारों के साथ साथ यहां निर्दलीय प्रत्याशी भी चुनावी मैदान में उतरने का फूल मूड बना चुके हैं। बताया जा रहा है कि टिकिट की दौड़ में भाजपा के वरुण धोटे का नाम जहां सबसे आगे चल रहा है तो वहीं कांग्रेस से मनोज शर्मा या फिर प्रफुल्ल सोनटके के नाम पर ही अंतिम मोहर लगा रही है। दोनों ही युवा नेता जिला कांग्रेस अध्यक्ष हेमंत वागद्रे के करीबी है।

भाजपा प्रत्याशी ने गाजे बाजे से भरा नामांकन-नामांकन भरने की अंतिम तिथि के दिन भाजपा ने गत चुनाव में मामूली मतों से पराजित वरूण धोटे से दोबारा दाव खेला है। उन्होंने दोपहर में गांधी वार्ड से वरिष्ठ नेताओं की मौजूदगी में एसडीएम राजीव रंजन कहार के पास नामांकन दाखिल किया। रास्ते भर पार्टी कार्यकर्ता भाजपा जिंदाबाद के नारे लगाते यहां पर पहुंचे। नामांकन दाखिल करते समय नपा अध्यक्ष पार्वती बाई बारस्कर, उपाध्यक्ष महेश राठौर, पूर्व नपा अध्यक्ष और पार्षद आनंद प्रजापति, भाजपा कोठीबाजार मंडल अध्यक्ष विक्रम वैध, गंज मंडल अध्यक्ष विकास मिश्रा, वरिष्ठ भाजपा नेता सुनील शर्मा, पार्षद रघुनाथ लोखंडे, भाजपा नेता कैलाश धोटे, रक्कू शर्मा, राहुल लुहाड़िया, कुणाल शर्मा, सावन्या शेषकर, रवि हिरानी, मोनू सोनी समेत पार्टी के कई कार्यकर्ता मौजूद रहे।

आठनेर में भाजपा-कांग्रेस प्रत्याशियों ने भरे नामांकन-इधर आठनेर हमारे संवाददाता निखिल सोनी ने बताया कि वार्ड क्रमांक 10 भवानी वार्ड के पार्षद पद के उप चुनाव हेतु नामांकन पत्र दाखिल करने की अंतिम दिन कांग्रेस की ओर से किरण सावरकर ने नामांकन दाखिल किया है।

अंतिम समय में भाजपा ने भी युवा नेता मनोज तुमाने को अपना प्रत्याशी घोषित कर दिया है। वे भी अपना नामांकन दाखिल करने वाले हैं। इसके पहले श्रीमती सावरकर के नामांकन दाखिल करते समय डॉ. ज्ञानदेव माथनकर, अमित जायसवाल, जानी पठान, अनिल पारसे, रियाज काजी, जित्तू लेलकर, शेख कलीम, शाखरूख काजी, राहत अली, ममता बसंतपुरे आदि मौजूद थे। हालांकि कांग्रेस प्रत्याशी का बी फार्म अभी नहीं आया है।

पुलिस ने 3 साल से फरार 10 वारंटियों को किया गिरफ्तार

बैतूल। आठनेर थाना पुलिस ने कॉम्बिंग गश्त के दौरान तीन सालों से फरार 10 स्थायी वारंटियों को गिरफ्तार किया है। ये आरोपी अदालतों में चल रहे केसों में पेशी पर हाजिर नहीं हो रहे थे। टीआई आठनेर बबीता धुर्वे ने बताया कि पुलिस मुख्यालय से कॉम्बिंग गश्त के लिए निर्देश मिले थे। जिस पर थाना स्टाफ के साथ स्थाई वारंटियों की तलाश करने पर ऐसे दस वारंटी मिले जो तीन सालों से फरार चल रहे थे। उन्हें गिरफ्तार कर कोर्ट पेश किया जाएगा। ये आरोपी अदालतों के सामने भी पेश नहीं हो रहे थे। (1) एकनाथ पिता मधु निवासी रगडगांव (2) अमरचद पिता जियालाल निवासी जामापाटी (3) राजेन्द्र पिता सुखचंद निवासी जामापाटी (4) मनोहर पिता सुन्दर बड़ोदे निवासी जामापाटी (5) संजय पिता देवीदास निवासी बाकुड (6) रविन्द्र झाडे निवासी भोपाल (7) कोटू उर्फ प्रवीण पिता नामदेव घोटे निवासी मांडवी (8) कमलनाथ पिता मुखचंद निवासी सूकी (9) कृष्णा पिता देलेराम निवासी ऐनखेड़ी (10) रमेश पिता रामू निवासी चारसी को गिरफ्तार किया है।

देर रात तक काउंसलिंग होने से अतिशेष शिक्षक परेशान, शिक्षा विभाग की लापरवाही आई सामने

बैतूल। जिला मुख्यालय पर जिले के सभी अतिशेष शिक्षकों को काउंसलिंग के लिए बुला लिया गया। अव्यवस्थाओं के कारण शिक्षक

परेशान होते रहे है। इसमें शिक्षा विभाग की गंभीर लापरवाही सामने आई है। प्राप्त जानकारी के मुताबिक काउंसलिंग के लिए जिले भर से अतिशेष शिक्षकों को मुख्यालय बुलाया था। सुबह 9 बजे काउंसलिंग शुरू होने की लेकिन दोपहर 2 बजे के बाद काउंसलिंग शुरू नहीं हो पाई। शिक्षक कतार में खड़े रहे। दोपहर बाद काउंसलिंग शुरू हुई देर रात तक काउंसलिंग होते रही। काउंसलिंग स्थल पर लाइट तक की व्यवस्था नहीं थी रात के अंधेरे में शिक्षक मोबाइल टॉर्च लेकर खड़े रहे।

पीडीएस के चावल से भरा ट्रक पकड़ाया

बैतूल। गरीबों को बंटने वाला पीडीएस का चावल से भरा एक ट्रक पुलिस ने पकड़ा है। खादय विभाग ने ट्रक में भरे 250 क्विंटल चावल को जब्त कर जांच शुरू कर दी है। ट्रक को गंज पुलिस थाने में खड़ा किया गया है। बताया जा रहा है कि यह चावल बैतूल से रायपुर जा रहा था जिसकी सूचना

पुलिस को दी गई थी। पुलिस ने घेराबंदी कर इस ट्रक को पकड़ा और अपने कब्जे में ले लिया।जिला खाद्य अधिकारी केके टेकाम ने बताया कि पुलिस से सूचना मिली थी कि चावल से भरा ट्रक पकड़ा गया है जिसको लेकर खाद्य विभाग की टीम ने जांच शुरू की और चावल का सैम्पल लिया। इस सैम्पल में एफआर के चावल जो कि राशन दुकानों पर गरीबों को बांटा जाता है, वो मिला है। शुरूआत में ट्रक के बाहरी हिस्से से सैम्पल लिया गया है, अभी ट्रक में भरे हुए बाकी चावल की जांच की जाएगी, जिससे पता चलेगा कि पूरा चावल पीडीएस का है या उससे कम है। श्री टेकाम ने बताया कि जांच के दौरान व्यापारी कमलेश राठौर और मंडी के अधिकारियों को भी बुलाया गया था। मंडी में इस चावल के कोई दस्तावेज नहीं मिले हैं। व्यापारी ने बताया कि उसकी दुकान सोनाघाटी पर है और वहां पर लोग चावल बेचने आते हैं उनसे खरीदा गया है।

टेरम गांव में अघोषित कर्फ्यू, गांव में उल्टी-दस्त से दो की मौत

बैतूल। आदिवासी बहुल भीमपुर ब्लॉक के टेरम गांव में उल्टी दस्त की बीमारी से एक युवक और एक महिला की मौत के बाद दहशत का माहौल है चार ढाने के इस गांव में 150 से ज्यादा घर है वही 1500 से ज्यादा की आबादी है ।ग्रामीण उल्टी दस्त की बीमारी को भी छुआछूत जैसी बीमारी मान रहे है ।बाकी तीन ढाने के ग्रामीण बीमारी से पीड़ित ढाने में आ जा भी नही रहे है ।मानो वहा ग्रामीणों ने अघोषित कर्फ्यू लगा रखा हैं ।बैतूल जिले के भीमपुर ब्लॉक के टेरम गांव में उल्टी दस्त के प्रकोप से 50 से ज्यादा ग्रामीण बीमार है। पिछले आठ दिन से यहां फैली बीमारी के बाद स्वास्थ्य प्रशासन ने बैतूल और भीमपुर में मरीजों को भर्ती कराया है। आशंका है की फूड पॉइजनिंग से लगातार ग्रामीणों की त बताया जा रहा है कि रक्षाबंधन से यहां ग्रामीण एक-एक कर बीमार पड़ रहे हैं। उल्टी दस्त की शिकायत के बाद आज करीब 30 ग्रामीण भीमपुर के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराए गए है, जबकि एक दर्जन से ज्यादा ग्रामीणों को जिला अस्पताल लाकर भर्ती कराया गया है। ग्रामीणों के मुताबिक पूरा गांव ही इस समस्या से प्रभावित है। ये पानी से हो रहा है या खाने से वे कुछ भी नहीं बता सकते। वे ट्यूबवेल का पानी इस्तेमाल करते हैं। इधर सीएमएचओ डॉक्टर रविकांत उईके ने आशंका जताई है कि गांव में एक सप्ताह से हो रही यह समस्या भोजन की वजह से हो सकती है। अक्सर ग्रामीण त्योहारों पर भोजन बनाकर रखते है जिसे कई दिनों तक खाया जाता है। इसी के दूषित होने से यह समस्या हो सकती है। अगर पेयजल से यह होता तो गांव के अन्य लोग भी बीमार होने थे, पॉइजनिंग से हो रहा है। उन्होंने गांव का दौरा किया है। पीएचई के ईई आरएल सेकवार ने भी बताया की गांव के पेयजल स्रोत जांचें गए हैं, पानी पूरी तरह सुरक्षित है। इधर ग्राम पंचायत पीने के लिए पानी टैंकर से पहुंचा रही है जिसमे पानी शुद्ध करने के लिए दवाई डाली जा रही है ग्रामीण इस दवाई युक्त पानी पीने से भी परहेज कर रहे है वे कहते हैं की पानी बास आती है (दवाई की बदबू) ।बीते दो दिनों गांव स्वास्थ्य विभाग का अमला नजर आने लगा है।

जर्जर धारणी प्राथमिक शाला के छत का प्लास्टर गिरा

एक बच्चा घायल, हादसे के बाद जागा विभाग शाला का स्थान बदला

मुलताई। शिक्षा स्तर में सुधार के दावे कितने कारगर है और शिक्षा स्तर में सुधार की जवाब देही जिन अधिकारियों के जुम्मे है वह कितने गंभीर है इसका उदाहरण हाल ही में व क्षेत्र अंतर्गत आने वाले ग्राम धारणी की प्राथमिक शाला है। जहां पर प्राथमिक शाला जर्जर होने के बाद भी क्षतिग्रस्त शाला भवन की छत के नीचे नन्हे नन्हे बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे थे और तभी अचानक छत का प्लास्टर गिर पड़ा जिसमे एक नन्हा बच्चा घायल हो गया। धरनी का यह शाला भवन लंबे समय से जर्जर हो चुका था इसकी जानकारी भी प्राचार्य ने वरिष्ठ अधिकारियों को दे दी थी किंतु उसके बावजूद भी यहां शाला संचालित हो रही थी जब पूरे शाला भवन का छत बच्चों पर जा गिरा तब यह भवन बंद करके धारणी के आंगनवाड़ी भवन में स्कूल संचालित किया जा रहा है।

छत का प्लास्टर गिरने के बाद और स्कूल का एक बालक घायल होने के बाद इस संबध में स्कूल के प्रधान पाठक द्वारा संकुल प्राचार्य को पत्र लिखकर अवगत कराया गया है। हादसे के बाद से बच्चो में डर का माहौल है और पालकों में रोष । ग्राम बताते हैं कि लंबे समय से साल भवन की हालत जर्जर हो रही थी जिसको लेकर आने को बार प्राचार्य को और संबंधित अधिकारियों को अवगत कराया गया किंतु कोई हल नहीं निकला जिस दिन प्लास्टर गिरा उस दिन और भी गंभीर हादसा हो सकता था अभी जबकि पूर्व बर्बाद हो गया है भवन सुधार के प्रयास नहीं हो रहे हैं आंगनवाड़ी में शाला को लगाया जा रहा है ।

इनका कहना

धारणी शाला भावन के संबंध में जानकारी मिली थी हमने इंजीनियर और वरिष्ठ अधिकारियों को सुधार के लिए लिखा है स्कूल को बंद करके आंगनवाड़ी में शाला लगाई जा रही है।

आशीष चंद्र शर्मा बीआरसी मुलताई

छात्र को नशीला पदार्थ सुंघाकर ले जा रहे थे अगुआ करके, ऐसे हुआ फरार

बैतूल। कुछ दिन पहले जिले के आमला में एक छात्र को अगुआ किए जाने के प्रयास का मामला सामने आया था। अब इसी तरह का प्रयास जिले के झल्लार थाना क्षेत्र में सामने आया है। यहां से एक छात्र को अगुआ करके आरोपी देवास तक ले भी गए। खैरियत रही कि छात्र भागने में सफल हो गया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार झल्लार थाना अंर्तगत डोक्या ग्राम पंचायत के मेंढ़ा गांव का निवासी ओम पिता गणेश धोटे 27 अगस्त को प्रतिदिन की तरह स्कूल जाने के लिए विजयग्राम में बस स्टैंड पर खड़ा था। वह मालेगांव स्कूल में पढ़ता है। इसी बीच एक बोलेरो कार आकर उसके पास रुकती है।

उसमें बैठे अनजान लोग उससे यह पूछते हैं कि कहां जा रहे हो। छात्र ने बताया कि मालेगांव स्कूल जाना है। इस पर बोलेरो सवार ने उससे कहा- बैठ जाओ। हम भी वहीं जा रहे हैं। इस पर छात्र ओम धोटे बोलेरो जीप में बैठ गया। उसके बैठते ही जीप में बैठे अज्ञात लोगों ने उसे रुमाल में लगा रखा नशीला पदार्थ सुंघाया। छात्र ओम के मुताबिक इससे वह बेहोश हो गया। इसके बाद बोलेरो आगे चल पड़ी। उसके बाद उसे कुछ होश नहीं। उसे होश आया तब उसने देखा कि देवास के पास एक ढाबे पर सभी खाना खाने रुके हैं। उसने देखा कि वे लोग शराब पीने और खाना खाने में लगे हैं। मौका पाते ही वह वाहन से उतर कर देवास के बस स्टैंड पर गया। छात्र ने वहां

मिले एक व्यक्ति को यह सब बातें बताई। इसके बाद उसी के मोबाइल से घर पर फोन लगाकर खबर दी कि वह देवास बस स्टैंड पर है। ओम का दावा है कि बोलेरो वाहन में पहले से एक और बच्चा था। संभवत उसे भी कहीं से अगुआ करके लाया गया था। उसे वह साथ ले गए। इधर गुम हुए छात्र की तलाश में परिजन भी परेशान थे। उन्हें जैसे ही फोन आया, वे 2 बजे ही कार से देवास गए और ओम को वापस लेकर आए। वह बेहद घबराया हुआ है और ज्यादा कुछ बोल भी नहीं पा रहा है। रिश्तेदार शेखलाल शिवराम ने बताया कि वह लोग जीप से बच्चे को अगुआ कर ले गए थे। ओम ने चालाकी से अपने को बचा लिया। घबराहट के कारण वह ज्यादा जानकारी नहीं दे पा रहा है। परिजनों ने पुलिस की मदद नहीं ली और बच्चे का फोन आते ही रात में ही देवास के लिए रवाना हो गए थे।

महिला बाल विकास विभाग ने स्तनपान जागरूकता संगोष्ठी का किया आयोजन

बैतूल। महिला बाल विकास विभाग और अंतरा की टीम ने ग्रामीण के बॉडी गांव में पिछले हफ्ते, 23 अगस्त तक स्तनपान जागरूकता संगोष्ठी का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत गांव के लोगों, स्वास्थ्य और महिला बाल विकास विभाग के कार्यकर्ताओं, सुपरवाइजरों, स्कूल के शिक्षकों और प्रिंसिपल की उपस्थिति में एक रैली के साथ की गई। इसके बाद, सीडीपीओ नीरजा जी ने स्तनपान और स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों पर चर्चा की। इस सम्मेलन में पुरुषों की सक्रिय भागीदारी भी सराहनीय रही। कार्यक्रम के दौरान, पोस्टर प्रतियोगिता और खेल-खेल में सीखने के सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें महिलाओं और बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। स्तनपान के सही तरीके, पौष्टिक भोजन का महत्व, और स्तनपान से जुड़ी अच्छी आदतों पर प्रकाश डाला गया। सत्र में सभी की समान भागीदारी और सहयोग पर जोर दिया गया, और उन पुरुषों को भी सम्मानित किया गया जिन्होंने अपनी पत्नियों का गर्भावस्था से लेकर प्रसव तक सहयोग किया।

संचालक विस्तार सेवायें द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र का भ्रमण

बैतूल। डॉ. डी.पी. शर्मा, संचालक विस्तार सेवायें, ज.ने.कृ.वि.वि. में सोमवार को जबलपुर द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र, बैतूल का भ्रमण किया गया। सर्वप्रथम डॉ. शर्मा ने रावे छात्राओं द्वारा तैयार की गई मषरूम उत्पादन इकाई का अवलोकन किया और बैतूल बाजार की रावे छात्राओं के संपर्क कृषक मुकुल वर्मा के प्रक्षेत्र का भ्रमण किया जिनके द्वारा लगभग 1 एकड़ प्रक्षेत्र में गेंदा की खेती की जा रही है, उन्हें गेंदा की खेती से संबंधित तकनीकी जानकारी दी और इस कार्य में कृषि विज्ञान केन्द्र की भूमिका की सराहना की। तदोपरांत केन्द्र परिसर में ''एक पेड़ माँ के नाम'' कार्यक्रम अंतर्गत वृक्षारोपण किया और नवीन स्थापित प्राकृतिक खेती इकाई का उद्घाटन किया। इस दौरान केन्द्र प्रमुख डॉ. व्ही.के. वर्मा ने प्राकृतिक खेती के घटक जीवामृत एवं बीजामृत की पांच-पांच लीटर की पैकिंग कम दामों पर किसानों हेतु उपलब्ध कराने की जानकारी दी और संचालक विस्तार सेवाओं द्वारा इस संबंध में किए जा रहे अन्य कार्यों की समीक्षा की। साथ ही अजोला उत्पादन इकाई, केंचुआ उत्पादन इकाई, हाइड्रोपोनिक इकाई का भी भ्रमण किया और केन्द्र पर स्थापित संग्रहालय का अवलोकन किया और उसमें सुधार किए जाने के सुझाव दिए।डॉ. डी.पी. शर्मा द्वारा केन्द्र के फसल संग्रहालय का भ्रमण किया और अरहर की उन्नत किस्म भीमा जो कि ''सीड हब परियोजना'' अंतर्गत लगाई गई है, का निरीक्षण किया।

स्त्री 2 की अभिनेत्री पर टूटा दुखों का पहाड़, केंसर का इलाज करवाने पति को लेकर पहुँची बैतूल के छोटे से गाँव

बैतूल। स्त्री 2 की फिल्म अभिनेत्री पर इन दिनों दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। जिसके कारण अभिनेत्री को मप्र के बैतूल जिले के एक छोटे से गांव कान्हावाड़ी में आना पड़ा है। फिल्म स्त्री 1 और स्त्री 2 में काम करने वाली अभिनेत्री स्वास्तिका चक्रवर्ती बैतूल जिले के छोटे से गांव कान्हावाड़ी पहुंची। बताया गया कि वह अपने पति का जड़ी बूटियां से कैंसर का इलाज करवाने के लिए आई थी। कान्हावाड़ी में इलाज कराकर वापस भोपाल रवाना हुई। अभिनेत्री स्वास्तिका चक्रवर्ती ने बताया कि उसके पति को करीब 6 माह पहले कैंसर हो गया है। उन्हें पता चला कि बैतूल के कान्हावाड़ी में बाबूलाल भगत कैंसर का जड़ी बूटियों से उपचार करते है। जानकारी लगते ही अभिनेत्री पति के साथ कान्हावाड़ी पहूंची। कान्हावाड़ी के प्रसिद्ध वैध बाबूलाल भगत जी से भेंट की उनकी मरीजों के प्रति सेवा भाव देखकर विभोर हो गई। अभिनेत्री ने बताया कि पति के लिए कैंसर की जड़ी बूटियां ली पति एक फार्मासिस्ट कंपनी में 35 सालों से काम कर रहे है। अभिनेत्री स्वास्तिका चक्रवर्ती ने बताया कि बैतूल जिले के घोड़ाडोंगरी

की प्राकृतिक सुंदरता को देखकर अभिभूत हू। बैतूल एवं घोड़ाडोंगरी रेलवे स्टेशन से कई बार गुजरी पर पहली बार सड़क मार्ग से घोड़ाडोंगरी पहुंची। घोड़ाडोंगरी की प्राकृतिक सुंदरता बहुत प्यारी है। यहां का प्राकृतिक वातावरण देखकर बहुत खुशी हुई है। अभिनेत्री स्वास्तिका चक्रवर्ती ने बताया कि 1993 से फिल्मों में काम कर रही है।

स्त्री 2 में भी कर चुकी है काम

फिल्म एक्टर स्वास्तिका चक्रवर्ती ने पिछले दिनों रिलीज हुई राजकुमार राव, श्रद्धा कपूर पंकज त्रिपाठी स्टार फिल्म स्त्री 2 मे भूमिका अदा की है। साथ ही उन्होंने इसके पहले स्त्री 1 में भी अभिनय के साथ साथ कई फिल्मो थियेटर मे काम कर चुकी है। अभिनेत्री ने बताया कि फिल्म में उनका बहुत बड़ा रोल तो नही है।

रीवा को स्वास्थ्य सुविधाओं का हब बनाएंगे : उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

तीन दिवसीय नि :शुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का किया शुभारंभ

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा है कि रीवा में अधोसंरचना के क्षेत्र में तेजी से विकास हुआ है। शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी रीवा में उत्कृष्ट व्यवस्थाएँ की जायेंगी। उन्होंने कहा कि रीवा में सुपर स्पेशलिटी हास्पिटल, मेडिकल कालेज तथा जिला अस्पताल में स्वास्थ्य सेवाएं लगातार बेहतर की जा रही हैं। रीवा को स्वास्थ्य सुविधाओं का हब बनाया जाएगा। शासकीय क्षेत्र और निजी क्षेत्र के अस्पताल मिलकर उत्कृष्ट और उच्च-स्तरीय स्वास्थ्य सेवाओं का प्रदाय करेंगे। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कृष्णा राजकपूर ऑडिटोरियम रीवा में तीन दिवसीय नि:शुल्क सुपर स्पेशलिटी जाँच एवं उपचार शिविर का शुभारंभ किया। शिविर का आयोजन जिला प्रशासन, स्वास्थ्य विभाग और श्री अरविंदो अस्पताल इंदौर द्वारा किया गया है।उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि रोग के उपचार से बेहतर है कि समय पर जाँच कराकर हम बीमार होने से बचें। रीवा में फरवरी माह में संभाग के एक लाख व्यक्तियों की कैंसर संबंधी जाँच की गई। इनमें 40 रोगी चिन्हित हुए उन्हें समुचित उपचार दिया गया। मार्च माह में लगभग 50 हजार व्यक्तियों की स्वास्थ्य की निःशुल्क जाँच की गई जिनमें बड़ी संख्या में विटामिन डी की कमी तथा खून की कमी के रोगी चिन्हित कर उन्हें उपचार दिया गया है। उन्होंने कहा कि रीवा में तीसरा शिविर अरविंदो अस्पताल के सहयोग से लगाया जा रहा है। इससे गंभीर रोगों से ग्रस्त मरीजों को निःशुल्क जाँच और उपचार की सुविधा मिलेगी। साथ ही अरविंदो अस्पताल के विशेषज्ञ डॉक्टरों के मार्गदर्शन का लाभ मेडिकल कालेज और सरकारी अस्पताल के डॉक्टरों को भी मिलेगा। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने निर्देश दिये कि अरविंदो अस्पताल के संचालक डॉ विनोद भण्डारी के स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर करने के सुझाव पर मेडिकल कालेज के डीन आवश्यक प्रस्ताव बनायें। अरविंदो अस्पताल के संचालक डॉ विनोद भण्डारी ने बताया कि शिविर में चिन्हित गंभीर रोगियों को अरविंदो हास्पिटल द्वारा नि:शुल्क उपचार की सुविधा दी जायेगी। रीवा में स्तन कैंसर की जाँच के लिए सेंटर बनाने, गर्भस्थ शिशु की जाँच, उपचार तथा फीडल सर्जरी के लिए अरविंदों अस्पताल प्रशिक्षण तथा सहयोग देगा। उन्होंने बताया कि रीवा आयोजित शिविर में हमारे अस्पताल के डॉक्टरों सहित 156 व्यक्ति अपनी सेवाएं दे रहे हैं। विधायक गुढ़ श्री नागेन्द्र सिंह, विधायक मनगवां श्री नरेन्द्र प्रजापति, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती नीता कोल, नगर निगम अध्यक्ष श्री व्यंकटेश पाण्डेय, आईजी एमएस सिकरवार, पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह, सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

ज़िला चिकित्सालय सहित अन्य स्वास्थ्य केंद्रों का निरीक्षण

नरसिंहपुर। स्वास्थ्य केंद्रों में सुरक्षा के पर्याप्त इंतज़ाम की दृष्टि से कलेक्टर श्रीमती शीतला पटले एवं पुलिस अधीक्षक श्री अमित कुमार ने संयुक्त रूप से जिला चिकित्सालय नरसिंहपुर, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र करेली एवं सिविल अस्पताल गाडरवारा का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने स्वास्थ्य विभाग के अमले को निर्देशित किया कि जिला अस्पताल परिसर एवं अंदरूनी हिस्सा सीसीटीवी कैमरों की निगरानी में लगातार होने चाहिए। आवश्यकता अनुसार इनकी संख्या भी बढ़ाई जाए।खासतौर पर उन जगहों को शामिल किया जाए, जहां लोगों का आना-जाना कम है। वहाँ पर्याप्त लाइटिंग हो।निरीक्षण के दौरान उन्होंने निर्देश दिए कि अस्पताल की पार्किंग, छत, सीढ़ियां सहित ऐसे स्थान जहां लोगों की दैनिक आवाजाही कम है वहाँ सीसीटीवी कैमरा, पर्याप्त विद्युत व्यवस्था एवं सुरक्षाकर्मी तैनात रहें। प्रवेश एवं निर्गम द्वारों पर सुरक्षा की कड़ी व्यवस्था हो। अनाधिकृत व्यक्ति का किसी भी स्थिति में प्रवेश वर्जित रहे। मरीज एवं उनके परिजनों की सुरक्षा हेतु उचित प्रबंध हो। अस्पताल परिसर में पर्याप्त बल हो। मरीज के साथ एक ही व्यक्ति को अनुमति दी जाए। समय- समय पर डायल-100 परिसर का विज़िट करे।रात्रि गश्त भी लगातार होता रहें। पुलिस अधीक्षक श्री अमित कुमार ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र करेली के निरीक्षण के दौरान यहाँ लगे सीसीटीव्ही का फीड करेली पुलिस थाने में चौबीस घंटे रखने के निर्देश करेली टीआई को दिये।यहाँ अस्पताल में प्रवेश के लिए सिर्फ़ एक ही ओर से मार्ग खुला रखा जायें। दोनों तरफ़ से प्रवेश नहीं हो यह सुनिश्चित करने के निर्देश अस्पताल प्रबंधन एवं पुलिस अधिकारियों को दिए। इस दौरान इस दौरान सिविल सर्जन डॉ जीसी चौरसिया,एसडीएम गाडरवारा श्रीमती कलावती ब्यारे, तहसीलदार श्री निर्मल पटले, डॉ. अदिति धुर्वे, थाना प्रभारी सहित अन्य संबंधित अधिकारी मौजूद थे।

म.प्र.में बीएड वाले प्राइमरी टीचर्स की जाएगी नौकरी

एक हफ्ते में नियुक्ति रद्द करेगी सरकार; शिक्षा विभाग ने जारी किए आदेश

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में बीएड की योग्यता के आधार पर प्राथमिक शिक्षक बनने वाले 341 शिक्षकों की नियुक्तियां निरस्त की जाएगी। यह आदेश 11 अगस्त 2023 और उसके बाद नियुक्त किए गए शिक्षकों के मामले में प्रभावी होगा।

स्कूल शिक्षा विभाग के संचालक ने जिला शिक्षा अधिकारियों को आदेश जारी कर दिए हैं। इसके लिए फॉर्मेट भी जारी किया है कि किस तरह से प्राथमिक शिक्षक के पद पर नियुक्त ऐसे शिक्षकों की नियुक्ति निरस्त की जाना है।

विभाग ने यह भी स्पष्ट किया है कि अगर किसी उम्मीदवार की योग्यता बीएड है, और गलती से रिकॉर्ड में डीएड लिखा है तो ऐसे शिक्षक की भी नियुक्ति निरस्त की जाएगी। इसकी सूची भी जिला शिक्षा अधिकारियों को भेजी है।

जबलपुर हाईकोर्ट ने भी दिया था आदेश

इसके साथ ही हाईकोर्ट जबलपुर ने ऐसे ही मामलों में दायर याचिका में 3 मई 2024 को जारी आदेश में कहा है कि 11 अगस्त 2023 के पूर्व नियुक्त बीएड योग्यता धारक उम्मीदवार को ही मान्य किया जाएगा। इसके बाद 11 अगस्त 2023 या उसके बाद नियुक्त बीएड योग्यता वाले प्राथमिक शिक्षकों की नियुक्ति मान्य नहीं की जाएगी। स्कूल शिक्षा विभाग ने जिला शिक्षा अधिकारियों को आदेश जारी कर कार्रवाई के लिए कहा है।

25 जिलों के शिक्षा अधिकारियों को दिए गए निर्देश

जिन जिलों के जिला शिक्षा अधिकारियों को बीएड की योग्यता के आधार पर प्राथमिक शिक्षक पद से बर्खास्त करने के लिए कहा है उनमें आगर मालवा, आलीराजपुर, अशोकनगर, छतरपुर, दमोह, डिंडौरी, गुना, कटनी, खंडवा, मंदसौर, मुरैना, नरसिंहपुर, शामिल हैं। इसके अलावा नीमच, निवाड़ी, पन्ना, रायसेन, रतलाम, सागर, श्योपुर, शिवपुरी, सीधी, सिंगरौली, टीकमगढ़, उज्जैन और विदिशा के जिला शिक्षा अधिकारियों को भी उनके जिलों में बीएड की योग्यता के आधार पर प्राथमिक शिक्षक बनने वालों की नियुक्त निरस्त करने के आदेश जारी किए गए हैं।

लोक शिक्षण आयुक्त बोलीं- एससी के फैसले के आधार पर कार्रवाई

मीडिया ने जब लोक शिक्षण आयुक्त शिल्पा गुप्ता से 341 शिक्षकों की लिस्ट को लेकर बात की गई तो उन्होंने लिस्ट देने से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले के आधार पर जिलों को कार्रवाई के लिए लिखा है। जब जिलों से रिपोर्ट आएगी तो कार्रवाई के आधार पर सूची मिलेगी।

वहीं, लोक शिक्षण आयुक्त कार्यालय में पदस्थ संचालक केके द्विवेदी ने कहा कि सूची उपलब्ध है, लेकिन कमिश्नर के बगैर नहीं दे सकते हैं।

भोपाल में 1 हजार टूर ऑपरेटर जुटेंगे

आईएटीओ का राष्ट्रीय सम्मेलन आज से; ट्रेवल एजेंट्स भी होंगे शामिल

भोपाल (नप्र)। भोपाल में 30 सितंबर से इंडियन एसोसिएशन ऑफ टूर ऑपरेटर्स का 39वां राष्ट्रीय सम्मेलन शुरू होगा। 4 दिन चलने वाले इस सम्मेलन में देशभर के 1 हजार टूर ऑपरेटर्स, ट्रेवल एजेंट्स और होटलियर्स समेत टूरिज्म से जुड़े प्रतिनिधि भी शामिल होंगे।30 अगस्त से 2 सितंबर तक होटल ताज लेक फ्रंट में राष्ट्रीय सम्मेलन होगा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव सम्मेलन का शुभारंभ करेंगे।

इसलिए भोपाल में हो रहा सम्मेलन

रीसर्जेंट इंडिया इनबाउंड थीम पर होने वाले इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य वर्तमान पर्यटक आकर्षणों के बारे में जागरूकता को बढ़ाना और आईएटीओ के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में अनुभव आधारित पर्यटन और ऑफ-बीट गंतव्यों को प्रचारित करना है। साल 2023 में एमपी में कुल 112.1 मिलियन पर्यटक आए थे, जबकि 2022 में यह संख्या 34.1 मिलियन थी।

आध्यात्मिक और धार्मिक पर्यटन भी हो रहा

एमपी टूरिज्म बोर्ड के अनुसार, प्रदेश में वर्तमान में आध्यात्मिक और धार्मिक पर्यटन तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। हर साल लाखों टूरिस्ट प्रदेश के आध्यात्मिक और धार्मिक स्थानों पर पहुंचते हैं। इनमें महाकाल मंदिर उज्जैन समेत दतिया, ओंकारेश्वर जैसे प्रमुख स्थान भी शामिल हैं।

सभी को एक मंच मिलेगा

इंडियन एसोसिएशन ऑफ टूर ऑपरेटर्स राज्य के पर्यटन आकर्षणों को प्रचारित करने और आध्यात्मिक एवं ऐतिहासिक स्थलों पर केंद्रित नए पर्यटन सर्किट विकसित करने का मंच प्रदान करेगा।

सम्मेलन के दौरान 12 एफएएम टूर संचालित किए जाएंगे। जिसमें टूर ऑपरेटर्स को प्रदेश के विभिन्न पर्यटन गंतव्यों का भ्रमण कराया जाएगा। साथ ही एक सितंबर को वीआईपी रोड से 'रन फॉर रिस्पॉन्सिबल टूरिज्म' भी की जाएगी।

प्रदेश में बढ़ी पर्यटकों की संख्या

प्रमुख सचिव शिवशेखर शुक्ला ने बताया- प्रदेश में 12 राष्ट्रीय उद्यान, 25 अभयारण्य, 7 बाघ अभयारण्य, 14 यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल (3 स्थायी एवं 11 संभावित स्थल) हैं।सम्मेलन का उद्देश्य वर्तमान पर्यटक आकर्षणों के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देना और आईएटीओ के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अनुभव आधारित पर्यटन और ऑफबीट गंतव्यों को प्रचारित करना है।

मेजर ध्यानचंद के 119 वीं जयंती राष्ट्रीय खेल दिवस के रुप में नेहरू उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में मनायी

नरसिंहपुर। भारतीय हॉकी के दिग्गज मेजर ध्यानचंद के 119 वीं जयंती राष्ट्रीय खेल दिवस के रुप में नेहरू उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में मनायी गई। इस अवसर पर पूर्व राज्य मंत्री जालम सिंह पटेल, नगर पालिका अध्यक्ष नीरज दुबे, नगर पालिका उपाध्यक्ष अजीत सिंह ठाकुर, समाजसेवी विक्रांत पटेल, बंटी सलूजा, मेरसिह गुमास्ता, जिला शिक्षा अधिकारी श्री अनिल व्यौहार, जन प्रतिनिधियों की उपस्थिति में हाकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद के चित्र पर माल्यार्पण कर पुष्पांजलि अर्पित की गई। शिक्षिका श्रीमती सीमा दीक्षित द्वारा मेजर ध्यानचंद के जीवन पर अपने विचार व्यक्त किए। राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर आयोजित कार्यक्रम में पूर्व राज्य मंत्री श्री पटेल ने विद्यार्थियों को खेल मैदान पर खेलने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि खेल में मानसिक और शारीरिक शक्ति का सामंजस्य दिखाई देता है। मोबाइल के खेल को छोड़कर मैदान पर खेलने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है। मोबाइल पर खेल की आदत छोड़ें। उन्होंने राज्य स्तरीय व्हालीवाल विजेता टीम एवं कोच के लिए मणिनागेंद्र सिंह फाउंडेशन द्वारा ट्रेक शूट प्रदान करने की घोषणा की। नगर पालिका अध्यक्ष नीरज दुबे,प्राचार्य एके चौबे, द्वारा छात्रों को उज्ज्वल भविष्य के लिए शिक्षा के साथ खेल के क्षेत्र में आत्मविश्वास के साथ सफल होने हेतु प्रोत्साहित किया।

जिला स्तरीय शांति समिति की बैठक 2 सितम्बर को

नरसिंहपुर। आगामी 7 सितम्बर से गणेश उत्सव प्रारंभ होने एवं 16 सितम्बर को ईद-मीलादुन्नबीं का त्यौहार को शांति पूर्वक मनाये जाने के संबंध में जिला स्तरीय शांति समिति की बैठक सोमवार दो सितम्बर को कलेक्ट्रेट नरसिंह भवन के सभाकक्ष में सायं 4.30 बजे से आयोजित की जायेगी। यह जानकारी अपर जिला दंडाधिकारी नरसिंहपुर ने दी है।

भोपाल में राष्ट्रीय खेल दिवस पर प्राचीन खेलों का आयोजन

8 साल के बच्चे से लेकर 80 साल के बुजुर्ग ने चलाया बरछी-भाला

भोपाल (नप्र)। राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर भोपाल हिंदू अखाड़ा महासंघ ने शहर के 12 अखाड़ों के सहयोग से प्राचीन खेलों का आयोजन किया। इस आयोजन में डंडा, बनेटी, मुद्गल, बरछी-भाला, ढाल-तलवार, पटा और कुश्ती जैसे लुप्त होते प्राचीन खेलों को पुनर्जीवित किया गया। इस कार्यक्रम में बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

छोला मुक्तेश्वर महादेव मंदिर के प्रांगण में आयोजित इस कार्यक्रम में बच्चों से लेकर

बुजुर्गों तक ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। 8 साल के कृष्णा कुशवाहा से लेकर 80 साल के घासीराम प्रजापति तक ने बरछी-भाला चलाकर सभी को प्रभावित किया।महासंघ के अध्यक्ष नारायण सिंह कुशवाहा ने बताया कि अखाड़े शासन के सहयोग के बिना ही प्राचीन खेलों को जीवित रखने का प्रयास कर रहे हैं। इन खेलों के माध्यम से युवाओं को आत्मरक्षा और शारीरिक स्वास्थ्य के बारे में जागरूक किया जा रहा है।

12 अखाड़ों के सहयोग से खेलों का आयोजन हुआ-शिव धाम कुशवाहा अखाड़ा, खेड़ापति हनुमान अखाड़ा, महाभारत अखाड़ा, श्री राम बजरंग अखाड़ा, जगन्नाथ पुरी धाम अखाड़ा, श्री महावीर खेड़ापति अखाड़ा, लव कुश अखाड़ा, श्री कर्ण धार अखाड़ा, मां अंजनी पुत्र हनुमान अखाड़ा, जय भारत बजरंग अखाड़ा और पवन पुत्र अखाड़ा ने खेलों में भाग लेकर अपनी शक्ति और स्वास्थ्य का परिचय दिया। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से उपस्थित होने वालों में किशोरी लाल पटेल हिंदू उत्सव पूर्व अध्यक्ष नारायण सिंह कुशवाहा, हिंदू उत्सव समिति अध्यक्ष संतोष साहू, नरेश राव जाधव, मंडी समिति सचिव रंजन लाल सैनी, महासंघ अध्यक्ष नारायण सिंह कुशवाहा, भाजपा नेता रामप्रसाद चंदोरिया, पहलवान ओम सेन नन्नू लाल कुशवाहा विनोद पहलवान जगदीश कुशवाहा, राजेंद्र मटोलिया याद पूरन कनौजिया, धनरूप साहू, दीपक घोंसारे, बंटी धाकड़, भगवानदास कुशवाहा, चैन सिंह प्रजापति, जगन्नाथ जाल, विष्णु साहू, दुर्गा प्रसाद कुशवाहा, विशाल बाथम, नेमीचंद पहलवान, संदीप पंथी और जगदीश यादव शामिल रहे।

सागर-पचमढ़ी में एक इंच बारिश, माही डैम के गेट खोले; अगले दो दिन तेज बारिश नहीं

शहडोल में स्टॉप डैम से रिसाव, 50 ग्रामीणों का रेस्क्यू

उज्जैन में पेड़ कारों पर गिरा, जान बचाकर भागे लोग

सितंबर की शुरुआत भी बारिश से

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में मानसून सीजन की 90 प्रतिशत बारिश हो चुकी है। अब तक 33.6 इंच पानी गिर चुका है, 3.7 इंच बारिश और होते ही प्रदेश में सामान्य बारिश का आंकड़ा भी पार हो जाएगा। मंडला और सिवनी ऐसे जिले हैं, जहां 45 इंच से ज्यादा पानी गिर चुका है। दतिया, रीवा, धार, मुरैना और इंदौर में सबसे कम बारिश हुई है। मध्यप्रदेश में गुरुवार को कहीं बारिश तो कहीं तेज गर्मी का असर रहा। सागर और

पचमढ़ी में 1-1 इंच पानी गिर गया। बालाघाट के मलाजखंड और बैतूल जिले में आधा इंच से ज्यादा बारिश दर्ज की गई, जबकि गुना और खंडवा में हल्की बौंछारें पड़ी।

गुरुवार सुबह उज्जैन में सांदीपनि आश्रम के सामने एक पेड़ दो कारों पर गिर गया। कारें चकनाचूर हो गईं। बड़ी संख्या में श्रद्धालु भी खड़े थे, जो जान बचाकर भागे। इससे पहले बुधवार को शहडोल के करचुल गांव में स्टॉप डैम की मिट्टी का कटाव होने से पानी रिहायशी इलाकों में भरने लगा। रात में ही 52 ग्रामीणों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया गया। शहडोल के करचुल में स्टॉप डैम की मिट्टी का कटाव होने से पानी बाहर आ रहा है।

दो दिन तेज बारिश नहीं

मौसम विभाग के मुताबिक, अगले 2 दिन तक प्रदेश में तेज बारिश का अलर्ट नहीं है, लेकिन सितंबर की शुरुआत तेज बारिश के साथ होगी। सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. वेदप्रकाश सिंह ने बताया, 29 अगस्त को बंगाल की खाड़ी में साइक्लोनिक सर्कुलेशन सिस्टम एक्टिव हो रहा है। लो प्रेशर एरिया भी 29-30 अगस्त से एक्टिव हो जाएगा। इसका प्रभाव 2 दिन बाद देखने को मिलेगा। 3 से 4 सितंबर तक प्रदेश में तेज बारिश होने का अनुमान है।उन्होंने कहा कि फिलहाल मानसून ट्रफ समेत अन्य सिस्टम प्रदेश से दूर हैं। इस वजह से अगले 24 घंटे में प्रदेश में बारिश की खास एक्टिविटी नहीं रहेगी। कुछ जगहों पर हल्की बारिश जरूर हो सकती है।

बारिश के साथ तेज धूप निकली

प्रदेश में मौसम के दो रंग देखने को मिले। कहीं तीखी धूप निकली, तो कहीं बारिश हुई। उमरिया में करीब 1 इंच पानी गिरा। धार, खंडवा, खरगोन और उज्जैन में हल्की बारिश दर्ज की गई। दूसरी ओर, भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, उज्जैन-जबलपुर समेत अन्य जिलों में तेज धूप निकली। भोपाल में पारे में 1.7 डिग्री की बढ़ोतरी के बाद 31.6 डिग्री तापमान रहा। इंदौर में 28.2 डिग्री, ग्वालियर में 32.9 डिग्री, उज्जैन में 29.8 डिग्री और जबलपुर में पारा 31.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। इसी तरह नरसिंहपुर में 35 डिग्री, रीवा में 35.4 डिग्री और उमरिया में भी तापमान 34.1 डिग्री सेल्सियस रहा।

बैंक प्रशासक द्वारा ली शाखा प्रबंधकों की समीक्षा बैठक

संस्थाओं को स्वच्छ एवं आकर्षक बनाने पर भी दिया जोर

नरसिंहपुर। गुरुवार जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक के सभागार में शाखा प्रबन्धकों की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता करते हुये कलेक्टर एवं बैंक प्रशासक शीतला पटले द्वारा बैंक की वसूली, ऋण वितरण, अमानतो एवं फसल बीमा सहित अन्य महत्वपूर्ण कार्यों की समीक्षा की गई। बैठक में बैंक प्रशासक द्वारा वसूली एवं अमानतों के निर्धारित लक्ष्यों की समयावधि में पूर्ति करने के निर्देश दिये गये। इस दौरान उन्होने संस्थाओं को स्वच्छ एवं आकर्षक बनाने पर जोर दिया ताकि अधिकाधिक कृषक एवं ग्राहक प्राथमिक कृषि सहकारी संस्थाओं से जुड सकें। बैठक की समीक्षा के दौरान बैंक मुख्य कार्यपालन अधिकारी डी.के. राय द्वारा भी उपस्थित शाखा प्रबन्धकों को आवश्यक निर्देश देते हुये शासन की मंशानुसार कार्य करने के निर्देश दिये।

सत्ता का सर्कस

दिनेश गुप्ता

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

राहुल कास्ट, कॉन्स्टिट्यूशन सियासत और भाजपा का कमजोर नेतृत्व

दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में दो बातों पर खूब चर्चा हो रही है। पहली चर्चा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा के मौजूदा नेतृत्व को लेकर है। इस चर्चा का सार यही है कि जून में आए लोकसभा चुनाव के नतीजों के बाद नेतृत्व का अति विश्वास भी 'डगमगाने' लगा है। मोदी सरकार के कई निर्णयों से 'डगमगाते' विश्वास का नतीजा निकला है। इसमें वक्फ कानून में संशोधन का मसला भी है और संविधान को माथे पर लगाने वाली तस्वीर भी है। दूसरी चर्चा विपक्ष के नेता राहुल गांधी को लेकर होती है। पहली चर्चा में जब भी 'विश्वास डगमगाने' की बात आती हैं,वहां राहुल गांधी की चर्चा अपने आप आ जाती है। राहुल गांधी की पप्पू वाली छवि को बनाने में भाजपा की ट्रोल आर्मी ने काफी मेहनत की है। इसका ही नतीजा है कि जब भी राहुल गांधी कुछ ऐसा बोलते हैं,जो व्यवहारिक धरातल से दूर होता है, तब लोग कहने को मजबूर हो जाते हैं कि 'पप्पू' ही रहेगा? कोई इसे समझाता क्यों नहीं? जमीनी हकीकत नहीं पता? राजकुमार हैं। आदि-आदि। दो साल पहले राहुल गांधी ने कांग्रेस की एक रैली में जब आटे के भाव 'लीटर' में बताए थे, तब भी इसी तरह की बात लोग कर रहे थे। अब जब उन्होंने 'मिस इंडिया' में कोई दलित,आदिवासी और पिछड़ा वर्ग से न होने की बात कही है,तब भी उनकी 'बौद्धिक स्थिति' पर सवाल किए जा रहे हैं। क्या वाकई राहुल गांधी मिस इंडिया चुने जाने की प्रक्रिया को नहीं जानते? या फिर वो सामाजिक भेदभाव के जिस चरित्र को उजागर करना चाह रहे हैं,उसे लोग प्रस्तुतिकरण के तरीके के कारण समझ नहीं पा रहे? कारण कोई भी राहुल गांधी का ट्रोल होना स्वभाविक है। ट्रोल आर्मी के जरिए यह सवाल तो लोगों तक पहुंच ही गया है कि मिस इंडिया की प्रतिस्पर्धा में कथित उपेक्षित वर्ग नहीं पहुंच पाता है। मिस इंडिया जैसी प्रतियोगिता का संबंध सिर्फ शरीर के रंग से नहीं है। कुछ चीजें 'अनुवांशिक गुणों' से जुड़ी हुई हैं। जिन्हें बदला नहीं जा सकता। यहीं राहुल गांधी चूक जाते हैं और लोगों को ट्रोल करने का मौका हाथ लग जाता है। दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में राहुल गांधी की राजनीति को 3 'सी' की राजनीति कहा जाता है। पहला 'सी' कॉन्स्टिट्यूशन यानी संविधान का है। लोकसभा चुनाव के दौरान राहुल गांधी सहित इंडिया एलाान्स के सभी बड़े नेताओं ने यह आशंका जाहिर की थी कि यदि भाजपा चार सौ सीटें जीत जाती है तो वह भारत के संविधान को बदल देगी। संविधान में बदलाव कर वह आरक्षण को समाप्त कर देगी। शायद यही वह अकेला मुद्दा था जिसके कारण प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपनी तीसरी पारी की सरकार को भाजपा की सरकार के बजाए राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए)की सरकार कहना पड़ा। राहुल गांधी का दूसरा 'सी' सेन्सस अर्थात् जनगणना का है। इसमें जातिगत जनगणना का भी मुद्दा शामिल है। बिहार में राहुल गांधी नीतीश कुमार वाली गठबंधन की सरकार से जातिगत जनगणना करा चुके हैं। जातिगत जनगणना के बाद ही वहां आरक्षण में बदलाव किया गया। लेकिन,कांग्रेस और राष्ट्रीय जनता दल को लोकसभा चुनाव में जो लाभ मिलना चाहिए,वह मिला नहीं है। कांग्रेस और उसके गठबंधन के साथी समाजवादी पार्टी को उत्तर प्रदेश में लाभ संविधान और आरक्षण पर खतरे के मुद्दे के जरिए मिला। राहुल गांधी का तीसरा 'सी' कास्ट यानी जाति का है। इसमें भी वही आरक्षण का मुद्दा है। राहुल गांधी और इंडिया गठबंधन हर सी का उपयोग राजनीतिक परिस्थितियों के हिसाब से कर रहा है। इसका दबाव भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भारतीय जनता पार्टी पर साफ दिखाई पड़ रहा है। इस दबाव को महसूस करने वाले भाजपा के नेता भी अब दबी जुबान से यह बात कहने लगे हैं कि पार्टी में अब तक का सबसे 'कमजोर नेतृत्व' है।

क्या मोदी-शाह का नेतृत्व कमजोर हो रहा है?

नेतृत्व की कमजोरी से जुड़े शब्द जब भारतीय जनता के भीतर सुनाई देते हैं तो चौंकना स्वाभाविक होता है। पिछले एक दशक में भाजपा का वोट बैंक मौजूदा नेतृत्व के कारण ही बढ़ा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह का नेतृत्व। इस नेतृत्व के कारण ही भाजपा ने देश के उन राज्यों में भी अपनी सरकार बनाई जहां कभी कल्पना भी नहीं की गई थी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मुद्दों को भी इसी नेतृत्व ने पूरा किया। मामला चाहे राम मंदिर का हो या फिर जम्मू-कश्मीर में एक संविधान लागू करने का हो, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमित शाह की निर्णय शक्ति के कारण ही यह संभव हो पाया। कश्मीर में एक विधान-एक संविधान का जो लाभ भाजपा सोच रही थी, वह नहीं मिला। चुनाव के नतीजों के कारण नेतृत्व में जो निराशा आई,वह चेहरे पर आसानी से पढ़ी जा सकती है। निर्णयों पर भी इसका असर दिख रहा है। वक्फ कानून को तो संयुक्त संसदीय समिति के पास भेजना पड़ा। लेकिन, जिस कारण नेतृत्व को कमजोर कहा जा रहा है,वह वजह पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के चयन से जुड़ी हुई है। 2014 में जब केंद्र में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पहली बार बहुमत वाली सरकार बनी तब अमित शाह को राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाने का फैसला तत्काल ले लिया गया था। 2019 के लोकसभा चुनाव के बाद जब अमित शाह को केन्द्र में मंत्री बनाया गया तब जेपी नड्डा को राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाने का फैसला देरी से लिया गया था। लेकिन,तब किसी ने नेतृत्व की कमजोरी की बात नहीं कही थी। कारण 2019 के लोकसभा चुनाव में पार्टी को ऐतिहासिक जीत मिली थी। अब जब पार्टी को समर्थन से अपनी सरकार चलाना पड़ रही है तब वह राष्ट्रीय अध्यक्ष के लिए अपना चेहरा तय नहीं कर पा रही है। अध्यक्ष का नाम तय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह को ही करना है। कहीं न कहीं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से टकराव भी इस देरी की एक वजह हो सकती है। लोकसभा चुनावों के दौरान अध्यक्ष जेपी नड्डा का वह बयान काफी चर्चा में रहा था जिसमें उन्होंने कहा था कि -'भाजपा अब पहले की तुलना में काफी मजबूत हो गई है इसलिए अब संघ के समर्थन की जरूरत नहीं है।' जाहिर है नड्डा ने ये बातें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता, अयोध्या में राम मंदिर निर्माण और चुनावों में भाजपा के पक्ष में नजर आ रहे माहौल से भरे आत्मविश्वास की बदौलत ही कही होगी? लेकिन अगर संघ को लगा ये कुछ और नहीं बल्कि यह भाजपा नेतृत्व का अहंकार बोल रहा है, तो सही भी था। संघ ने अपने तरीके से भाजपा नेतृत्व को नसीहत भी दे डाली। नतीजों में भाजपा के बहुमत से पिछड़ जाने में संघ के असहयोग की भी भूमिका तो मानी ही जाएगी। संघ भाजपा में बदलाव के पक्ष में दिखाई दे रहा है। शायद यही कारण है कि नड्डा का उत्तराधिकारी अब तक तय नहीं हो सका है। संघ किसी ऐसे चेहरे का राष्ट्रीय अध्यक्ष देखना चाहता है जो सरकार को संगठन के हिसाब से चलाए? संगठन को सरकार का आश्रित न होने दे? चुनाव के नतीजों के बाद जो पहला नाम इस पद के लिए सबसे ज्यादा चर्चा में था और मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का था। लेकिन, मोदी-शाह की जोड़ी ने उन्हें केन्द्र में मंत्री बनाकर रास्ते से हटाने की कोशिश की है। अब जो नाम चर्चा में हैं उनकी नेतृत्व क्षमता पर भाजपा के कार्यकर्ता को ही भरोसा नहीं है।

राम माधव की वापसी से क्या संदेश ?

कश्मीर में भारत का विधान लागू करने के बाद भी लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह ने वहां भाजपा के उम्मीदवार चुनाव मैदान में नहीं उतारे। जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव को लोकसभा चुनाव 2024 के नतीजों ने ज्यादा दिलचस्प बना दिया है। जम्मू-कश्मीर में लोकसभा की 5 सीटें हैं, भाजपा ने सिर्फ दो सीटों पर ही चुनाव लड़ा था, और दोनो ही जीत भी लीं। लेकिन बाकी तीन सीटों पर भाजपा ने अपने उम्मीदवार नहीं उतारे। जबकि किसी के साथ कोई चुनावी गठबंधन भी नहीं था। ये तीनों सीटें घाटी की थीं। विधानसभा चुनाव में भाजपा के लिए वहीं पांव जमाना मुश्किल हो रहा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से राम माधव की वापसी भी जम्मू-कश्मीर के चुनाव से जुड़ी हुई है। राम माधव इंडिया फाउंडेशन के अध्यक्ष हैं। इंडिया फाउंडेशन संघ का ही एक थिंक टैंक माना जाता है। 2014-20 तक राम माधव भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव के तौर पर भी काम कर चुके हैं। जम्मू-कश्मीर के अलावा उनको असम और नॉर्थ ईस्ट में काम करने का व्यापक अनुभव है। 2014 में जम्मू-कश्मीर में भाजपा की गठबंधन सरकार बनवाने से लेकर 2018 में त्रिपुरा में भगवा फहराने तक, राम माधव की विशेष भूमिका रही है। जम्मू-कश्मीर में पीडीपी नेता महबूबा मुफ्ती के साथ सत्ता के गठबंधन से लेकर जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हटाने की तैयारियों में भी राम माधव महत्वपूर्ण भूमिका निभा चुके हैं। इस कारण राम माधव की वापसी को अहम माना जा रहा है और कहा जा रहा है कि उन्हें मोदी-शाह ने मजबूरी में बुलाया है। अन्यथा भाजपा से बाहर का रास्ता दिखाने के बाद उन्हें वापस क्यों बुलाया जाता? राम माधव को मिली नई जिम्मेदारी तो यही बता रही है कि नेतृत्व को उनकी जरूरत थी, और संघ ने जानबूझ कर ये कदम उठाया है। एक दशक बाद जम्मू-कश्मीर की बदली व्यवस्था में होने जा रहे विधानसभा चुनाव में बीजेपी की जीत पक्की करना ही राम माधव की पहली जिम्मेदारी है। वे अगर बीजेपी की जीत पक्की न कर पाये तो भी कम से कम इतना इंतजाम तो कर ही दें कि वह मुख्य विपक्षी भूमिका में हो?

उम्मीदवारों की सूची को वापस लेने के मायने?

सोमवार को जम्मू-कश्मीर के विधानसभा उम्मीदवारों की जो पहली सूची भाजपा ने जारी की थी,उसके जरिए भी नेतृत्व की कमजोरी सामने आ रही है। पहली सूची के बाद जो हुआ,वह देश ने कांग्रेस की राजनीति में तो खूब देखा है लेकिन, भाजपा की राजनीति में इतना हंगामा पहले कभी नहीं देखा गया। सोमवार को भाजपा ने उम्मीदवारों की तीन अलग-अलग सूची जारी की। पहली सूची सुबह 10 बजे आई। इसमें 3 फेज के 44 कैंडिडेट्स के नाम थे, लेकिन इसे थोड़ी ही देर में डिलीट कर दिया गया। पहली लिस्ट के आते ही जम्मू भाजपा दफ्तर में कार्यकर्ताओं का प्रदर्शन शुरू हो गया। कार्यकर्ताओं ने कहा कि पार्टी ने पैराशूट प्रत्याशी उतार दिए हैं। बात हाईकमान तक पहुंची। पहली लिस्ट जारी होने के 2 घंटे बाद 12 बजे एक और लिस्ट आई, इसमें सिर्फ फर्स्ट फेज के 15 कैंडिडेट्स के नाम थे। इसके बाद 2 बजकर 45 मिनट पर एक और लिस्ट आई। इसमें सिर्फ एक नाम था। कोकरनाग से चौधरी रोशन हुसैन के नाम की घोषणा की गई। मंगलवार को जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा ने तीसरी लिस्ट जारी की। जिसमें कुल 29 उम्मीदवार थे। जिसमें सेकंड फेज के 10 और थर्ड फेज के 19 उम्मीदवारों के नाम हैं। जारी तीसरी लिस्ट में पार्टी ने सोमवार को जारी की गई सूची के 28 नाम रिपीट किए हैं। सिर्फ श्री माता वैष्णो देवी सीट से पार्टी ने रोहित दुबे की जगह बलदेव राज शर्मा को टिकट दिया है। जम्मू-कश्मीर की 90 सीटों के लिए 18 सितंबर से 1 अक्टूबर के बीच 3 चरणों में मतदान होंगे। नतीजे 4 अक्टूबर 2024 को आएंगे। सरकार बनाने के लिए बहुमत का आंकड़ा 46 है। जम्मू-कश्मीर में आखिरी बार 2014 में विधानसभा चुनाव हुए थे। तब भाजपा और पीडीपी ने गठबंधन सरकार बनाई थी। 2018 में गठबंधन टूटने के बाद सरकार गिर गई थी। इसके बाद राज्य में 6 महीने तक राज्यपाल शासन (उस समय जम्मू-कश्मीर संविधान के अनुसार) रहा। इसके बाद राष्ट्रपति शासन लागू हो गया। राष्ट्रपति शासन के बीच ही 2019 के लोकसभा चुनाव हुए, जिसमें भाजपा भारी बहुमत के साथ केंद्र में लौटी। इसके बाद 5 अगस्त 2019 को भाजपा सरकार ने अनुच्छेद -370 खत्म करके राज्य को दो केंद्र-शासित प्रदेशों (जम्मू-कश्मीर और लद्दाख) में बांट दिया था। इस तरह जम्मू-कश्मीर में 10 साल बाद विधानसभा चुनाव हो रहे हैं।

अश्विनी वैष्णव ताकतवर रिटायर्ड नौकरशाह

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तीसरी पारी में अश्विनी वैष्णव को सबसे ताकतवर मंत्री के तौर पर देखा जा रहा है। उनके पास रेल मंत्रालय के अलावा सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भी है। वैष्णव भारतीय प्रशासनिक सेवा के रिटायर्ड अधिकारी हैं। मूलत- वे राजस्थान से हैं। लेकिन, आईएएस में उनका काडर उड़ीसा था। वे 1994 बैच के हैं। अटल बिहारी वाजपेयी के साथ भी काम कर चुके हैं। वे प्रधानमंत्री सचिवालय में उप सचिव रहे। 2004 में जब वाजपेयी प्रधानमंत्री नहीं रहे तब वैष्णव उनके निजी सचिव नियुक्त किए गए थे। वैष्णव को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी उड़ीसा से राज्यसभा में लेकर आए हैं। 2019 में वे पहली राज्यसभा सदस्य बने और केंद्र में मंत्री बन गए। पिछले साल जब मध्यप्रदेश में विधानसभा के चुनाव हुए तक केन्द्रीय मंत्री भूपेन्द्र यादव के साथ जिस मंत्री को भेजा गया वह अश्विनी वैष्णव ही थे। अब उन्हें महाराष्ट्र राज्य का चुनाव प्रभारी बनाया गया है। वैष्णव की कार्यशैली पूरी तरह से नौकरशाह की तरह ही है। वे अपने विभाग का हर निर्णय भी साहब यानि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से निर्देश मिलने के बाद ही करते हैं। देश में लगातार हो रही रेल दुर्घटनाओं पर उनके चेहरे पर कोई शिकन नहीं आती है।

3 साल के बेटे, 5 साल की बेटी की हत्या, मां ने कुल्हाड़ी से गर्दन काटी

कहा- मैं भी मरना चाहती थी, मन बदल गया

रायसेन (नप्र)। रायसेन में एक मां ने अपने 3 साल के बेटे और 5 साल की बेटी की कुल्हाड़ी मारकर हत्या कर दी। पुलिस ने उसे घटनास्थल से कुछ ही दूरी पर गिरफ्तार कर लिया। महिला ने बच्चों की हत्या क्यों की, इसकी जानकारी अभी सामने नहीं आई है। पुलिस महिला से पूछताछ कर रही है। मामला जिला मुख्यालय से 140 किलोमीटर दूर देवरी वार्ड क्रमांक-4 में गुरुवार करीब 11.30 बजे का है।

राधिका, आरोपी

बेटी के शव के पास जला गद्दा मिला- एएसपी कमलेश कुमार ने बताया, देवरी थाना क्षेत्र में सुबह करीब साढ़े 11 बजे राधिका आदिवासी ने बेटे-बेटी की गर्दन कुल्हाड़ी से काट दी। बच्चों में नैना (5) और देव (3) शामिल हैं। महिला का पति ढाबे पर काम करता है, जो घटना के समय घर पर नहीं था। पति जब घर पहुंचा, तब उसे घटना की जानकारी मिली। उसने पुलिस को सूचना दी। बच्ची के शव के पास एक जला हुआ गद्दा मिला है। पुलिस महिला को गिरफ्तार कर थाने ले आई। हत्या की वजह अभी सामने नहीं आई है।

पति ने कहा- पत्नी का इलाज चल रहा है- जानकारी के अनुसार, महिला जिस झोपड़ी में रहती है, वहीं बच्चों की हत्या की। वो पुलिस पूछताछ में बार-बार बयान बदल रही है। पहले उसने कहा कि वह पति से अलग होना चाहती थी, इसलिए बच्चों को मार डाला। फिर कहने लगी कि खुद भी मरना चाहती थी, लेकिन बच्चों की हत्या के बाद मूड बदल गया और सुसाइड नहीं किया। महिला के पति का कहना है कि पत्नी को 2 महीने पहले सिर में दर्द हुआ था। उसका इलाज चल रहा था। राधिका आदिवासी का 3 साल का बेटा और 5 साल की बेटी थी, जिनकी उसने हत्या कर दी।

सुबह दादा के साथ नजर आए थे बच्चे

पड़ोसियों ने बताया कि सुबह बच्चे दादा के साथ नजर आए थे। उन्होंने दोनों बच्चों को चॉकलेट दिलाई थी। बच्चे के पिता और दादा दोनों घर से करीब आधा किमी दूर एक ढाबे पर काम करते हैं। वे काम पर चले गए थे। दोपहर करीब 12 बजे महिला को बैग लेकर मेन रोड की ओर जाते देखा। जब हम उसकी झोपड़ी की ओर गए तो धुआं उठते देखा। तत्काल दादा को फोन किया और घर बुलाया।

पड़ोसी जब झोपड़ी के पास पहुंचे तो दोनों बच्चे भीतर लहूलुहान पड़े थे। पास में ही कपड़े और सामान जल रहा था। तत्काल पानी डालकर आग को बुझाया। कपड़े तो जल गए, लेकिन बच्चों की एक फोटो अधजली मिली। इसके बाद दादा पहुंचे और उन्होंने बेटे और पुलिस को कॉल किया।

हत्या के पीछे यह वजह भी आ रही सामने

उधर, पड़ोसियों का कहना है कि महिला की किसी युवक से दोस्ती थी। वह उससे मिलने घर आया था। तब बच्चे भी घर पर थे। बच्चों ने उसे घर पर देख लिया होगा। पति से यह बात छिपाने के लिए महिला ने बच्चों की हत्या की होगी।

भिंड में मंत्री प्रहलाद पटेल का काफिला रोका

कांग्रेस कार्यकर्ता से ज्ञापन लेने से किया इंकार, मंत्री बोले- आप लोगों ने टाइम नहीं लिया

भिंड (नप्र)। भिंड दौरे पर पहुंचे जिले के प्रभारी और पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री प्रह्लाद पटेल के काफिले को कांग्रेसियों ने रोक लिया। कार्यकर्ता शहर के सुभाष तिराहे से गुजर रही कारों के सामने खड़े हो गए, और मंत्री से अपनी बात कहना चाह रहे थे।

इस पर मंत्री पटेल ने उनकी बात सुनने से इनकार करते हुए कहा- आपको पहले टाइम लेना चाहिए था। इस दौरान कांग्रेसियों ने ज्ञापन देना चाहा तो उन्होंने ज्ञापन लेने से भी इंकार कर दिया, और रवाना हो गए।

ज्ञापन न लेने पर कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने जमकर नारेबाजी की। इससे पहले प्रभारी मंत्री का बीजेपी कार्यकर्ताओं ने मालनपुर से ही जगह-जगह स्वागत किया।प्रभारी मंत्री के काफिला जाने के बाद कांग्रेसियों ने लगाए नारे।

कांग्रेस जिलाध्यक्ष ने कहा- यही भाजपा का दोहरा चरित्र- कांग्रेस के जिला अध्यक्ष मानसिंह कुशवाहा का कहना है कि प्रभारी मंत्री पटेल से जब भिंड जिले के विकास के संबंध में मांग पत्र देना चाहा तो उन्होंने इनकार कर दिया। कहा कि आप लोगों ने समय नहीं लिया था। जबकि कांग्रेस की ओर से प्रशासन को सूचना दी जा चुकी थी। वहीं प्रभारी मंत्री जगह-जगह स्वागत करने के लिए समय निकाल रहे हैं, परंतु भिंड के विकास की समस्या को सुनने के लिए उनके पास समय नहीं है। यह दोहरा चरित्र की भाजपा सरकार की नीति पुरानी है।

इन मांगों को लेकर कांग्रेसियों ने रोका काफिला

- भिंड जिले में सिंध नदी से रिद्धि-सिद्धि कंपनी द्वारा अवैध तौर पर रेत निकल जा रही है। एनजीटी की रोक के बाद भी अवैध भंडारण दर्शाते हुए यह काम प्रशासन द्वारा करवाया जा रहा है।
- भिंड जिले में बिजली सप्लाई व्यवस्था चरमराई हुई है। लोग बिजली को लेकर परेशान हैं। किसानों को धान के लिए पर्याप्त बिजली नहीं मिल रही है।
- भिंड में नेशनल हाईवे 719 पर रोज दुर्घटनाएं हो रही है। हर साल सैकड़ों लोगों की मौत हो रही है। भिंड इटावा हाईवे का चौड़ीकरण न होने के कारण कई घरों के चिराग बुझ गए है।
- भिंड जिले के अस्पतालों की हालत खस्ता है। शिक्षकों की कमी बनी हुई है। पैरामेडिकल स्टाफ भी पर्याप्त मात्रा में नहीं है ऐसे में कई बार प्रसूताएं खुले में बच्चों को जन्म देती हैं।
- जिले में स्कूल एजुकेशन की हालत खस्ता है। स्कूलों में पढ़ाई नहीं हो रही है। अटेर क्षेत्र के एक स्कूल में दबंगों ने कब्जा कर रखा है जिससे स्कूल में छात्र पढ़ने में भयभीत हैं।

भोपाल में अनंत चतुर्दशी को सरकारी छुट्टी

दीपावली पर लगातार 4 छुट्टियां मिलेंगी, दशहरे के दूसरे दिन भी अवकाश

भोपाल (नप्र)। भोपाल में अनंत चतुर्दशी 17 सितंबर को सरकारी छुट्टी रहेगी। दशहरे और दीपावली के दूसरे दिन भी अवकाश रहेगा।

भोपाल जिले के लिए सरकार ने चार स्थानीय अवकाश घोषित किए हैं। ये अवकाश 17 सितंबर, 11 अक्टूबर, 1 नवंबर और 3 दिसंबर के लिए हैं।

सितंबर में लगातार 4 छुट्टी मिलेगी- सितंबर में सरकारी कर्मचारियों को लगातार चार छुट्टियां मिल सकेंगी। दरअसल, 14 सितंबर को शनिवार, 15 सितंबर को रविवार, 16 सितंबर को मिलाद-उन-नबी है। 17 सितंबर को अनंत चतुर्दशी के चलते स्थानीय अवकाश घोषित हो गया है।

दीपावली पर भी लगातार चार छुट्टी रहेंगी- दीपावली पर भी लगातार चार छुट्टियां रहेंगी। बता दें कि 31 अक्टूबर को दीपावली है। इस दिन अवकाश रहेगा। दीपावली के दूसरे दिन 1 नवंबर को पूरे भोपाल जिले के लिए स्थानीय अवकाश रहेगा।

2 नवंबर को शनिवार और 3 नवंबर को रविवार की छुट्टी रहेगी। इस तरह 31 अक्टूबर से 3 नवंबर तक लगातार छुट्टियां रहेंगी। 3 दिसंबर को सिर्फ भोपाल शहर के लिए स्थानीय अवकाश रहेगा। 3 दिसंबर को भोपाल गैस त्रासदी स्मृति दिवस है।

दादी-पोते को पीटने वाले टीआई समेत 6 पुलिसकर्मी सस्पेंड

कटनी मामले में सीएम बोले- भविष्य में ऐसा कदाचार न हो

भोपाल/कटनी (नप्र)। पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने कटनी जीआरपी थाना प्रभारी के ऑफिस में नाबालिग लड़के और उसकी दादी के साथ हुई मारपीट का वीडियो एक्स पर अपलोड किया है। उन्होंने लिखा- कटनी में जीआरपी पुलिस द्वारा एक दलित बच्चे और महिला को बेरहमी से पीटने की घटना बताती है कि मध्यप्रदेश में दलितों का जीवन सुरक्षित नहीं है। रक्षक ही उनके भक्षक बनते जा रहे हैं। सीएम साहब! कब रुकेगा दलितों पर अत्याचार। वहीं सीएम मोहन यादव बोले- ऐसा दोबारा नहीं होना चाहिए।

वीडियो वायरल होने के बाद डीआईजी रेल पुलिस ने शुरुआती जांच में दोषी पाते हुए आरोपी टीआई अरुणा वाहने के साथ ही आरक्षक वर्षा दुबे, ओमकार सिरशाम, सोहेब अब्बासी, सलमान खान, प्रधान आरक्षक अजय श्रीवास्तव को सस्पेंड कर दिया है।

कांग्रेस ने कहा- यह सब सरकार के इशारे पर हो रहा है। कानून-व्यवस्था के नाम पर गुंडागर्दी की जा रही है। पुलिस ने दलितों पर अत्याचार किया, क्या उनके मकान तोड़े जाएंगे? पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी और मीडिया विभाग के अध्यक्ष मुकेश नायक आज शाम कटनी पहुंचकर पीड़ित परिवार से मुलाकात करेंगे। वे फोन पर पीड़ित परिवार से राहुल गांधी की बात करा सकते हैं।वहीं, भीम आर्मी चीफ और सांसद चंद्रशेखर आजाद ने एक्स पर लिखा- यही है भाजपा के कुशासन का असली दलित प्रेम।

पटवारी बोले- साफ हो गया कि बीजेपी दलित विरोधी है

जीतू पटवारी बोले- इस घटना से साफ है कि बीजेपी दलित विरोधी है। मध्यप्रदेश के गृहमंत्री बीजेपी कार्यकर्ताओं को छूट देते हैं कि तुम दलितों के चेहरे पर पेशाब करो, उनको पेशाब पिलाओ। उनको उल्टा लटकाओ। घसीट-घसीटकर मारो।

पुलिस को भी दलितों पर अत्याचार-अनाचार करने की छूट है। आरोपी टीआई पर एफआईआर क्यों नहीं की गई? पुलिस पर जिसने हमला किया, उनके मकान तोड़े गए। अब पुलिस ने दलितों पर अत्याचार किया, क्या उनका मकान तोड़ा जाएगा?

वीडी शर्मा बोले- जांच रिपोर्ट आने पर और कड़ी कार्रवाई होगी

भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष वीडी शर्मा ने कहा कि कांग्रेस झूठ और छल कपट की राजनीति कर रही है। मैं जीतू पटवारी से कहना चाहता हूं कि मप्र में भाजपा की सरकार है, कांग्रेस की नहीं हैं। इसलिए ऐसी कोई भी घटना दुर्भाग्यजनक है। भाजपा के शासन काल में ऐसे कोई भी लोग हों कार्रवाई होगी। टीआई के खिलाफ भी कड़ी कार्रवाई हुई है। वहां के डीआईजी के नेतृत्व में जांच कमेटी बनी है। रिपोर्ट आने के बाद और कड़ी कार्रवाई होगी।